हिंदी

लोकभारती

दसवीं कक्षा

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

हिंदी
लोकभारती
दसवीं कक्षा

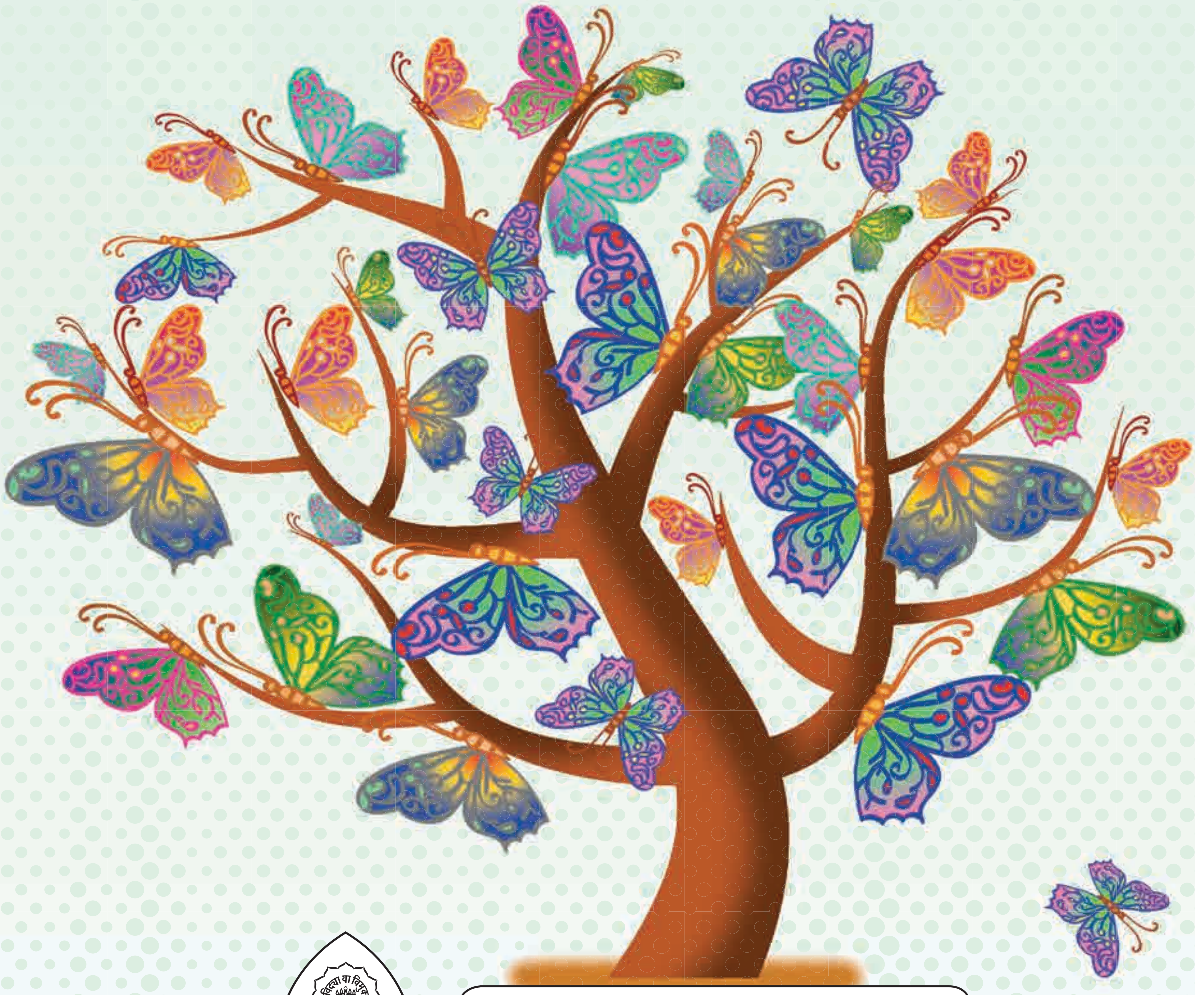

मेरा नाम ________________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

BH6CJ4

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१८

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री रामहित यादव – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

सौ. वृंदा कुलकर्णी
सौ. रंजना पिंगळे
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती शारदा बियाणी
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्री संजय भारद्वाज
डॉ. शुभदा मोघे
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
डॉ. शैला ललवाणी
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई–२५

निमंत्रित सदस्य

श्री ता.का. सूर्यवंशी
श्रीमती उमा ढेरे

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी–हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक–हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : मयूरा डफळ
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर,सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2018-19/(0.50)
मुद्रक : M/s.Durga Offset Works,Nagpur

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

आपकी उत्सुकता एवं अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए नवनिर्मित लोकभारती दसवीं कक्षा की पुस्तक को रंगीन, आकर्षक एवं वैविध्यपूर्ण स्वरूप प्रदान किया गया है । रंग-बिरंगी, मनमोहक, ज्ञानवर्धक एवं कृतिप्रधान यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि आपको गाना सुनना-पढ़ना, गुनगुनाना प्रिय है । कथा-कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । आपकी इन मनोनुकूल भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक में कविता, गीत, गजल, नई कविता, पद, बहुरंगी कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । यही नहीं, हिंदी की अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः इस पुस्तक में स्थान दिया गया है । ये विधाएँ केवल मनोरंजक ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों-क्षमताओं के विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं । इन रचनाओं के चयन का आधार आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को बनाया गया है ।

बदलती दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टि तथा अभ्यास को सहज एवं सरल बनाने के लिए इन्हें संजाल, प्रवाह तालिका, विश्लेषण आदि विविध कृतियों, उपयोजित लेखन, भाषाबिंदु आदि के माध्यम से पाठ्‌यपुस्तक में समाहित किया गया है । आपकी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए क्षमताधारित श्रवणीय, संभाषणीय, पठनीय, लेखनीय द्‌वारा अध्ययन-अध्यापन को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है । आपके ज्ञान में अभिवृद्‌धि के लिए 'ऐप' के माध्यम से 'क्यू.आर.कोड,' में अतिरिक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी । अध्ययन अनुभव हेतु इसका निश्चित ही उपयोग हो सकेगा ।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती । अतः आवश्यक उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके विद्‌यार्जन को सुकर एवं सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा । विश्वास है कि आप सब पाठ्‌यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि, आत्मीयता एवं उत्साह प्रदर्शित करेंगे ।

हार्दिक शुभकामनाएँ !

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ मार्च २०१८, गुढ़ीपाड़वा
भारतीय सौर दिनांक : २७ फाल्गुन १९३९

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि दसवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	१. गद्‌य-पद्‌य की रसानुभूति एवं आकलन करते हुए सुनना/सुनाना । २. विविध माध्यमों के कार्यक्रमों का आकलन करते हुए सुनना तथा विश्लेषण करना । ३. प्राप्त वैश्विक जानकारी सुनकर तर्कसहित सुनाना ।
२.	भाषण -संभाषण	१. विविध कार्यक्रमों में सहभागी होकर संबंधित विषयों पर अपने विचार प्रकट करना । २. विभिन्न विषयों पर आत्मविश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ मंतव्य प्रकट करना । ३. अंतरराष्ट्रीय विषयों पर विचार-विमर्श, चर्चा करना । ४. दैनिक व्यवहार में शुद्‌ध और मानक ध्वनियों के साथ स्वमत व्यक्त करना ।
३.	वाचन	१. आरोह-अवरोहयुक्त विरामचिह्‌नों के सही प्रयोग के साथ प्रभावोत्पादक प्रकट वाचन करना । २. गद्‌य-पद्‌य साहित्यिक विधाओं का विश्लेषण करते हुए अर्थपूर्ण वाचन करना । ३. हिंदीतर रचनाकारों की हिंदी रचनाओं का भाव एवं अर्थपूर्ण वाचन करना । ४. देश-विदेश के अनूदित लोकसाहित्य के संदर्भ में तुलनात्मक वाचन करना । ५. आकलन सहित गति के साथ मौन वाचन करना । अनुवाचन, मुखरवाचन, मौन वाचन का अभ्यास ।
४.	लेखन	१. स्वयंप्रेरणा से विरामचिह्‌नों सहित शुद्‌ध लेखन करना । स्वयंप्रेरणा से विविध प्रकार का सुडौल, सुपाठ्‌य, शुद्‌ध लेखन करना । २. अनुलेखन सुवाच्य लेखन, सुलेखन, शुद्‌ध लेखन, स्वयंस्फूर्त लेखन का क्रमशः अभ्यास करना । ३. स्वयंस्फूर्त भाव से रूपरेखा एवं शब्द संकेतों के आधार पर कहानी, निबंध, पत्र, विज्ञापन आदि का स्वतंत्र लेखन करना । ४. अपठित गद्‌यांशों, पद्‌यांशों पर आधारित प्रश्न निर्मिति करना ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	* छठी से दसवीं कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए भाषा अध्ययन के मुख्य घटक नीचे दिए गए हैं : प्रत्येक कक्षा के पाठ्‌यांशों पर आधारित चुने हुए घटकों को प्रसंगानुसार श्रेणीबद्‌ध रूप में समाविष्ट किया है । घटकों का चयन करते समय विद्‌यार्थियों की आयुसीमा, रुचि और पुनरावर्तन का अभ्यास आदि मुद्‌दों को ध्यान में रखा गया है । प्रत्येक कक्षा के लिए समाविष्ट किए गए घटकों की सूची संबंधित कक्षा की पाठ्‌यपुस्तक में समाविष्ट की गई है । अपेक्षा है कि विद्‌यार्थियों में दसवीं कक्षा के अंत तक सभी घटकों की सर्वसामान्य समझ निर्माण होगी । समानार्थी, विरुद्‌धार्थी शब्द, लिंग, वचन, शब्दयुग्म, उपसर्ग, प्रत्यय, हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द, संज्ञा भेद, सर्वनाम भेद, विशेषण भेद, क्रिया भेद, अव्यय भेद, काल भेद, कारक, कारक चिह्‌न, उद्‌देश्य-विधेय और वाक्य परिवर्तन, विराम चिह्‌न, मुहावरे, कहावतें, वर्ण विच्छेद, वर्णमेल, संधि भेद, शब्द, वाक्य शुद्‌धीकरण, रचना के अनुसार तथा अर्थ के अनुसार वाक्य के भेद, कृदंत, तद्‌धित, शब्द समूह के लिए एक शब्द ।
६.	अध्ययन कौशल	१. सुवचन, उद्‌धरण, सुभाषित, मुहावरे, कहावतें आदि का संकलन करते हुए प्रयोग । २. विभिन्न स्रोतों से जानकारी का संकलन, टिप्पणी तैयार करना । ३. आकृति, आलेख, चित्र का स्पष्टीकरण करने हेतु मुद्‌दों का लेखन, प्रश्न निर्मिति करना । ४. विभिन्न विषयों पर स्फूर्तभाव से लिखित-मौखिक अभिव्यक्ति ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन अनुभव देने से पहले क्षमता विधान, प्रस्तावना, परिशिष्ट, आवश्यक रचनाएँ एवं समग्र रूप से पाठ्यपुस्तक का अध्ययन आवश्यक है । किसी भी गद्‌य-पद्‌य के प्रारंभ के साथ ही कवि/लेखक परिचय, उनकी प्रमुख कृतियों और गद्‌य/पद्‌य के संदर्भ में विद्‌यार्थियों से चर्चा करना आवश्यक है । प्रत्येक पाठ की प्रस्तुति के उपरांत उसके आशय/भाव के दृढ़ीकरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'शब्द संसार', विविध 'कृतियाँ', 'उपयोजित लेखन' अभिव्यक्ति, 'भाषा बिंदु', 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' आदि कृतियाँ भी दी गई हैं । इनका सतत अभ्यास कराएँ ।

सूचनानुसार कृतियों में संजाल, कृति पूर्ण करना, भाव/अर्थ/केंद्रीय भाव लेखन, पद्‌य विश्लेषण, कारण लेखन, प्रवाह तालिका, उचित घटनाक्रम लगाना, सूची तैयार करना, उपसर्ग/प्रत्यय, समोच्चारित-भिन्नार्थी शब्दों के अर्थ लिखना आदि विविध कृतियाँ दी गई हैं । ये सभी कृतियाँ संबंधित पाठ पर ही आधारित हैं । इनका सतत अभ्यास करवाने का उत्तरदायित्व आपके ही सबल कंधों पर है ।

पाठों में 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' के अंतर्गत दी गई अध्ययन सामग्री भी क्षमता विधान पर ही आधारित है । ये सभी कृतियाँ पाठ के आशय को आधार बनाकर विद्‌यार्थियों को पाठ और पुस्तक के साथ बाहरी दुनिया में विचरण करने का अवसर प्रदान करती हैं । अतः शिक्षक/अभिभावक अपने निरीक्षण में इन कृतियों का अभ्यास अवश्य कराएँ । परीक्षा में इनपर प्रश्न पूछना आवश्यक नहीं है । विद्‌यार्थियों के कल्पना पल्लवन, मौलिक सृजन एवं स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु 'उपयोजित लेखन' दिया गया है । इसके अंतर्गत प्रसंग/ विषय दिए गए हैं । इनके द्‌वारा विद्‌यार्थियों को रचनात्मक विकास का अवसर प्रदान करना आवश्यक है ।

विद्‌यार्थियों की भावभूमि को ध्यान में रखकर पुस्तक में मध्यकालीन कवियों के पद, दोहे, चौपाई, महाकाव्य का अंश साथ ही कविता, नई कविता, गीत, गजल, बहुविध कहानियाँ, हास्य-व्यंग्य, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी, यात्रावर्णन आदि साहित्यिक विधाओं का विचारपूर्वक समावेश किया गया है । इतना ही नहीं अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः पुस्तक में स्थान दिया गया है । इसके साथ-साथ व्याकरण एवं रचना विभाग तथा मध्यकालीन काव्य के भावार्थ पाठ्‌यपुस्तक के अंत में दिए गए हैं, जिससे अध्ययन-अध्यापन में सरलता होगी ।

पाठों में दिए गए 'भाषा बिंदु' व्याकरण से संबंधित हैं । यहाँ पाठ, पाठ्‌यपुस्तक एवं पाठ्‌यपुस्तकेतर भी प्रश्न पूछे गए हैं । व्याकरण पारंपरिक रूप से न पढ़ाकर कृतियों और उदाहरणों द्‌वारा व्याकरणिक संकल्पना तक विद्‌यार्थियों को पहुँचाया जाए। 'पठनार्थ' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करती है । यह विद्‌यार्थियों की रुचि एवं उनमें पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः इसका वाचन अवश्य करवाएँ । उपरोक्त सभी अभ्यास करवाते समय 'परिशिष्ट' में दिए गए सभी विषयों को ध्यान में रखना अपेक्षित है । पाठ के अंत में दिए गए संदर्भों से विद्‌यार्थियों को स्वयं अध्ययन हेतु प्रेरित करें ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर कृतियों, भाषाई खेलों, संदर्भ-प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों, संवैधानिक मूल्यों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को अवश्य प्रदान करें । पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भ का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी शिक्षक इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	भारत महिमा	कविता	जयशंकर प्रसाद	१-२
२.	लक्ष्मी	संवादात्मक कहानी	गुरुबचन सिंह	३-९
३.	वाह रे ! हमदर्द	हास्य-व्यंग्य निबंध	घनश्याम अग्रवाल	१०-१४
४.	मन (पूरक पठन)	हाइकु	विकास परिहार	१५-१७
५.	गोवा : जैसा मैंने देखा	यात्रा वर्णन	विनय शर्मा	१८-२३
६.	गिरिधर नागर	पद	मीराबाई	२४-२६
७.	खुला आकाश (पूरक पठन)	डायरी अंश	कुँवर नारायण	२७-३२
८.	गजल	गजल	माणिक वर्मा	३३-३४
९.	रीढ़ की हड्डी	एकांकी	जगदीशचंद्र माथुर	३५-४१
१०.	ठेस (पूरक पठन)	आंचलिक कहानी	फणीश्वरनाथ रेणु	४२-४८
११.	कृषक का गान	गीत	दिनेश भारद्वाज	४९-५०

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	बरषहिं जलद	महाकाव्य अंश	गोस्वामी तुलसीदास	५१-५३
२.	दो लघुकथाएँ (पूरक पठन)	लघुकथा	नरेंद्र छाबड़ा	५४-५७
३.	श्रम साधना	वैचारिक निबंध	श्रीकृष्णदास जाजू	५८-६४
४.	छापा	हास्य-व्यंग्य कविता	ओमप्रकाश 'आदित्य'	६५-६७
५.	ईमानदारी की प्रतिमूर्ति	संस्मरण	सुनील शास्त्री	६८-७३
६.	हम इस धरती की संतति हैं (पूरक पठन)	कव्वाली	उमाकांत मालवीय	७४-७५
७.	महिला आश्रम	पत्र	काका कालेलकर	७६-७९
८.	अपनी गंध नहीं बेचूँगा	गीत	बालकवि बैरागी	८०-८१
९.	जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ	साक्षात्कार	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	८२-८८
१०.	बूढ़ी काकी (पूरक पठन)	वर्णनात्मक कहानी	प्रेमचंद	८९-९६
११.	समता की ओर	नई कविता	मुकुटधर पांडेय	९७-९८
	व्याकरण एवं रचना विभाग तथा भावार्थ			९९-१०४

१. भारत महिमा

– जयशंकर प्रसाद

हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार ।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक ।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत । ......

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम ।

'गोरी' को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि ।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं ।......

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न ।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव ।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान ।

जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ।

— ० —

परिचय

जन्म : १८९०, वाराणसी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३७, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : जयशंकर प्रसाद जी छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनाओं में सर्वत्र भारत के गौरवशाली अतीत, ऐतिहासिक विरासत के दर्शन होते हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'झरना', 'आँसू', 'लहर' (काव्य), 'कामायनी' (महाकाव्य), 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' (ऐतिहासिक नाटक), 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल' (कहानी संग्रह), 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (उपन्यास) आदि ।

पद्‍य संबंधी

प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने देश के गौरवशाली अतीत का सजीव वर्णन किया है । कवि का कहना है कि हमें अपने देश पर गर्व करते हुए उसके प्रति अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए ।

शब्द संसार

उपहार पुं. सं.(सं.) = भेंट
हीरक हार पुं. सं.(सं.) = हीरों का हार
आलोक पुं.सं.(सं.) = प्रकाश
व्योम पुं. सं.(सं.)= आकाश
तम पुं.सं.(सं.) = अँधेरा
संसृति स्त्री.सं.(सं.) = संसार
विपन्न वि.(सं.) = निर्धन
टेव स्त्री.सं.(हिं.) = आदत

मुहावरा

निछावर करना = अर्पण करना, समर्पित करना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए :

१. कहीं से हम आए थे नहीं ⟶ ....

२. वही हम दिव्य आर्य संतान ⟶ ....

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

संचय
सत्य
अतिथि
रत्न
वचन
दान
हृदय
तेज
देव

	अ	आ
१	------------	------------
२	------------	------------
३	------------	------------
४	------------	------------

(३) लिखिए :

१. कविता में प्रयुक्त दो धातुओं के नाम :

२. भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ :

(४) प्रस्तुत कविता की अपनी पसंदीदा किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(५) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंदीदा होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश

BHF8KR

२. लक्ष्मी

-गुरुबचन सिंह

उस दिन लड़के ने तैश में आकर लक्ष्मी की पीठ पर चार डंडे बरसा दिए थे । वह बड़ी भयभीत और घबराई थी । जो भी उसके पास जाता, सिर हिला उसे मारने की कोशिश करती या फिर उछलती-कूदती, गले की रस्सी तोड़कर खूँटे से आजाद होने का प्रयास करती ।

करामत अली इधर दो-चार दिनों से अस्वस्थ था । लेकिन जब उसने यह सुना कि रहमान ने गाय की पीठ पर डंडे बरसाए हैं तो उससे रहा नहीं गया । वह किसी प्रकार चारपाई से उठकर धीरे-धीरे चलकर बथान में आया । आगे बढ़कर उसके माथे पर हाथ फेरा, पुचकारा और हौले-से उसकी पीठ पर हाथ फेरा । लक्ष्मी के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई ।

''ओह ! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है ।''

उसकी बीबी रमजानी बोली-''लो, चोट की जगह पर यह रोगन लगा दो । बेचारी को आराम मिलेगा ।''

करामत अली गुस्से में बोला-''क्या अच्छा हो अगर इसी लाठी से तुम्हारे रहमान के दोनों हाथ तोड़ दिए जाएँ । कहीं इस तरह पीटा जाता है ?''

रमजानी बोली-''लक्ष्मी ने आज भी दूध नहीं दिया ।''

''तो उसकी सजा इसे लाठियों से दी गई ?''

''रहमान से गलती हो गई, इसे वह भी कबूलता है ।''

रमजानी कुछ क्षण खड़ी रही फिर वहाँ से हटती हुई बोली-''देखो, अपना ख्याल रखो । पाँव इधर-उधर गया तो कमर सिंकवाते रहोगे ।''

करामत अली ने फिर प्यार से लक्ष्मी की पीठ सहलाई । मुँह-ही-मुँह में बड़बड़ाया-''माफ कर लक्ष्मी, रहमान बड़ा मूर्ख है । उम्र के साथ तू भी बुढ़ा गई है । डेयरीफार्म के डॉक्टर ने तो पिछली बार ही कह दिया था, यह तेरा आखिरी बरस है ।''

लक्ष्मी शांत खड़ी अपने जख्मों पर तेल लगवाती रही । वह करामत अली के मित्र ज्ञान सिंह की निशानी थी । ज्ञान सिंह और करामत अली एक-दूसरे के पड़ोसी तो थे ही, वे कारखाने में भी एक ही विभाग में काम करते थे । प्रायः एक साथ ड्यूटी पर जाते और एक साथ ही घर लौटते ।

ज्ञान सिंह को मवेशी पालने का बहुत शौक था । प्रायः उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती । तीन बरस पहले उसने एक जर्सी गाय खरीदी थी । उसका नाम उसने लक्ष्मी रखा था । अधेड़ उम्र की लक्ष्मी इतना दूध दे देती थी कि उससे घर की जरूरत पूरी हो जाने के बाद बाकी दूध

परिचय

सुप्रसिद्‌ध कहानीकार गुरुबचन सिंह जी ने साहित्य के अनेक क्षेत्रों में मुक्त लेखन किया है । आपकी भाषा सरल और प्रवाही है । इसी वजह से आपका साहित्य रोचक बन पड़ा है ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संवादात्मक कहानी में कहानीकार ने दिए गए वचन के प्रति जिम्मेदारी और प्राणिमात्र के प्रति दया की भावना व्यक्त करते हुए पशुप्रेम दर्शाया है । लेखक का कहना है कि अनुपयोगी हो जाने पर भी प्राणियों का पालन-पोषण करना ही मानवता है ।

गली के कुछ घरों में चला जाता। दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था। केवल गाय को चारा और दर्रा आदि देने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था।

नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का वह मकान खाली करना था। समस्या थी तो लक्ष्मी की। वह लक्ष्मी को किसी भी हालत में बेच नहीं सकता था। उसे अपने साथ ले जाना भी संभव नहीं था। जब अवकाश में दस-पंद्रह दिन ही रह गए तो करामत अली से कहा-''मियाँ ! अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगे ...?''

मियाँ करामत अली ने कहा था-''नेकी और पूछ-पूछ। भला इससे बड़ी खुशनसीबी मेरे लिए और क्या हो सकती है ?''

करामत अली पिछले एक वर्ष से उस गाय की सेवा करता चला आ रहा था। गाय की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी।

करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ। वह उसके सिर पर हाथ फेरता रहा। लक्ष्मी स्थिर खड़ी उसकी ओर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से देखती रही। करामत अली को लगा जैसे लक्ष्मी कहना चाहती हो- ''यदि मैं तुम्हारे काम की नहीं हूँ तो मुझे आजाद कर दो। मैं यह घर छोड़कर कहीं चली जाऊँगी।''

करामत अली ड्यूटी पर जाने की तैयारी में था। तभी रमजानी बोली- ''रहमान के अब्बा, अगर लक्ष्मी दूध नहीं देगी तो हम इसका क्या करेंगे ? क्या खूँटे से बाँधकर हम इसे खिलाते-पिलाते रहेंगे...?''

''जानवर है। बँधा है तो इसे खिलाना-पिलाना तो पड़ेगा ही।''

''जानते हो, इस महँगाई के जमाने में सिर्फ सादा चारा देने में ही तीन-साढ़े तीन सौ महीने का खर्चा है।''

''सो तो है।'' कहते हुए करामत अली आगे कुछ नहीं बोला। घर से निकलकर कारखाने की तरफ हो लिया। रास्ते में वह रमजानी की बात पर विचार कर रहा था, लक्ष्मी अगर दूध नहीं देगी तो इसका क्या करेंगे। यह ख्याल तो उसके मन में आया ही नहीं था कि एक समय ऐसा भी आ सकता है कि गाय को घर के सामने खूँटे से बाँधकर मुफ्त में खिलाना भी पड़ सकता है।

उसके साथी नईम ने उसे कुछ परेशान देखा तो पूछा-''करामत मियाँ, क्या बात है, बड़े परेशान नजर आते हो ? खैरियत तो है ?''

''ऐसी कोई विशेष बात नहीं है।''

''कुछ तो होगा।''

'' क्या बताऊँ। गाय ने दूध देना बंद कर दिया है, बूढ़ी हो गई है। बैठाकर खिलाना पड़ेगा और इस जमाने में गाय-भैंस पालने का खर्चा...।''

''इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है ? गाय बेच दो।''

परिच्छेद पर आधारित कृतियाँ :-

परिच्छेद :

- 'ज्ञान सिंह को मवेशी --------- स्वीकार करोगे -----?'

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

परिच्छेद से प्राप्त ज्ञान सिंह संबंधी जानकारी

(२) उत्तर लिखिए :

१. ——ज्ञान सिंह की समस्याएँ——

२. —— ज्ञान सिंह के दूध बेचने का उद्देश्य ——

(३) चौखट में दी सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

सेवक: पर्यायवाची / वचन परिवर्तन / लिंग परिवर्तन / विलोम

(४) पालतू जानवरों के साथ किए जाने वाले सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बारे में अपने विचार लिखिए।

करामत अली ने हौका भरते हुए कहा, ''हाँ, परेशानी से छुटकारा पाया जा सकता है । बहुत आसान तरीका है । लक्ष्मी को बेच दिया जाए ।'' वह नईम के पास से हटकर अपने काम में जुट गया ।

करामत अली रात का गया सवेरे कारखाने से घर लौटा । रात की ड्यूटी से घर लौटने पर ही वह लक्ष्मी को दुहता था । घर में घुसते ही उसने रमजानी से पूछा-''क्या लक्ष्मी को अभी तक चारा नहीं दिया ?''

रमजानी बोली-''रहमान से कहा तो था ।''

''तुम दोनों की मर्जी होती तो गाय को अब तक चारा मिल चुका होता। अगर वह दूध नहीं दे रही है तो क्या उसे भूखा रखोगे ?'' कहते हुए करामत कटा हुआ पुआल, खली और दर्रा आदि ले जाकर लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा।

लक्ष्मी उतावली-सी तैयार हो रही सानी में मुँह मारने लगी ।

गाय को सानी देकर करामत अली उसकी पीठ देखने लगा । रोगन ने अच्छा काम किया था । दाग कुछ हल्के पड़ गए थे ।

दस-पंद्रह दिनों से यों ही चल रहा था । एक दिन जब करामत अली ने पुआल लाने के लिए रमजानी से पैसे माँगे तो वह बोली, ''मैं कहाँ से पैसे दूँ ? पहले तो दूध की बिक्री के पैसे मेरे पास जमा रहते थे । उनमें से दे देती थी । अब कहाँ से दूँ ?''

''लो, यह राशन के लिए कुछ रुपये रखे थे ।'' कहते हुए रमजानी ने संदूकची में से बीस का एक नोट निकालकर उसे थमाते हुए कहा,''इससे लक्ष्मी का राशन ले आओ ।''

''ठीक है । इससे लक्ष्मी के दो-चार दिन निकल जाएँगे ।''

''आखिर इस तरह कब तक चलेगा ?'' रमजानी दुखी स्वर में बोली।

''तुम इसे खुला छोड़कर,आजमाकर तो देखो ।''

''कहते हो तो ऐसा करके देख लेंगे ।''

दूसरे दिन रहमान सवेरे आठ-नौ बजे के करीब लक्ष्मी को इलाके से बाहर जहाँ नाला बहता है, जहाँ झाड़-झंखाड़ और कहीं दूब के कारण जमीन हरी नजर आती है, छोड़ आया ताकि वह घास इत्यादि खाकर अपना कुछ पेट भर ले । लेकिन माँ-बेटे को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लक्ष्मी एक-डेढ़ घंटे बाद ही घर के सामने खड़ी थी । उसके गले में रस्सी थी । एक व्यक्ति उसी रस्सी को हाथ में थामे कह रहा था-''यह गाय क्या आप लोगों की है ?''

रमजानी ने कहा, ''हाँ ।''

''यह हमारी गाय का सब चारा खा गई है । इसे आप लोग बाँधकर रखें नहीं तो काँजी हाउस में पहुँचा देंगे ।''

रमजानी चुप खड़ी आगंतुक की बातें सुनती रही ।

श्रवणीय

'पर्यावरण चक्र को बनाए रखने में प्राणियों की भूमिका' के बारे में यू ट्यूब/रेडियो/दूरदर्शन से जानकारी सुनिए ।

पठनीय

भारत सरकार द्वारा 'पशु संरक्षण' पर चलाई जाने वाली योजनाओं की जानकारी पढ़िए और घोषवाक्य बनाकर प्रस्तुत कीजिए ।

दोपहर बाद जब करामत अली ड्‍यूटी से लौटा और नहा-धोकर कुछ नाश्ते के लिए बैठा तो रमजानी उससे बोली-‘‘मेरी मानो तो इसे बेच दो ।’’

‘‘फिर बेचने की बात करती हो... ? कौन खरीदेगा इस बुढ़िया को ।’’

‘‘रहमान कुछ कह तो रहा था, उसे कुछ लोग खरीद लेंगे । उसने किसी से कहा भी है । शाम को वह तुमसे मिलने भी आएगा ।’’

करामत अली सुनकर खामोश रह गया । उसे लग रहा था, सब कुछ उसकी इच्छा के विरुद्‌ध जा रहा है, शायद जिसपर उसका कोई वश नहीं था।

करामत अली यह अनुभव करते हुए कि लक्ष्मी की चिंता अब किसी को नहीं है, खामोश रहा । उठा और घर में जो सूखा चारा पड़ा था, उसके सामने डाल दिया ।

लक्ष्मी ने चारे को सूँघा और फिर उसकी तरफ निराशापूर्ण आँखों से देखने लगी । जैसे कहना चाहती हो, मालिक यह क्या ? आज क्या मेरे फाँकने को यह सूखा चारा ही है । दर्रा-खली कुछ नहीं ।

करामत अली उसके पास से उठकर मुँह-हाथ धोने के लिए गली के नुक्कड़ पर नल की ओर चला गया ।

सात-आठ बजे के करीब रहमान एक व्यक्ति को अपने साथ लाया। करामत अली उसे पहचानता था ।

इसके पहले कि उससे कुछ औपचारिक बातें हों, करामत अली ने पूछा, ‘‘क्या तुम गाय खरीदने आए हो ?’’

उसने जवाब में कहा-‘‘हाँ’’

‘‘बूढ़ी गाय है, दूध-ऊध नहीं देती ।’’

‘‘तो क्या हुआ ...?’’

‘‘तुम इसे लेकर क्या करोगे ...?’’

‘‘मैं कहीं और बेच दूँगा ।’’

‘‘यह तुम्हारा पुराना धंधा है । मैं जानता हूँ । मुझे तुम्हें गाय नहीं बेचनी ।’’ करामत मियाँ ने उसे कोरा जवाब दे दिया ।

रमजानी करामत के चेहरे के भाव भाँपती हुई बोली-‘‘क्या यह भी कोई तरीका है, आने वाले को खड़े-खड़े दुत्कारकर भगा दो ।’’

‘‘तुम जानती हो वह कौन है...?’’ करामत अली ने कटु स्वर में कहा।

‘‘वह लक्ष्मी को ले जाकर वहाँ बेच आएगा जहाँ यह टुकड़े-टुकड़े होकर बिक जाएगी । मेरे दोस्त ज्ञान सिंह को इसका पता चल गया तो वह मेरे बारे में क्या सोचेगा ।’’

उस दिन करामत अली बिना कुछ खाए-पिए रात को बिना बिस्तर की चारपाई पर पड़ा रहा । नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी।

संभाषणीय

‘विलुप्त हो रहे जानवरों’ पर संक्षेप में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

रात काफी निकल चुकी थी । सवेरे देर तक वह लेटा ही रह गया । कुछ देर बाद करामत अली ने चारपाई छोड़ी । मुँह-हाथ धो, घर से बाहर निकल पड़ा । लक्ष्मी के गले से बँधी हुई रस्सी खूँटे से खोली और उसे गली से बाहर ले जाने लगा । रमजानी, जो दरवाजे पर खड़ी यह सब देख रही थी, बोली- ''इसे कहाँ ले चले ?''

करामत अली ने कहा-''जहाँ इसकी किस्मत में लिखा है ।''

वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया । लक्ष्मी बिना किसी रुकावट या हुज्जत के उसके पीछे-पीछे चली जा रही थी । वह उसकी रस्सी पकड़े सड़क पर आगे की ओर चलता चला गया । चलते-चलते कुछ क्षण रुककर वह बोला-''लक्ष्मी चल, अरे ! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है । तुझे गऊशाला में भरती करा दूँगा । वहाँ इत्मीनान से रहना । वहाँ तू हमारे घर की तुलना में मजे से रहेगी । भले ही मैं वहाँ न रहूँ पर जो लोग भी होंगे, मेरे ख्याल में तुम्हारे लिए अच्छे ही होंगे । मैं कभी-कभी तुम्हें देख आया करूँगा । तब तू मुझे पहचानेगी भी या नहीं, खुदा जाने, '' कहते हुए करामत अली का गला भर आया । उसकी आँखों में आँसू उतर आए ।

''चल, लक्ष्मी चल । जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा'' और वह खुद किसी थके-माँदे बूढ़े बैल की तरह भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा ।

— o —

लेखनीय

'पेटा' (PETA) संस्था के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और इसके प्रमुख मुद्दे विद्यालय के भित्ति फलक पर लिखिए ।

शब्द संसार

बथान पुं.सं.(हिं.) = पालतू गाय-बैल के रहने का स्थान

मवेशी पुं. सं. (अ.) = कृषिकार्य में उपयुक्त तथा दुधारू पशु

दर्रा पुं. सं. (हिं.दे.) = अनाज के अंश

हौका पुं. सं. (हिं.) = दीर्घ निःश्वास

पुआल पुं. सं. (हिं.दे.) = धान के सूखे डंठल, जिनमें से दाने निकाल दिए गए हों

खली स्त्री. सं. (हिं.दे.) = तेल निकल जाने के बाद तिलहन का बचा हुआ हिस्सा: जो मवेशी खाते हैं

काँजी हाउस पुं.सं.(अं.) = सरकारी मवेशीखाना (जिसमें लावारिस पशु बंद करके रखे जाते हैं ।)

मुहावरे

मुँह मारना = जल्दी-जल्दी खाना

गला भर आना = भाव विह्वल होना, आवाज भर आना

कोरा जवाब देना = साफ मना करना

तैश में आना = आवेश में आना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

मार के कारण लक्ष्मी के व्यवहार में आया परिवर्तन

(२) उचित घटनाक्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. उसके गले में रस्सी थी ।

२. रहमान बड़ा मूर्ख है ।

३. वह लक्ष्मी को सड़क पर ले आया ।

४. उसने तुम्हें बड़ी बेदर्दी से पीटा है ।

(३) उत्तर लिखिए :

ज्ञान सिंह का पशुप्रेम दर्शाने वाली बातें

(४) गलत वाक्य, सही करके लिखिए :

१. करामत अली पिछले चार सालों से गाय की सेवा करता चला आ रहा था ।

२. करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद इत्मीनान हुआ ।

(५) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर वर्णन कीजिए :

करामत अली की गाय →

१. नाम –

२. उम्र –

३. नस्ल –

४. स्थिति –

(६) कारण लिखिए :

१. करामत अली लक्ष्मी के लिए सानी तैयार करने लगा ।

२. रमजानी ने करामत अली को रोगन दिया ।

३. रहमान ने लक्ष्मी को इलाके से बाहर छोड़ दिया ।

४. करामत अली ने लक्ष्मी को गऊशाला में भरती किया ।

(७) हिंदी–मराठी में समोच्चारित शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए :

जैसे:

खत – पत्र (हिंदी), खाद (मराठी)

पीठ – ----------, ----------

खाना – ----------, ----------

चारा – ----------, ----------

कल – ----------, ----------

अभिव्यक्ति 'यदि आप करामत अली की जगह पर होते तो' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए :

१. ओह कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है
२. मैंने कराहते हुए पूछा मैं कहाँ हूँ
३. मँझली भाभी मुट्ठी भर बुँदियाँ सूप में फेंककर चली गई
४. बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है उसकी ननद रूठी हुई है मोथी की शीतलपाटी के लिए
५. केवल टीका नथुनी और बिछिया रख लिए थे
६. ठहरो मैं माँ से जाकर कहती हूँ इतनी बड़ी बात
७. टाँग का टूटना यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना
८. जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा
९. लक्ष्मी चल अरे गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है
१०. मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो कहो कविता कैसी रही

(२) निम्नलिखित विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए बारह-पंद्रह वाक्यों का परिच्छेद लिखिए :

विरामचिह्न	वाक्य
।	
–	
?	
;	
,	
!	
‘ ’	
“ ”	
× × ×	
—— ० ——	
....	
( )	
[ ]	
^	
:	
-/	

उपयोजित लेखन किसी पालतू प्राणी की आत्मकथा लिखिए ।

BHP4HE

३. वाह रे ! हमदर्द

–घनश्याम अग्रवाल

उस दिन जब मैं पूँजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्था पर भाषण सुनकर आ रहा था तो सामने से एक कार आ रही थी । भाषण के प्रभाव से मेरी साइकिल को अधिक जोश आया या कार को गुस्सा अधिक आया, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता; किंतु मेरी साइकिल और वह कार जब करीब आए तो विरोधियों की तरह एक-दूसरे को घृणा की नजरों से देखते हुए आपस में जा भिड़े । मैंने खामखाह पूँजीवाद और समाजवाद के झगड़े में टाँग अड़ाई । फलस्वरूप मेरी टाँग टूट गई । दुर्घटना के बाद आज भी इनसानियत कायम है, यह सिद्ध करने के लिए कुछ लोग मेरी तरफ दौड़े ।

आँख खुली तो मैंने अपने-आपको एक बिस्तर पर पाया । इर्द-गिर्द कुछ परिचित-अपरिचित चेहरे खड़े थे । आँख खुलते ही उनके चेहरों पर उत्सुकता की लहर दौड़ गई । मैंने कराहते हुए पूछा-''मैं कहाँ हूँ ?''

''आप सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं । आपका ऐक्सिडेंट हो गया था । सिर्फ पैर का फ्रैक्चर हुआ है । अब घबराने की कोई बात नहीं ।'' एक चेहरा इतनी तेजी से जवाब देता है, लगता है मेरे होश आने तक वह इसीलिए रुका रहा । अब मैं अपनी टाँगों की ओर देखता हूँ । मेरी एक टाँग अपनी जगह पर सही-सलामत थी और दूसरी टाँग रेत की थैली के सहारे एक स्टैंड पर लटक रही थी । मेरे दिमाग में एक नये मुहावरे का जन्म हुआ । 'टाँग का टूटना' यानी सार्वजनिक अस्पताल में कुछ दिन रहना । सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं काँप उठा । अस्पताल वैसे ही एक खतरनाक शब्द होता है, फिर यदि उसके साथ सार्वजनिक शब्द चिपका हो तो समझो आत्मा से परमात्मा के मिलन होने का समय आ गया । अब मुझे यूँ लगा कि मेरी टाँग टूटना मात्र एक घटना है और सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना दुर्घटना ।

टाँग से ज्यादा फिक्र मुझे उन लोगों की हुई जो हमदर्दी जताने मुझसे मिलने आएँगे । ये मिलने-जुलने वाले कई बार इतने अधिक आते हैं और कभी-कभी इतना परेशान करते हैं कि मरीज का आराम हराम हो जाता है, जिसकी मरीज को खास जरूरत होती है । जनरल वार्ड का तो एक नियम होता है कि आप मरीज को एक निश्चित समय पर आकर ही तकलीफ दे सकते हैं किंतु प्राइवेट वार्ड, यह तो एक खुला निमंत्रण है कि ''हे मेरे

परिचय

जन्म : १९४२, अकोला (महाराष्ट्र)
परिचय : घनश्याम अग्रवाल जी की रुचि अध्ययनकाल से ही लेखन में विकसित हुई । अपने आस-पास की प्रत्येक स्थिति या घटना में हास्य ढूँढ़कर उसे धारदार व्यंग्य में ढालना आपके लेखन की विशेषता है । आप अखिल भारतीय मंचों पर हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में लोकप्रिय हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हँसीघर के आईने' (हास्य-व्यंग्य), 'आजादी की दुम,' 'आई एम सॉरी' (हास्य कविता संग्रह) 'अपने-अपने सपने' (लघुकथा संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य निबंध में लेखक ने दुर्घटना के माध्यम से विनोद को बड़े ही रोचक ढंग से व्यक्त किया है । हमदर्दी भी कभी-कभी किस तरह पीड़ादायी बन जाती है, यह बहुत ही सुंदर तरीके से दर्शाया है ।

परिचितो, रिश्तेदारो, मित्रो ! आओ, जब जी चाहे आओ, चाहे जितनी देर रुको, समय का कोई बंधन नहीं । अपने सारे बदले लेने का यही वक्त है ।'' बदले का बदला और हमदर्दी की हमदर्दी । मिलने वालों का खयाल आते ही मुझे लगा मेरी दूसरी टाँग भी टूट गई ।

मुझसे मिलने के लिए सबसे पहले वे लोग आए जिनकी टाँग या कुछ और टूटने पर मैं कभी उनसे मिलने गया था, मानो वे इसी दिन का इंतजार कर रहे थे कि कब मेरी टाँग टूटे और कब वे अपना एहसान चुकाएँ । इनकी हमदर्दी में यह बात खास छिपी रहती है कि देख बेटा, वक्त सब पर आता है ।

दर्द के मारे एक तो मरीज को वैसे ही नींद नहीं आती, यदि थोड़ी-बहुत आ भी जाए तो मिलने वाले जगा देते हैं- खास कर वे लोग जो सिर्फ औपचारिकता निभाने आते हैं । इन्हें मरीज से हमदर्दी नहीं होती, ये सिर्फ सूरत दिखाने आते हैं। ऐसे में एक दिन मैंने तय किया कि आज कोई भी आए, मैं आँख नहीं खोलूँगा । चुपचाप पड़ा रहूँगा । ऑफिस के बड़े बाबू आए और मुझे सोया जानकर वापस जाने के बजाय वे सोचने लगे कि यदि मैंने उन्हें नहीं देखा तो कैसे पता चलेगा कि वे मिलने आए थे । अतः उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया । फिर भी जब आँखें नहीं खुलीं तो उन्होंने मेरी टाँग के टूटे हिस्से को जोर से दबाया । मैंने दर्द के मारे कुछ चीखते हुए जब आँख खोली तो वे मुस्कराते हुए बोले- ''कहिए, अब दर्द कैसा है ?''

मुहल्लेवाले अपनी फुरसत से आते हैं । उस दिन जब सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई तो मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी । आते ही उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए बच्चों से कहा- ''ये देखो चाचा जी !'' उनका अंदाज कुछ ऐसा था जैसे चिड़ियाघर दिखाते हुए बच्चों से कहा जाता है- ''ये देखो बंदर ।''

बच्चे खेलने लगे । एक कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा मेज पर । सोनाबाई की छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी । रप-रप की आवाज ने मेरा ध्यान बँटाया । क्या देखता हूँ कि सोनाबाई का एक लड़का मेरी टाँग के साथ लटक रही रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस कर रहा है । मैं इसके पहले कि उसे मना करता, सोनाबाई की लड़की ने दवा की शीशी पटक दी । सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा, फिर हँसते हुए बोली- ''भैया, पेड़े खिलाओ, दवा गिरना शुभ होता है । दवा गई समझो बीमारी गई ।'' इसके दो घंटों बाद सोनाबाई गई, यह कहकर कि फिर आऊँगी । मैं भीतर तक काँप गया ।

कुछ लोग तो औपचारिकता निभाने की हद कर देते हैं, विशेष कर वे

श्रवणीय

सार्वजनिक अस्पताल में जाकर किसी मरीज से उसके अनुभव सुनिए और अपने शब्दों में सुनाइए ।

पठनीय

अस्पताल में लगे सूचना फलक/विज्ञापनों को पढ़िए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए ।

रिश्तेदार जो दूसरे गाँवों से मिलने आते हैं । ऐसे में एक दिन एक टैक्सी कमरे के सामने आकर रुकी । उसमें से निकलकर एक आदमी आते ही मेरी छाती पर सिर रखकर औंधा पड़ रोने लगा और कहने लगा– ''हाय, तुम्हें क्या हो गया ? कारवालों का सत्यानाश हो !'' मैंने दिल में कहा कि मुझे जो हुआ सो हुआ, पर तू क्यों रोता है, तुझे क्या हुआ ? वह थोड़ी देर मेरी छाती में मुँह गड़ाए रोता रहा । फिर रोना कुछ कम हुआ । उसने मेरी छाती से गरदन हटाई और जब मुझसे आँख मिलाई, तो एकदम चुप हो गया । फिर धीरे–से हँसते हुए बोला– ''माफ करना, मैं गलत कमरे में आ गया था । आजकल लोग ठीक से बताते भी तो नहीं। गुप्ता जी का कमरा शायद बगल में है । हें–हें–हें ! अच्छा भाई, माफ करना ।'' कहकर वह चला गया । अब वही रोने की आवाज मुझे पड़ोस के कमरे से सुनाई पड़ी । मुझे उस आदमी से अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया क्योंकि इस प्रकार रोता देख पत्नी ने उसे मेरा रिश्तेदार या करीबी मित्र समझकर टैक्सीवाले को पैसे दे दिए थे ।

हमदर्दी जताने वालों में वे लोग जरूर आएँगे, जिनकी हम सूरत भी नहीं देखना चाहते। हमारे शहर में एक कवि हैं, श्री लपकानंद । उनकी बेतुकी कविताओं से सारा शहर परेशान है । मैं अकसर उन्हें दूर से देखते ही भाग खड़ा होता हूँ । जानता हूँ जब भी मिलेंगे दस–बीस कविताएँ पिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे । एक दिन बगल में झोला दबाए आ पहुँचे । आते ही कहने लगे– ''मैं तो पिछले चार–पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में अति व्यस्त था । सच कहता हूँ कसम से, मैं आपके बारे में ही सोचता रहा । रात भर मुझे नींद नहीं आई और हाँ, रात को इसी संदर्भ में यह कविता बनाई...।'' यह कह झोले में से डायरी निकाली और लगे सुनाने–

''असम की राजधानी है शिलाँग
मेरे दोस्त की टूट गई है टाँग
मोटरवाले, तेरी ही साइड थी राँग ।''

कविता सुनाकर वे मुझे ऐसे देख रहे थे, मानो उनकी एक आँख पूछ रही हो– 'कहो, कविता कैसी रही ?' और दूसरी आँख पूछ रही हो–'बोल, बेटा ! अब भी मुझसे भागेगा ?' मैंने जल्दी से चाय पिलाई और फिर कविताएँ सुनने का वादा कर बड़ी मुश्किल से विदा किया ।

अब मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हे ईश्वर ! अगर तुझे मेरी दूसरी टाँग भी तोड़नी हो तो जरूर तोड़ मगर कृपा कर उस जगह तोड़ना जहाँ मेरा कोई भी परिचित न हो, क्योंकि बड़े बेदर्द होते हैं ये हमदर्दी जताने वाले ।

('हँसीघर के आईने' से)

— ० —

'रक्त बैंक' के कार्य तथा रक्तदान कार्यक्रम के बारे में जानकारी इकट्‌ठा करके अपनी कॉपी में लिखिए ।

किसी सार्वजनिक या ग्राम पंचायत की सभा में 'अंगदान' के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

शब्द संसार

फिक्र स्त्री.सं.(अ.) = चिंता
हमदर्दी स्त्री.सं.(फा.) = सहानुभूति
एहसान पुं.सं.(अ.) = कृतज्ञता
औंधा वि.(हिं.) = उल्टा

मुहावरे

टाँग अड़ाना = बाधा डालना
काँप उठना = भयभीत होना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

मरीज से मिलने के लिए आने वाले लोगों की विशेषताएँ

(२) अंतर स्पष्ट कीजिए :

प्राइवेट अस्पताल	सार्वजनिक अस्पताल
१. -------	१. -------
प्राइवेट वार्ड	जनरल वार्ड
१. -------	१. -------

(३) आकृति में लिखिए :

अस्पताल में आए सोनाबाई के बच्चों की शरारतें

(४) कारण लिखिए :

१. लेखक को अधिक गुस्सा अपनी पत्नी पर आया ------------------
२. लेखक कहते हैं कि मेरी दूसरी टाँग उस जगह तोड़ना जहाँ कोई परिचित न हो ------------------

(५) शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

१. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रखे जाते हैं - ------------------
२. जहाँ मुफ्त में भोजन मिलता है - ------------------

(६) शब्द बनाइए :

----- ← उपसर्ग युक्त शब्द ← दर्द → प्रत्यय युक्त शब्द → -----

----- ← उपसर्ग युक्त शब्द ← निश्चित → प्रत्यय युक्त शब्द → -----

अभिव्यक्ति मरीज से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए, लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए :

१. सोनाबाई अपने चार बच्चों के साथ आई । ...., ...
२. गाय बहुत दूध देती है । ...., ...
३. मैं रोज ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । ...., ...
४. सैनिकों की टुकड़ी आगे बढ़ी । ...., ...
५. सोना-चाँदी और भी महँगे होते जा रहे हैं । ...., ...
६. गोवा देख मैं तरंगायित हो उठा । ...., ...
७. युवकों का दल बचाव कार्य में लगा था । ....,...............,..............
८. आपने विदेश में भ्रमण तो कर लिया है । ...., ...
९. इस कहानी में भारतीय समाज का चित्रण मिलता है । ...., ...
१०. सागर का जल खारा होता है । ....,...............,..............

(२) पाठ में प्रयुक्त किन्हीं पाँच संज्ञाओं को ढूँढ़कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनामों का प्रयोग कीजिए :

१. ------- सार्वजनिक अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में हैं ।
२. ------- बाजार जाओ ।
३. ------- कारखाने में एक ही विभाग में काम करते थे ।
४. इसे लेकर ------- क्या करोगे ?
५. हृदय ------- है; ------- उदार हो ।
६. लोग ------- कमरा स्वच्छ कर रहे हैं ।
७. ------- रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया है ।
८. इसके बाद ------- लोग दिन भर पणजी देखते रहे ।
९. ------- इसके पहले उसे मना करता ।
१०. काम करने के लिए कहा है ------- करो ।

BHXZP2

(४) पाठ में प्रयुक्त सर्वनाम ढूँढ़कर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर किसी समारोह का वृत्तांत लेखन कीजिए :

* स्थान
* तिथि और समय
* प्रमुख अतिथि
* समारोह
* अतिथि संदेश
* समापन

४. मन

(पूरक पठन)

–विकास परिहार

घना अँधेरा
चमकता प्रकाश
और अधिक ।

करते जाओ
पाने की मत सोचो
जीवन सारा ।

जीवन नैया
मँझधार में डोले,
सँभाले कौन ?

रंग-बिरंगे
रंग-संग लेकर
आया फागुन ।

काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा ।

भीतरी कुंठा
आँखों के द्‌वार से
आई बाहर ।

खारे जल से
धुल गए विषाद
मन पावन ।

मृत्यु को जीना
जीवन विष पीना
है जिजीविषा ।

परिचय

जन्म : १९८३, गुना (म.प्र.)
परिचय : विकास परिहार ने २००० से २००६ तक भारतीय वायुसेना को अपनी सेवाएँ दीं फिर पत्रकारिता के क्षेत्र में उतरने के बाद रेडियो से जुड़े । साहित्य में विशेष रुचि होने के कारण आप नाट्‌य गतिविधियों से भी जुड़े हुए हैं ।

पद्‌य संबंधी

हाइकु : यह जापान की लोकप्रिय काव्य विधा है । हाइकु विश्व की सबसे छोटी कविता कही जाती है । पाँचवें दशक से हिंदी साहित्य ने हाइकु को खुले मन से स्वीकार किया है। हाइकु कविता ५+७+५=१७ वर्ण के ढाँचे में लिखी जाती है ।

प्रस्तुत हाइकु में कवि ने अपने अनुभवों और छोटी-छोटी विभिन्न घटनाओं को अर्थवाही सीमित शब्दों में प्रस्तुत किया है ।

मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें ।

चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन ।

सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सूना आकाश ।

तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर ।

सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी ही रही ।

— ० —

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ		आ
मछली	-------	मौन
गीतों के स्वर	-------	सुना
रेल की पटरियाँ	-------	प्यासी
आकाश	-------	अमर
		पीड़ा

(२) परिणाम लिखिए :

१. सितारों का छिपना -

२. तुम्हारा गीतों को स्वर देना -

(३) सरल अर्थ लिखिए :

मन की ------ बरसीं आँखें ।

शब्द संसार

मँझधार स्त्री.सं.(हिं.) = नदी के प्रवाह का मध्यभाग
कुंठा स्त्री.सं.(सं.) = घोर निराशा
विषाद पुं.सं.(सं.) = अभिलाषा पूरी न होने पर मन में होने वाला खेद या दुख
जिजीविषा स्त्री.सं.(सं.) = जीवन के प्रति आसक्ति/जीने की इच्छा
ओट स्त्री.सं.(सं.) = आड़

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) लिखिए :

निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश	
करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा ।	भीतरी कुंठा नयनों के द्वार से आई बाहर ।
------------------------ ------------------------ ------------------------	------------------------ ------------------------ ------------------------

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

हाइकु में प्रयुक्त महीना और उसकी ऋतु

(३) उत्तर लिखिए :

१. मँझधार में डोले -------
२. छिपे हुए -------
३. धुल गए -------
४. अमर हुए -------

(४) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए :

१. चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन ।

२. काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा ।

उपयोजित लेखन

वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए :

दिनांक : ....
संबोधन : ....
अभिवादन : ....
प्रारंभ :
विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,
....
नाम : ....
पता : ....
ई-मेल आईडी : ....

BN7VQP

५. गोवा : जैसा मैंने देखा

– विनय शर्मा

गोवा ! यह नाम सुनते ही सभी का मन तरंगायित हो उठता है और हो भी क्यों न, यहाँ की प्रकृति, आबोहवा और जीवनशैली का आकर्षण ही ऐसा है कि पर्यटक खुद-ब-खुद यहाँ खिंचे चले आते हैं। देश के एक कोने में स्थित होने के बावजूद यह छोटा-सा राज्य प्रत्येक पर्यटक के दिल की धड़कन है। यही कारण है कि मैं भी अपने परिवार के साथ इंदौर से गोवा जा पहुँचा। खंडवा से मेरे साढ़ू साहब भी सपरिवार हमारे साथ शामिल हो गए।

२३ नवंबर को जब 'गोवा एक्सप्रेस' मड़गाँव रुकी तो सुबह का उजास हो गया था। एक टैक्सी के हॉर्न ने मेरा ध्यान उसकी ओर खींचा और हम फटाफट उसमें बैठ गए। टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी। शीतल हवा के झोंकों से मन प्रसन्न हो गया और यात्रा की सारी थकान मिट गई। मैं सोचने लगा कि पर्यटन का भी अपना ही आनंद है। जब हम जीवन की कई सारी समस्याओं से जूझ रहे हों तो उनसे निजात पाने का सबसे अच्छा तरीका पर्यटन ही है। बदले हुए वातावरण के कारण मन तरोताजा हो जाता है तथा शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है।

कुछ देर बाद हमारी टैक्सी मडगाँव से पाँच किमी दूर दक्षिण में स्थित कस्बा बेनालियम के एक रिसॉर्ट में आकर रुक गई। यह रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया था। इसलिए औपचारिक खानापूर्ति कर हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट में चले गए। इससे पहले कि हम कमरों से बाहर निकलें, मैं आपको गोवा की कुछ खास बातें बता दूँ। दरअसल, गोवा राज्य दो भागों में बँटा हुआ है। दक्षिण गोवा जिला तथा उत्तर गोवा जिला। इसकी राजधानी पणजी मांडवी नदी के किनारे स्थित है। यह नदी काफी बड़ी है तथा वर्ष भर पानी से भरी रहती है। फिर भी समुद्री इलाका होने के कारण यहाँ मौसम में प्रायः उमस तथा हवा में नमी बनी रहती है। शरीर चिपचिपाता रहता है लेकिन मुंबई जितना नहीं, क्योंकि यहाँ का क्षेत्र हरीतिमा से भरपूर है फिर भी धूप तो तीखी ही होती है।

यों तो गोवा अपने खूबसूरत सफेद रेतीले तटों, महँगे होटलों तथा खास जीवन शैली के लिए जाना जाता है लेकिन इन सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए हैं।

यहाँ की शाम बड़ी अच्छी होती है तो चलो, इस शाम का आनंद लेने

परिचय

जन्म : १९७३, उज्जैन (म.प्र.)

परिचय : विनय शर्मा का अधिकांश लेखन उनके अनुभवों पर आधारित रहा है। आपकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं। यात्रा वृत्तांत आपकी पसंदीदा विधा है। साथ ही आपने व्यंग्य और ललित निबंध भी लिखे हैं।

कृतियाँ : 'आनंद का उद्‌गम अमरकंटक' (ललित निबंध), 'चित्र की परीक्षा' (व्यंग्य), 'अमरनाथ यात्रा : प्रकृति के बीच' 'कोइंबतूर में कुछ दिन' (यात्रा वृत्तांत) आदि।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत यात्रा वर्णन के माध्यम से लेखक ने गोवा के सुंदर समुद्री किनारों, वहाँ की जीवनशैली, त्योहार आदि का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है।

के लिए बेनालियम बीच की ओर चलें । आप भी चलें क्योंकि बहुत ही खूबसूरत तथा शांत जगह है बेनालियम । दिन भर की थकान तथा उमस भरी गरमी के बाद शाम को बीच पर जाना बड़ा अच्छा लग रहा था । रिसॉर्ट से बीच की दूरी कोई एक किमी ही थी लेकिन जल्दी-जल्दी चलने के बाद भी यह दूरी तय हो ही नहीं पा रही थी । अरब सागर देखने का उत्साह बढ़ता ही जा रहा था । तभी अचानक लहरों की आवाज सुनाई दी जो किसी रणभेदी की तरह थी । हम सभी दौड़ पड़े । सड़क पीछे छूट गई थी इसलिए रेत पर तेजी से दौड़ना मुश्किल हो रहा था, फिर भी धँसे हुए पैरों को पूरी ताकत से उठा-उठाकर भाग रहे थे । खूबसूरत समुंदर देखते ही मैं उससे जाकर लिपट गया । इधर बच्चे रेत का घर बनाने में जुट गए। लहरें उनका घर गिरा देतीं तो वे दूसरी लहर आने के पहले फिर नया घर बनाने में जुट जाते। यही क्रम चलता रहा । मैंने इन बच्चों से सीखा कि जीवन में आशावाद हो तो कोई काम असंभव नहीं है । शाम गहराने पर हम किनारे पर बैठ गए। मानो हर लहर कह रही हो कि बनने के बाद मिटना ही नियति है । यही जीवन का सत्य भी है ।

यहाँ एक मजेदार दृश्य भी देखने को मिला । लहरों की आवाज के बीच पक्षियों की टीं-टीं-टीं की आवाज भी आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेती है । दरअसल, ये पक्षी लहरों के साथ बहकर आई मछलियों का शिकार करने के लिए किनारे पर ही मँड़राते रहते हैं लेकिन जब तेज हवा के कारण एक ही दिशा में सीधे नहीं उड़ पाते हैं तो सुस्ताने के लिए किनारे पर बैठ जाते हैं । यहाँ बैठे कुत्तों को इसी बात का इंतजार रहता है । मौका मिलते ही वे इनपर झपट पड़ते हैं लेकिन बेचारे कुत्तों को सफलता कम ही मिल पाती है । पक्षियों का बैठना, कुत्तों का दौड़ना और पक्षियों का टीं-टीं-टीं कर उड़ जाना, यह दृश्य सैलानियों का अच्छा मनोरंजन करता है । इधर जैसे ही सूर्य देवता ने विदा ली वैसे ही चंद्रमा की चाँदनी में नहाकर समुद्र का नया ही चेहरा नजर आने लगा । अब समुद्र स्याह और भयावह दिखने लगा ।

अगले दिन हमने बस से गोवा घूमने की योजना बनाई । वैसे घूमने-फिरने के लिए यहाँ बाइक आदि किराए पर मिल जाती है और उनपर ही घूमने का मजा भी आता है लेकिन बच्चों के कारण हमने बस से जाना मुनासिब समझा । यहाँ 'सी फूड' की अधिकता होने के कारण शाकाहारी पर्यटकों को सुस्वादु भोजन की समस्या से भी दो-चार होना पड़ता है । काफी भटकने के बाद अच्छा भोजन मिल गया तो समझो किस्मत और जेब तो ढीली हो ही गई । यह समस्या हमें पहले से पता थी । इसलिए हम

पठनीय

गोवा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी पढ़िए और कालानुक्रम के अनुसार प्रमुख घटनाओं की तालिका बनाइए।

अपने रिसॉर्ट के स्यूट में उपलब्ध किचन में ही भोजन करते थे ।

सबसे पहले हम अंजुना बीच पहुँचे । गोवा में छोटे-बड़े करीब ४० बीच हैं लेकिन प्रमुख सात या आठ ही हैं । अंजुना बीच नीले पानीवाला, पथरीला बहुत ही खूबसूरत है । इसके एक ओर लंबी-सी पहाड़ी है, जहाँ से बीच का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है । समुद्र तक जाने के लिए थोड़ा नीचे उतरना पड़ता है । नीला पानी काले पत्थरों पर पछाड़ खाता रहता है । पानी ने काट-काटकर इन पत्थरों में कई छेद कर दिए हैं जिससे ये पत्थर कमजोर भी हो गए हैं । साथ ही समुद्र के काफी पीछे हट जाने से कई पत्थरों के बीच में पानी भर गया है । इससे वहाँ काई ने अपना घर बना लिया है । फिसलने का डर हमेशा लगा रहता है लेकिन संघर्षों में ही जीवन है, इसलिए यहाँ घूमने का भी अपना अलग आनंद है । यहाँ युवाओं का दल तो अपनी मस्ती में डूबा रहता है, लेकिन परिवार के साथ आए पर्यटकों का ध्यान अपने बच्चों को खतरों से सावधान रहने के दिशानिर्देश देने में ही लगा रहता है । मैंने देखा कि समुद्र किनारा होते हुए भी बेनालिया बीच तथा अंजुना बीच का अपना-अपना सौंदर्य है । बेनालियम बीच रेतीला तथा उथला है । यह मछुआरों की पहली पसंद है । यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं लेकिन मजे की बात यह है कि इतनी सारी मछलियाँ स्थानीय बाजारों में ही बेची जाती हैं । इनका निर्यात बिलकुल भी नहीं होता है । इसके विपरीत अंजुना बीच गहरा और नीले पानीवाला है । यह बॉलीवुड की पहली पसंद है । यहाँ कई हिट फिल्मों की शूटिंग हुई है । दोनों बीच व्यावसायिक हैं पर मूल अंतर व्यवसाय की प्रकृति का है । इसके बाद हम लोग दिन भर पणजी शहर देखते रहे ।

घूम-फिरकर शाम को हम कलिंगवुड बीच पर पहुँचे । यह काफी रेतीला तथा गोवा का सबसे लंबा बीच है जो ३ से ४ किमी तक फैला है । यहाँ पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं । यही कारण है कि यह स्थानीय लोगों के व्यवसाय का केंद्र भी है । यहाँ कई प्रकार के वाटर स्पोर्ट्स होते हैं जिनमें कुछ तो हैरतअंगेज हैं, जिन्हें देखने में ही आनंद आता है । आप भी अपनी रुचि के अनुसार हाथ आजमा सकते हैं । मैंने कई खेलों में हिस्सा लिया, लेकिन सबसे अधिक रोमांच पैराग्लाइडिंग में ही आया । काफी ऊँचाई से अथाह जलराशि को देखना जितना विस्मयकारी है, उतना ही भयावह भी । दूर-दूर तक पानी-ही-पानी, तेज हवा और रस्सियों से हवा में लटके हम । हम यानी मैं और मेरी पत्नी । दोनों डर भी रहे थे और खुश भी हो रहे थे । डर इस बात का कि छूट गए तो समझो गए और खुशी इस बात की कि ऐसा रोमांचक दृश्य पहली बार देखा । सचमुच अद्‌भुत !

श्रवणीय

यू ट्यूब पर गोवा का संगीत सुनिए और लोकसंगीत के कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

गोवा की तरह अन्य समुद्रवर्ती दर्शनीय स्थलों की जानकारी अंतरजाल की सहायता से प्राप्त कीजिए तथा लिखकर सूचना फलक पर लगाइए ।

हम यहाँ चार-छह दिन रहे लेकिन हमारी एक ही दिनचर्या रही । सुबह जल्दी उठना, फटाफट नाश्ता करना और दिन भर घूम-फिरकर, थककर शाम को रिसॉर्ट आकर थकान मिटाने के लिए पूल में तैरना ! एक दिन कोलवा बीच पर हमने बोटिंग का भी आनंद लिया। यहाँ हमने डॉल्फिन मछलियाँ देखीं । हालाँकि ये छोटी थीं पर बच्चों ने अच्छा आनंद लिया ।

इस दौरान यहाँ नवरात्रि तथा दशहरा पर्व मनाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ । उत्तर भारत में जिस तरह हर घर तथा गली-मोहल्ले में माँ दुर्गा की घट स्थापना कर तथा लड़कियों द्‌वारा गरबा कर पर्व मनाया जाता है, ऐसा ही यहाँ भी होता है । रावण का पुतला कहीं भी नहीं जलाया जाता है । सुबह से लोग अपने वाहनों की सफाई कर उनकी पूजा करते हैं और शाम को भगवान की एक पालकी मंदिर ले जाई जाती है । इसके बाद एक पेड़ विशेष की पत्तियाँ तोड़कर लोग एक-दूसरे को देकर बधाई देते हैं । सबकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा है ।

इतने कम दिनों में मैं गोवा को पूरा देख-समझ तो नहीं पाया पर इतना जरूर समझ गया कि पश्‍चिमी फैशन और सभ्यता में रचा-बसा होने के बावजूद यह भारतीय संस्कृति को पूरी तरह से आत्मसात किए हुए हैं। पर्यटक फैशन के रंग में कुछ देर के लिए भले ही स्वयं को रँगकर चले जाते हों लेकिन स्थानीय लोग अपनी सांस्कृतिक परंपरा की उँगली अब भी पकड़े हुए हैं ।

—— ० ——

संभाषणीय

गोवा की प्राकृतिक सुंदरता पर संवाद प्रस्तुत कीजिए ।

शब्द संसार

आबोहवा स्त्री.सं.(अ.फा.) = जल-वायु
खानापूर्ति स्त्री.सं.(फा.) = औपचारिकता पूरी करना
हरीतिमा स्त्री.सं.(सं) = हरियाली
सैलानी वि.(हिं.) = सैर-सपाटा करने वाले, पर्यटक
सुस्वादु वि.(हिं.) = स्वादिष्ट

मुहावरे

मन तरंगायित होना = मन उमंग से भरना
निजात पाना = मुक्ति पाना
दो-चार होना = जूझना
जेब ढीली होना = जेब खाली होना, बहुत अधिक खर्च होना

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

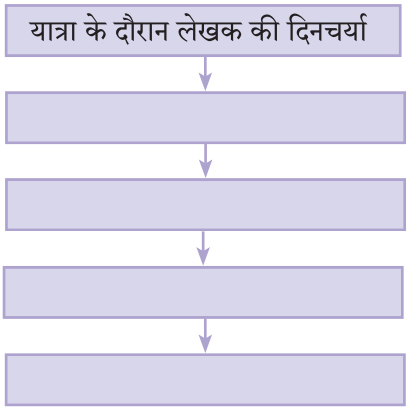

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

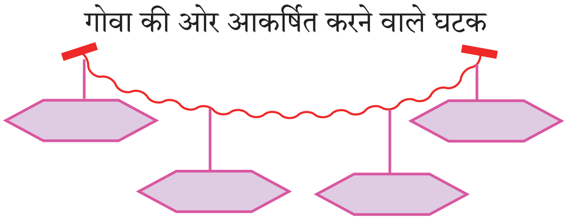

(३) लिखिए :

१. नीले पानीवाला पथरीला –
२. रेतीला तथा उथला –
३. सबसे लंबा –
४. मछुआरों की पहली पसंद –

(४) सूची बनाइए :

गोवा का प्राकृतिक सौंदर्य दर्शाने वाले वाक्य	
१.	
२.	
३.	
४.	

(५) कृति पूर्ण कीजिए :

नवरात्रि तथा दशहरा पर्व में गोवा की अलग परंपराएँ

----

(६) 'बेनालिया', 'अंजुना' तथा 'कलिंगवुड' बीच की विशेषताएँ :

१. -----------	१. -----------	१. -----------
२. -----------	२. -----------	२. -----------
३. -----------	३. -----------	३. -----------

(७) सोचिए और लिखिए :

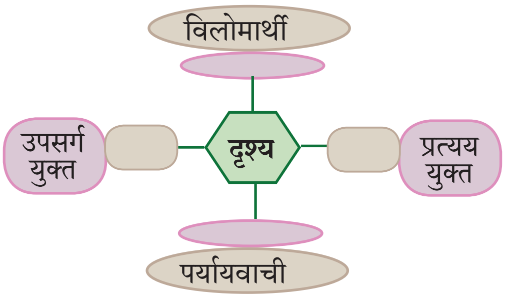

अभिव्यक्ति 'प्रकृति को सुंदर बनाए रखने में मेरा योगदान' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) कोष्ठक में दी गई संज्ञाओं से विशेषण संलग्न हैं । नीचे दी गई सारिणी में संज्ञा तथा विशेषणों को भेदों सहित लिखिए :
[भयभीत गाय, नीला पानी, दस लीटर दूध, चालीस छात्र, कुछ लोग, दो गज जमीन, वही पानी, यह लड़का]

संज्ञा	भेद	विशेषण	भेद
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------
-----------	-----------	-----------	-----------

(२) उपर्युक्त संज्ञा-विशेषणों की जोड़ियों का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(३) पाठ में प्रयुक्त विशेषणों को ढूँढ़कर उनकी सूची बनाइए ।

(४) निम्नलिखित वाक्यों में आई हुई सहायक क्रियाओं को अधोरेखांकित कीजिए तथा उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

१. टैक्सी एक पतली-सी सड़क पर दौड़ पड़ी ।
वाक्य = --

२. शरीर को कुछ समय के लिए विश्राम मिल जाता है ।
वाक्य = --

३. हम आराम करने के इरादे से अपने-अपने स्यूट चले गए ।
वाक्य = --

४. फिर भी धूप तीखी ही होती जाती है ।
वाक्य = --

५. सबके बावजूद यह अपने में एक सांस्कृतिक विरासत भी समेटे हुए हैं ।
वाक्य = --

६. इधर बच्चे रेत का घर बनाने लगे ।
वाक्य = --

७. अब समुद्र स्याह और भयावह दिखने लगा ।
वाक्य = --

८. यहाँ सुबह-सुबह बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ी जाती हैं ।
वाक्य = --

BNGRSC

(५) पाठ में प्रयुक्त दस सहायक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

विजय/विजया मोहिते, वरदा सोसायटी, विजयनगर, कोल्हापुर से व्यवस्थापक, औषधि भंडार, नागपुर को पत्र लिखकर आयुर्वेदिक औषधियों की माँग करता/करती है ।

६. गिरिधर नागर

-संत मीराबाई

(१)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकट, मेरो पति सोई
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई ।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई ।।
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ।।
भगत देखि राजी हुई जगत देखि रोई ।
दासी 'मीरा' लाल गिरिधर तारो अब मोही ।।

(२)

हरि बिन कूण गती मेरी ।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी ।।
आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी ।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी ।।
यौ संसार बिकार सागर बीच में घेरी ।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी ।।
बिरहणि पिवकी बाट जौवै राखल्यो नेरी ।
दासी मीरा राम रटत है मैं सरण हूँ तेरी ।।

(३)

फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे ।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम-रोम रणकार रे ।।
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे ।।
घट के पट सब खोल दिए हैं, लोकलाज सब डार रे ।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे ।।

०

परिचय

जन्म : १५१६, जोधपुर (राजस्थान)
मृत्यु: १५४६, द्वारिका (गुजरात)
परिचय : संत मीराबाई बचपन से ही कृष्णभक्ति में लीन रहा करती थीं । बाद में गृहत्याग करके आप घूम-घूमकर मंदिरों में अपने भजन सुनाया करती थीं । मीराबाई के भजन और उपासना माधुर्यभाव से ओत-प्रोत हैं। आपके पदों में प्रेम की तल्लीनता समान रूप से पाई जाती है।
प्रमुख कृतियाँ : 'नरसी जी का मायरा,' 'गीत गोविंद', 'राग गोविंद,' 'राग सोरठ के पद' आदि ।

पद्य संबंधी

मीराबाई के सभी पद उनके आराध्य के प्रति ही समर्पित हैं । आपके पदों का मुख्य स्वर भगवत प्रेम ही है । प्रस्तुत पदों में आपकी उत्सुकता, मिलन, आशा, प्रतीक्षा के भाव सभी अनुपम हैं ।

शब्द संसार

कुल पुं.सं.(सं.) = वंश, घराना
ढिग क्रि.वि.(हिं.) = पास, निकट
मथनियाँ स्त्री.सं.(हिं.) = मथनी, दही मथने का साधन
रावरी सर्व.(दे.) = आपकी
चेरी स्त्री.सं.(हिं.) = चेली, दासी
नेरी स्त्री.वि.(दे.) = पास, निकट
छतीसूँ वि.(दे.) = श्रेष्ठ
कँवल पुं.सं.(दे.) = कमल
बलिहारना क्रि.(दे.) = निछावर करना

स्वाध्याय

* सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

होली के समय आनंद निर्मित करने वाले घटक

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

कन्हैया की विशेषताएँ

(३) इस अर्थ में आए शब्द लिखिए :

	अर्थ	शब्द
(१)	दासी	---------
(२)	साजन	---------
(३)	बार-बार	---------
(४)	आकाश	---------

(४) कन्हैया के नाम

(५) दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए तथा उचित शीर्षक दीजिए :

अलमारी, गिलहरी, चावल के पापड़, छोटा बच्चा

अपठित पद्यांश

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

काम जरा लेकर देखो, सख्त बात से नहीं स्नेह से
अपने अंतर का नेह अरे, तुम उसे जरा देकर देखो ।
कितने भी गहरे रहें गर्त, हर जगह प्यार जा सकता है,
कितना भी भ्रष्ट जमाना हो, हर समय प्यार भा सकता है ।
जो गिरे हुए को उठा सके, इससे प्यारा कुछ जतन नहीं,
दे प्यार उठा पाए न जिसे, इतना गहरा कुछ पतन नहीं ।।

(भवानी प्रसाद मिश्र)

(१) उत्तर लिखिए :

१. किसी से काम करवाने के लिए उपयुक्त – [ ]
२. हर समय अच्छी लगने वाली बात – [ ]

(२) उत्तर लिखिए :

१. अच्छा प्रयत्न यही है – [ ]

२. यही अधोगति है – [ ]

(३) पद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए ।

भाषा बिंदु

कोष्ठक में दिए गए प्रत्येक/कारक चिह्न से अलग-अलग वाक्य बनाइए और उनके कारक लिखिए :

[ने, को, से, का, की, के, में, पर, हे, अरे, के लिए]

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

BNQHTZ

७. खुला आकाश

(पूरक पठन)

– *कुँवर नारायण*

अंदर की दुनिया

हमारे अंदर की दुनिया बाहर की दुनिया से कहीं ज्यादा बड़ी है । हम उसका विस्तार नहीं करते । बाहर की अपेक्षा उसे छोटा करते चले जाते हैं और उसे बिलकुल निर्जीव कर लेते हैं । आजादी, पूरी आजादी, अगर कहीं संभव है तो इसी भीतरी दुनिया में ही, जिसे हम बिलकुल अपनी तरह समृद्‌ध बना सकते हैं– स्वार्थी अर्थों में सिर्फ अपने लिए ही नहीं, निःस्वार्थी अर्थों में दूसरों के लिए भी महत्त्व रखता है और स्वयं अपने लिए तो विशेष महत्त्व रखता ही है ।

– १० मार्च १९९८

मकान पर मकान

जिस गली में आजकल रहता हूँ–वहाँ एक आसमान भी है लेकिन दिखाई नहीं देता । उस गली में पेड़ भी नहीं हैं, न ही पेड़ लगाने की गुंजाइश ही है । मकान ही मकान हैं । इतने मकान कि लगता है मकान पर मकान लदे हैं । लंद-फंद मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़, जो एक सँकरी गली में फँस गई और बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है । जिस मकान में रहता हूँ, उसके बाहर झाँकने से 'बाहर' नहीं सिर्फ दूसरे मकान और एक गंदी व तंग गली दिखाई देती है । चिड़ियाँ दिखती हैं, लेकिन पेड़ों पर बैठीं या आसमान में उड़तीं हुई नहीं । बिजली या टेलीफोन के तारों पर बैठी, मगर बातचीत करतीं या घरों के अंदर यहाँ-वहाँ घोंसले बनाती नहीं दिखतीं । उन्हें देखकर लगता मानो वे प्राकृतिक नहीं, रबड़ या प्लास्टिक के बने खिलौने हैं, जो शायद ही इधर-उधर फुदक सकते हों या चूँ-चूँ की आवाजें निकाल सकते हों ।

मैं ऐसी सँकरी और तंग गली में, मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़ से बिजली या टेलीफोन के तारों से उलझे आसमान से एवं हरियाली के अभाव से जूझते अपने मुहल्ले से बाहर निकलने की भारी कोशिश में हूँ ।

– १० मार्च १९९८

सही साहित्य

सही और संपूर्ण साहित्य वह है, जिसे हम दोनों आँखों से देखते हैं-सिर्फ बाईं या सिर्फ दाईं आँख से नहीं ।

– ८ अगस्त, १९९८

परिचय

जन्म : १९२७, फैजाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : २०१७, लखनऊ (उ.प्र.)
परिचय : 'नई कविता' आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर कुंवर नारायण की मूल विधा कविता रही है । इसके अलावा आपने कहानी, लेख, समीक्षा, सिनेमा, रंगमंच आदि कलाओं पर भी लेखनी चलाई है । आपकी कविता-कहानियों का कई भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है । आपको भारतीय साहित्य जगत का सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ' भी प्राप्त हुआ है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'चक्रव्यूह', 'तीसरा सप्तक', 'परिवेश', 'हम-तुम', 'आत्मजयी', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत डायरी विधा में कुँवर नारायण जी ने जीवन के संघर्ष, साहित्य, आत्मचिंतन, जीवनक्रम आदि पर अपने विचार स्पष्ट किए हैं । इस पाठ में आपका मानना है कि हमें दूसरों से वाद-विवाद न करके स्वयं से संवाद करना चाहिए ।

जानें खुद को

बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ अपने बारे में सोचें । कोशिश करें कि 'दूसरे' या 'सब' कहीं भी उस आत्मचिंतन के बीच में ना आएँ । इससे दो फायदे होंगे । एक तो हम अपने को जान सकेंगे कि हम स्वयं क्या हैं, जो दूसरों के बारे में सब कुछ जानने का दंभ रखते हैं । दूसरे, हमारे उस हस्तक्षेप से दूसरों की रक्षा होगी, जिसके प्रतिक्षण मौजूद रहते वे अपने बारे में न तो संतुलित ढंग से सोच पाते हैं, न सक्रिय हो पाते हैं । दूसरों की सोच-समझ में भी उतना ही भरोसा रखें, जिनमें हमें अपनी सोच-समझ में है ।

हर एक के प्रति हमारे मन में सहज सकारात्मक स्वीकृति का भाव होना चाहिए । दूसरा अन्य नहीं, अंतमय है, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं ।

– १२ नवंबर १९९८

सिर्फ मनुष्य होते ...

कुछ लोग सोचते होंगे कि आखिर यह क्यों होता है, कैसे होता है कि आदमियों में ही कुछ आदमी बाघ, भेड़िये, लकड़बग्घे, साँप, तेंदुए, बिच्छू, गोजर वगैरह की तरह होते हैं और कुछ आदमी गायें, बकरी, भेड़ तितली वगैरह की तरह ? ऐसा क्यों नहीं होता कि जिस तरह सारे बाघ केवल बाघ होते हैं और कुछ नहीं, या जैसे सारी गायें केवल गायें होती हैं और कुछ नहीं, उसी तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं... ।

– ७ अगस्त १९९९

लुका-छिपाकर जीना

मुझे जीवन को सहज और खुले ढंग से जीना पसंद है । चीजों को लुका-छिपाकर, बातों और व्यवहार को रचा बसाकर जीना सख्त नापसंद है । वह चारित्रिक बेईमानी है, जिसे हम व्यवहार कुशलता का नाम देते हैं । इसके पीछे आत्मविश्वास की कमी झलकती है कि कहीं लोग हमारी असलियत को न जान जाएँ ।

आखिर वह असलियत इतनी गंदी और धूर्त क्यों हो कि उसे छिपाना जरूरी लगे ।

– ४ जनवरी २००१

जीने का अर्थ

बुढ़ापे का केवल यही अर्थ नहीं कि जीवन के कुछ कम वर्ष बचे हैं; यह तथ्य तो जीवन के किसी खंड पर भी लागू हो सकता है– बचपन, यौवन बुढ़ापा... । खास बात है, जो भी वर्ष बचे हैं, जब तक जीवित और चैतन्य हूँ, जिंदगी को क्या अर्थ दे पाता हूँ, या अपने लिए उससे क्या पाता हूँ, ऐसा कुछ जिसका सबके लिए कोई महत्त्व है । लगभग इसी अर्थ में मैं साहित्यिक चेष्टा और जीवन चेष्टा को अपने लिए अविभाज्य पाता हूँ ।

संभाषणीय

'कंप्यूटर ज्ञान का महासागर' विषय पर तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

महानगरीय/ग्रामीण दिनचर्या के लाभ तथा हानि के बारे में अपने अनुभव के आधार पर लिखिए ।

७५ का हो रहा हूँ-यानी, जीने के लिए अब कुछ ही वर्ष बचे हैं लेकिन जीना बंद नहीं हो गया है । यह अहसास कि मृत्यु बहुत दूर नहीं है, उम्र के किसी भी मोड़ पर हो सकती है । ऐसा हुआ भी है मेरे साथ । तब हो या अब, यह सवाल अपनी जगह बना रहता है कि जीवन को किस तरह जिया जाए-सार्थकता से अपने लिए या दूसरों के लिए ... ।

– २३ जनवरी २००२

दिल्ली में रहना

दिल्ली शहर में घर ढूँढ़ रहा हूँ । शहर, जैसे एक बहुत बड़ी बस ! सवारियों से लंद-फंद, हर वक्त चलायमान । दिल्ली में रहने का मतलब कहीं पायदान बराबर दो कमरों में दो पाँव टिकाकर किसी तरह लटक जाओ और लटके रहो उम्र भर । जिंदगी का मतलब बस इतना ही कि जब तक बन पड़े लटके रहो, फिर धीरे-से कहीं भीड़-भाड़ में गिर जाओ ... ।

– १२ जून २००३

बहाने निकालना

जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं । जो नहीं करना चाहते, उसके लिए बहाने निकाल लेते हैं... ।

– जनवरी २००६

अपने से बहस

बहस दूसरों से नहीं, अपने से करनी चाहिए उससे सच्चाई हाथ लगती है । दूसरों को सिर्फ सुनना चाहिए; दूसरों से बहस से केवल झगड़ा हाथ लगता है ।

चीजों की गुलामी

कुछ दिनों पहले एक कंप्यूटर ने मुझे चालीस हजार रुपयों में खरीदा है ! आज-कल उसकी गुलामी में हूँ । उसके नखरों को सिर झुकाकर झेलने में ही अपना कल्याण देख रहा हूँ । उसका वादा है कि एक दिन वह मुझे लिखने-पढ़ने की पूरी आजादी देगा । फिलहाल उसकी एकनिष्ठ सेवा में ही मेरा उज्ज्वल भविष्य है ।

इसके पहले एक मोटर मुझे भारी दामों में खरीद चुकी है । उसकी सेवा में भी हूँ । दरअसल, चीजों का एक पूरा परिवार है जिसकी सेवा में हूँ । आदमी का स्वभाव नहीं बदलता या बहुत कम बदलता है । गुलामी करना-करवाना उसके स्वभाव में है । सिर्फ तरीके बदले हैं, गुलामी की प्रवृत्ति नहीं । हजारों साल पहले एक आदमी मालिक होता था और उसके दरजनों गुलाम होते थे । अब हर चीज के दरजनों गुलाम होते हैं ।

– ३० सितंबर २०१०

('दिशाओं का खुला आकाश' से)

०

पठनीय

शरद जोशी लिखित 'अतिथि तुम कब जाओगे,' हास्य व्यंग्य कहानी पढ़िए तथा सुनाइए ।

श्रवणीय

'घर की बालकनी/आँगन में सेंद्रिय पद्धति से पौधे कैसे उगाए जाते हैं', इसके बारे में आकाशवाणी/दूरदर्शन पर सुनिए और सुनाइए ।

शब्द संसार

सँकरी स्त्री. वि.(हिं.) = पतली, कम चौड़ी, तंग

लकड़बग्घा पुं.सं.(हिं.) = भेड़िये की जाति का एक पशु

गोजर पुं.सं.(हिं.) = कनखजूरा

चलायमान वि.(सं.) = चलता हुआ, चंचल

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

गली की विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. गली से यह नहीं दिखता – ----------, ----------

२. लेखक ऐसी जिंदगी बिताना नहीं चाहता – ----------, ----------

(३) आकृति में लिखिए :

कुछ मनुष्यों में दिखाई देने वाले पशु

(४) मनुष्य जीवन की स्थितियाँ

(५) लिखिए :

१. घर से बाहर झाँकने पर यह दिखाई देता है

२. लेखक इनकी सेवा में लगे हैं

अभिव्यक्ति 'जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं,' इसका सोदाहरण अर्थ लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दु:+लभ	----------	----------
२.	महा+आत्मा	----------	----------
३.	अन्+आसक्त	----------	----------
४.	अंत:+चेतना	----------	----------
५.	सम्+तोष	----------	----------
६.	सदा+एव	----------	----------

(२) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	----------
२.	नमस्ते	+	----------
३.	स्वागत	+	----------
४.	दिग्दर्शक	+	----------
५.	यद्‌यपि	+	----------
६.	दुस्साहस	+	----------

(३) निम्नलिखित आकृति में दिए गए शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए :

दिग्गज
सप्ताह
निश्चल
भानूदय
निस्संदेह
सूर्यास्त

विच्छेद	भेद
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)
________ + ________	(---------)

(४) पाठों में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए ।

अपठित गद्‌यांश

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

हर किसी को आत्मरक्षा करनी होगी, हर किसी को अपना कर्तव्य करना होगा । मैं किसी की सहायता की प्रत्याशा नहीं करता । मैं किसी का भी प्रत्याह नहीं करता । इस दुनिया से मदद की प्रार्थना करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है । अतीत में जिन लोगों ने मेरी मदद की है या भविष्य में भी जो लोग मेरी मदद करेंगे, मेरे प्रति उन सबकी करुणा मौजूद है, इसका दावा कभी नहीं किया जा सकता । इसीलिए मैं सभी लोगों के प्रति चिर कृतज्ञ हूँ । तुम्हारी परिस्थिति इतनी बुरी देखकर मैं बेहद चिंतित हूँ । लेकिन यह जान लो कि-'तुमसे भी ज्यादा दुखी लोग इस संसार में हैं । मैं तुमसे भी ज्यादा बुरी परिस्थिति में हूँ । इंग्लैंड में सब कुछ के लिए मुझे अपनी ही जेब से खर्च करना पड़ता है । आमदनी कुछ भी नहीं है । लंदन में एक कमरे का किराया हर सप्ताह के लिए तीन पाउंड होता है । ऊपर से अन्य कई खर्च हैं । अपनी तकलीफों के लिए मैं किससे शिकायत करूँ ? यह मेरा अपना कर्मफल है, मुझे ही भुगतना होगा ।'

(विवेकानंद की आत्मकथा से)

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कमरे का किराया

२. लेखक इनके प्रति कृतज्ञ है

(२) उत्तर लिखिए :

१. परिच्छेद में उल्लिखित देश -
२. हर किसी को करना होगा -
३. लेखक की तकलीफें -
४. हर किसी को करनी होगी -

(३) निर्देशानुसार हल कीजिए :

(अ) निम्नलिखित अर्थ से मेल खाने वाला शब्द उपर्युक्त परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए :

१. स्वयं की रक्षा करना - ....
२. दूसरों के उपकारों को मानने वाला -...............

(ब) लिंग पहचानकर लिखिए :

१. जेब
२. दावा
३. साहित्य
४. सेवा

(४) 'कृतज्ञता' के संबंध में अपने विचार लिखिए ।

BNZIVM

८. गजल

–माणिक वर्मा

आपसे किसने कहा स्वर्णिम शिखर बनकर दिखो,
शौक दिखने का है तो फिर नींव के अंदर दिखो ।

चल पड़ी तो गर्द बनकर आस्मानों पर लिखो,
और अगर बैठो कहीं तो मील का पत्थर दिखो ।

सिर्फ देखने के लिए दिखना कोई दिखना नहीं,
आदमी हो तुम अगर तो आदमी बनकर दिखो ।

जिंदगी की शक्ल जिसमें टूटकर बिखरे नहीं,
पत्थरों के शहर में वो आईना बनकर दिखो ।

आपको महसूस होगी तब हरइक दिल की जलन,
जब किसी धागे-सा जलकर मोम के भीतर दिखो ।

एक जुगनू ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो ।

एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो ।

डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखो ।

कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो ।

(‘गजल मेरी इबादत है’ से)

— ० —

परिचय

जन्म : १९३८, उज्जैन (म.प्र.)
परिचय : हास्य-व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर माणिक वर्मा जी वाचिक परंपरा में प्रमुख स्थान रखते हैं । आपके व्यंग्य बड़े ही धारदार होते हैं। आपकी गजलें बहुत ही प्रेरणादायी होती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : ‘गजल मेरी इबादत है’, ‘आखिरी पत्ता’ (गजल संग्रह), ‘आदमी और बिजली का खंभा’, ‘महाभारत अभी जारी है’, ‘मुल्क के मालिकों जवाब दो’ आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गजल के अधिकांश शेरों में वर्मा जी ने हम सबको जीवन में निरंतर अच्छे कर्म करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है । गजलकार ने संदेश देते हुए कहा है कि अपने रूप-रंग से सुंदर दिखने के बजाय अपने कर्मों से सुंदर दिखना आवश्यक है ।

शब्द संसार

स्वर्णिम पुं.वि.(सं.) = सोने के रंग का/सुनहला **शक्ल** स्त्री.सं.(अ.) = चेहरा
गर्द स्त्री.सं.(फा.) = धूल **धुंध** स्त्री.सं.(सं.) = धुआँ, कोहरा

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) गजल की पंक्तियों का तात्पर्य :

१. नींव के अंदर दिखो ------------

२. आईना बनकर दिखो ------------

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

मनुष्य से अपेक्षाएँ

(३) जिनके उत्तर निम्न शब्द हों, ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए :

१. भीड़

२. जुगनू

३. तितली

४. आसमान

(४) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवनमूल्य लिखिए :

१. आपको महसूस -------
------- भीतर दिखो ।

२. कोई ऐसी शक्ल -------
------- मुझे अक्सर दिखो ।

(५) कृति पूर्ण कीजिए :

गजल में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक

(६) कवि के अनुसार ऐसे दिखो :

अभिव्यक्ति प्रस्तुत गजल की अपनी पसंदीदा किन्हीं चार पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

उपयोजित लेखन 'यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता,' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए ।

BP9EXA

९. रीढ़ की हड्डी

– *जगदीशचंद्र माथुर*

पात्र

उमा–सुशिक्षित युवती, **रामस्वरूप**–उमा के पिता, **प्रेमा**–उमा की माँ, **शंकर**–युवक, **गोपाल प्रसाद**–शंकर के पिता

रतन–रामस्वरूप का नौकर

[एक कमरा । अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वह अधेड़ उम्र के हैं। एक तख्त को पकड़े हुए कमरे में आते हैं । तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है ।]

रामस्वरूप : अबे ! धीरे-धीरे चल ।.... अब तख्त को उधर मोड़ दे... उधर । (तख्त के रखे जाने की आवाज आती है ।)

रतन : बिछा दें साहब ?

रामस्वरूप : (जरा तेज आवाज में) और क्या करेगा ? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या ?... बिछा दूँ साहब ! ... और यह पसीना किसलिए बहाया है ?

रतन : (तख्त बिछाता है) हीं-हीं-हीं ।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए) और बीबी जी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला और सितार भी ।... जल्दी जा (रतन जाता है । पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं ।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी उमा तो मुँह फुलाए पड़ी है ।

रामस्वरूप : क्या हुआ ?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि उसे ठीक-ठाक करके नीचे लाना ।

रामस्वरूप : अरे हाँ, देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए । ये लोग जरा ऐसे ही हैं। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसायटियों में जाते हैं; मगर चाहते हैं कि लड़की ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो ।

प्रेमा : और लड़का ?

रामस्वरूप : बाप सेर है तो लड़का सवा सेर । बी.एस्सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मेडिकल कॉलेज में । कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, पढ़ाई का दूसरा । क्या करूँ, मजबूरी है ।

परिचय

जन्म : १९१७, बुलंदशहर (उ.प्र.)
मृत्यु : १९७८
परिचय : जगदीशचंद्र माथुर जी एक वरिष्ठ साहित्यकार और संस्कृति पुरुष थे । आपने आकाशवाणी में काम करते हुए हिंदी को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया । आप प्रसिद्ध नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'कोणार्क', 'पहला राजा', 'भोर का तारा', 'शारदीया' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में जगदीशचंद्र माथुर ने स्त्री शिक्षा के महत्व को दिखाया है । समाज के दकियानूसी विचारों पर प्रहार करते हुए लेखक ने नारी सम्मान को महत्व प्रदान किया है ।

रतन : बाबू जी, बाबू जी ! (धीमी आवाज में)

रामस्वरूप : (दरवाजे से बाहर झाँककर) अरे प्रेमा, वे आ भी गए । ... तुम उमा को समझा देना, थोड़ा-सा गा देगी । (मेहमानों से) हँ-हँ-हँ । आइए, आइए ! [बाबू गोपाल प्रसाद बैठते हैं ।] हँ-हँ !... मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई ?

गो. प्रसाद : (खँखारकर) नहीं । ताँगेवाला जानता था । रास्ता मिलता कैसे नहीं ?

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ ! (लड़के की तरफ मुखातिब होकर) और कहिए शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं ?

शंकर : जी, कॉलेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं । 'वीक एंड' में चला आया था ।

रामस्वरूप : तो आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल भर रहा होगा ?

शंकर : जी, यही कोई साल-दो साल ।

रामस्वरूप : साल, दो साल ?

शंकर : हँ-हँ-हँ !... जी एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ ।

गो. प्रसाद : (अपनी आवाज और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब, फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए ।

रामस्वरूप : (चौंककर) 'बिजनेस' ?- (समझकर) ओह !... अच्छा, अच्छा । लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए ।

गो. प्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ करते हैं !

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ ! तकल्लुफ किस बात का। यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए । (अंदर जाते हैं ।)

गो. प्रसाद : (अपने लड़के से) क्यों, क्या हुआ ?

शंकर : कुछ नहीं ।

गो. प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो ? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो । तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'-[इतने में बाबू रामस्वरूप चाय की 'ट्रे' लाकर मेज पर रख देते हैं ।]

गो. प्रसाद : आखिर आप माने नहीं !

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ ! आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी ?

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए और जरा चीनी भी ज्यादा डालिएगा ।

शंकर : (खँखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी ।

आपके घर की किसी परंपरा के बारे में घर के बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए । वह परंपरा उचित है या अनुचित, इसपर अपना मत शब्दांकित कीजिए ।

गो. प्रसाद : (चाय पीते हुए) सरकार जो चाहे सो कर ले पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए ।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या ?

गो. प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स ! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।) मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे ।

रामस्वरूप : (जोर से हँसते हुए) वाह-वाह ! खूब सोचा आपने ! वाकई आजकल खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है । हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल की तरफ बढ़ाते हैं ।) लीजिए ।

गो. प्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं ।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या खयाल है शंकर बाबू ?

शंकर : किस मामले में ?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए !

गो. प्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है और जायचा (जन्म पत्र) तो मिल ही गया होगा ।

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है । ठाकुर जी के चरणों में रख दिया । बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए। [शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं ।]

गो. प्रसाद : लड़कियों को अधिक पढ़ने की जरूरत नहीं है । सिलाई-पुराई कर लें बस ।

रामस्वरूप : हँ-हँ ! (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना... [उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है । उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है और नाक पर रखा हुआ सुनहरी रिमवाला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं ।]

गो. प्रसाद और शंकर : (एक साथ) चश्मा !!!

रामस्वरूप : (जरा सकपकाकर) जी, वह तो... वह... पिछले महीने में इसकी आँखें दुखने लग गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है ।

गो. प्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ ?

संभाषणीय

'दहेज एक अभिशाप' विषय पर चर्चा कीजिए ।

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न ।

गो. प्रसाद : हूँ । (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो बेटी ।

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे-वाजे के पास । (उमा बैठती है ।)

गो. प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं । चेहरे पर भी छवि है ।... हाँ, कुछ गाना-बजाना सीखा है ?

रामस्वरूप : जी हाँ सितार भी और बाजा भी । सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ । [उमा सितार पर मीरा का मशहूर भजन 'मेरे तो गिरिधर गोपाल' गाना शुरू कर देती है । उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है ।]

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ ? गाने को पूरा करो उमा ।

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, काफी है। आपकी लड़की अच्छा गाती है। (उमा सितार रखकर अंदर जाने को बढ़ती है ।)

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटी !

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो उमा ! (उमा बैठती है ।)

गो. प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है ?(उमा चुप)

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया । यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने बनाई है और वह उस दीवार पर भी ।

गो. प्रसाद : हूँ । यह तो बहुत अच्छा है । और सिलाई वगैरह ?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी । हँ-हँ-हँ !

गो. प्रसाद : ठीक ।... लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-बिनाम भी जीते थे ? [उमा चुप । रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं लेकिन उमा चुप है, उसी तरह गरदन झुकाए । गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं ।]

रामस्वरूप : जवाब दो, उमा । (गोपाल से) हँ-हँ, जरा शरमाती है। इनाम तो इसने-

गो. प्रसाद : (जरा रूखी आवाज में) जरा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं । जवाब दो न ।

उमा : (हल्की लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबू जी ! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता सिर्फ खरीददार को दिखला देता है । पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना-

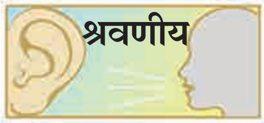

विवाह में गाए जाने वाले पारंपरिक मंगल गीत सुनिए तथा सुनाइए ।

रामस्वरूप : (चौंककर खड़े हो जाते हैं ।) उमा, उमा !

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए बाबू जी ।

गो. प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था ?

उमा : (तेज आवाज में) जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं ?

शंकर : बाबू जी, चलिए ।

गो. प्रसाद : क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो ? (रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ । मैंने बी.ए. पास किया है । कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की और न आपके पुत्र की तरह लड़कियों के होस्टल में ताक-झाँककर कायरता दिखाई है । मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों में पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे ।

रामस्वरूप : उमा, उमा !

गो. प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका । बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया । आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है । (दरवाजे की ओर बढ़ते हैं ।)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए ! लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं- याने बैकबोन, बैकबोन-[बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन । दोनों बाहर चले जाते हैं । उमा सहसा चुप हो जाती है ।]

('भोर का तारा' एकांकी संग्रह से)

— ० —

पठनीय

पाठ में आए अंग्रेजी शब्द पढ़िए और शब्दकोश की सहायता से उनका हिंदी में अनुवाद कीजिए ।

शब्द संसार

तख्त पुं.सं.(फा.) = लकड़ी की बनी हुई बड़ी चौकी

तश्तरी स्त्री.सं.(फा.) = छोटी थाली

खँखारना क्रि.(दे.) = खाँसना, गला साफ करना

तकल्लुफ पुं.सं.(अ.) = शिष्टाचार

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

रिश्ते
- रामस्वरूप–उमा — -----
- ----- — पति–पत्नी
- ----- — नौकर–मालिक
- शंकर–गोपाल प्रसाद — -----

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. व्यावसायिक शिक्षा के नाम
- [ ]
- [ ]

२. शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त वाद्यों के नाम
- [ ]
- [ ]

(३) गोपाल प्रसाद की दृष्टि में बहू ऐसी हो :
- [ ]
- [ ]
- [ ]
- [ ]

(४) कारण लिखिए :

१. बाप–बेटे चौंक उठे –

२. उमा को चश्मा लगा –

३. रामस्वरूप ने हारमोनियम उठाकर लाने को कहा –

४. उमा को गुस्सा आया –

(५) सूचनानुसार लिखिए :

१. कृदंत बनाइए :

पढ़ना		समझना	
सीना		चाहना	

२. शब्दयुग्म पूर्ण कीजिए :

पढ़े– ...., सभा– ....,

पेंटिंग– ...., सीधा– ....,

अभिव्यक्ति

सुनी–पढ़ी अंधविश्वास की किसी घटना में निहित आधारहीनता और अवैज्ञानिकता का विश्लेषण करके लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित कीजिए और उनके भेद दिए गए स्थान पर लिखिए :

वाक्य	अव्यय भेद
◆ गाय को घर के सामने खूँटे से बाँधा ।	---------------------
◆ वह उठा और घर चला गया ।	---------------------
◆ अरे ! गऊशाला यहाँ से दो किलोमीटर दूर है ।	---------------------
◆ वह भारी कदमों से आगे बढ़ने लगा ।	---------------------
◆ उन्होंने मुझे धीरे-धीरे हिलाना शुरू किया ।	---------------------
◆ मुझे लगा कि आज फिर कोई दुर्घटना होगी ।	---------------------
◆ वाह-वाह ! खूब सोचा आपने !	---------------------
◆ चाची, माँ के पास चली गई ।	---------------------

(२) पाठ में प्रयुक्त अव्यय छाँटिए और उनसे वाक्य बनाकर लिखिए :

◆ क्रियाविशेषण अव्यय
१. ---------- २. ---------- वाक्य = ----------------------------
----

◆ संबंधसूचक अव्यय
१. ---------- २. ---------- वाक्य = ----------------------------
----

◆ समुच्चयबोधक अव्यय
१. ---------- २. ---------- वाक्य = ----------------------------

◆ विस्मयादिबोधक अव्यय
१. ---------- २. ----------वाक्य = ----------------------------
----

(३) नीचे आकृति में दिए हुए अव्ययों के भेद पहचानकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अव्यय

काश !
बाद
बल्कि
यदि ...तो
वाह !
के अलावा
के लिए
क्योंकि

हाय
प्रायः
और
के पास
इसलिए
की तरफ
कारण
अच्छा
नहीं .... तो

उपयोजित लेखन

अपने परिसर में विद्यार्थियों के लिए 'योगसाधना शिविर' का आयोजन करने हेतु आयोजक के नाते विज्ञापन तैयार कीजिए ।

BPIAYX

१० ठेस

(पूरक पठन)

-फणीश्वरनाथ रेणु

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं । इसलिए खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को । क्या होगा, उसको बुलाकर ? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा; पगडंडी पर तौल-तौलकर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे । मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है ।

आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई । एक समय था, जब उसकी मड़ैया के पास बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं । उसे लोग पूछते ही नहीं थे,उसकी खुशामद भी करते थे । ''अरे, सिरचन भाई ! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में । एक दिन का समय निकालकर चलो । बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से-सिरचन से एक जोड़ा चिक बनाकर भेज दो ।''

मुझे याद है.. मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता, ''भोग क्या-क्या लगेगा ?''

माँ हँसकर कहतीं, ''जा-जा बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठाता कभी ।'' पड़ोसी गाँव के पंचानंद चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने -''तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम मामूली लोगों की घरवालियाँ बनाती हैं । तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाना सीखी हैं !''

इसलिए सिरचन को बुलाने के पहले मैं माँ से पूछ लेता ...। सिरचन को देखते ही माँ हुलसकर कहती, ''आओ सिरचन ! आज नेनू मथ रही थी तो तुम्हारी याद आई । घी की खखोरन के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसंद है न... ! और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए ।''

सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सँभालकर हँसता-''घी की सोंधी सुगंध सूँघकर ही आ रहा हूँ, काकी ! नहीं तो इस शादी-ब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है ?''

परिचय

जन्म : १९२१, पूर्णिया (बिहार)
मृत्यु : १९७७
परिचय : हिंदी कथाधारा का रुख बदलने वाले फणीश्वरनाथ रेणु जी को आजादी के बाद के प्रेमचंद की संज्ञा दी जाती है । आपकी कहानियों और उपन्यासों में आँचलिक जीवन की धुन, गंध, लय-ताल, सुर-सुंदरता, कुरूपता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है । आपकी भाषा-शैली में एक जादुई असर मिलता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मैला आँचल', 'परती परिकथा','जुलूस' (उपन्यास), 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी', 'अच्छे आदमी' (कथा संग्रह),'ऋण-जल-धनजल', 'नेपाली क्रांतिकथा' (रिपोर्ताज) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत आंचलिक कहानी बिहार के ग्रामीण जीवन पर आधारित है । इस कहानी के माध्यम से कथाकार ने ग्रामीण जीवन, सामाजिक संबंध, कारीगरी, कारीगरों के स्वाभिमान आदि को बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है ।

सिरचन जाति का कारीगर है । मैंने घंटों बैठकर उसके काम करने के ढंग को देखा है । एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता । फिर कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त ।... काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहुँअन साँप की तरह फुफकार उठता-''फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम ! सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं ।''

बिना मजदूरी के पेट भर भात पर काम करने वाला कारीगर ! दूध में कोई मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं किंतु बात में जरा भी झाला वह नहीं बरदाश्त कर सकता ।

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं । तली बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा । खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्म ! काम अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा-''आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है । थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा ।'' 'किसी दिन' माने कभी नहीं !

मोथी घास और पटरे की रंगीन शीतलपाटी, बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी तथा इसी तरह के बहुत-से काम हैं जिन्हें सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता । यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग । बेकाम का काम जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं । पेट भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना-धुराना कपड़ा देकर विदा करो । वह कुछ भी नहीं बोलेगा ।...

कुछ भी नहीं बोलेगा; ऐसी बात नहीं, सिरचन को बुलाने वाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारगर है ।... महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी-''ठहरो ! मैं माँ से जाकर कहती हूँ । इतनी बड़ी बात !''

''बड़ी बात ही है बिटिया ! बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है । नहीं तो दो-तीन पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खेसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला ? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी !'' सिरचन ने मुस्कराकर जवाब दिया था ।

इस बार मेरी सबसे छोटी बहन पहली बार ससुराल जा रही थी । मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को लिखकर चेतावनी दे दी है-''मानू के

लेखनीय

लोक कलाओं के नामों की सूची तैयार कीजिए ।

साथ मिठाई की पतीली न आए, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो ... !'' भाभी ने हँसकर कहा, ''बैरंग वापस !'' इसलिए, एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था माँ ने-''देखो सिरचन ! इस बार नई धोती दूँगी; असली मोहर छापवाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखने वाले देखते ही रह जाएँ।''

पान-जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियाँ और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बिनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नये फैशन की चीज बन रही है।

मँझली भाभी से नहीं रहा गया। परदे की आड़ से बोली, ''पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।''

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला, ''मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुरता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया। मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है... मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है !''

मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरी चाची ने फुस-फुसाकर कहा, ''किससे बात करती है बहू ? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी। देखती है न !''

दूसरे दिन चिक की पहली पाँति में सात तारे जगमगा उठे, सात रंग के। सतभैया तारा ! अपने काम में मगन सिरचन को खाने-पीने की सुध नहीं रहती। चिक में सुतली के फंदे डालकर उसने पास पड़े सूप पर निगाह डाली-चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। मैं दौड़कर माँ के पास गया। ''माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़ ?''

माँ रसोईघर के अंदर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली, ''अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती ?''

''बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी !'' सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप में एक किनारे पर पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौंहें तन गईं। मुट्ठी भर बुँदिया सूप में फेंककर चली गई।

सिरचन ने पानी पीकर कहा, ''मँझली बहुरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती हैं क्या ?'' बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर कहा- ''मुँह

पठनीय

'देश की आत्मा गाँवों में बसती है,' गांधीजी के इस विचार से संबंधित कोई लेख पढ़िए तथा इसपर स्वमत प्रस्तुत कीजिए।

लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही ।... किसी के नैहर-ससुराल की बात क्यों करेगा वह ?''

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है । माँ तमककर बाहर आई-''सिरचन, तुम काम करने आए हो, अपना काम करो । बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत ? जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो ।''

सिरचन का मुँह लाल हो गया । उसने कोई जवाब नहीं दिया । बाँस में टँगे हुए अधूरे चिक में फंदे डालने लगा ।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी । चुपके से पान का एक बीड़ा सिरचन को देती हुई इधर-उधर देखकर बोली ''सिरचन दादा, काम-काज का घर ! पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे । तुम किसी की बात पर कान मत दो ।''

सिरचन ने मुस्कराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया । चाची अपने कमरे से निकल रही थी । सिरचन को पान खाते देखकर अवाक हो गई । सिरचन ने चाची को अपनी ओर अचरज से घूरते देखकर कहा, ''छोटी चाची, जरा अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा खिलाना । बहुत दिन हुए ... ।''

चाची कई कारणों से जली-भुनी रहती थी सिरचन से । गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता । झनकती हुई बोली, ''तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे । घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो ?... चटोर कहीं के !'' मेरा कलेजा धड़क उठा... हो गया सत्यानाश !

बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए । मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा फिर अचानक उठकर पिछवाड़े पीक थूक आया । अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट-सँभालकर झोले में रखे । टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया ।

मानू कुछ नहीं बोली । चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही ।... सातों तारे मंद पड़ गए ।

माँ बोलीं, ''जाने दे बेटी ! जी छोटा मत कर मानू ! मेले से खरीदकर भेज दूँगी ।''

मैं सिरचन को मनाने गया । देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है । मुझे देखते ही बोला, ''बबुआ जी ! अब नहीं । कान पकड़ता हूँ, अब नहीं ।... मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा । कौन पहनेगा ?... ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ । बबुआ जी, मेरी घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता ? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है । इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ,

संभाषणीय

आपकी तथा परिवार के किसी बड़े सदस्य की दिनचर्या की तुलना कीजिए तथा समानता एवं अंतर बताइए ।

अब यह काम नहीं करूँगा ।... गाँव भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी । अब क्या ?'' मैं चुपचाप वापस लौट आया । समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है । वह नहीं आ सकता ।

बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छींट का झालर लगाने लगी-''यह भी बेजा नहीं दिखलाई पड़ता, क्यों मानू ?''

मानू कुछ नहीं बोली ।... बेचारी ! किंतु मैं चुप नहीं रह सका-''चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी !''

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था ।

स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा, मानू बड़े जतन से अधूरी चिक को मोड़कर लिए जा रही है अपने साथ । मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा हो आया । चाची के सुर-में-सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ-'कामचोर, चटोर !'

गाड़ी आई । सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बंद कर रहा था कि प्लेटफॉर्म पर दौड़ते हुए सिरचन पर नजर पड़ी-''बबुआ जी !'' उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा ।

''क्या है ?'' मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा । सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा-''दौड़ता आया हूँ !... दरवाजा खोलिए ! मानू दीदी कहाँ हैं ? एक बार देखूँ ।''

मैंने दरवाजा खोल दिया ।

''सिरचन दादा !'' मानू इतना ही बोल सकी ।

खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा, ''यह मेरी ओर से है । सब चीजें हैं दीदी ! शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी कुश की ।'' गाड़ी चल पड़ी ।

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी । सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर, दोनों हाथ जोड़ दिए ।

मानू फूट-फूटकर रो रही थी । मैं बंडल को खोलकर देखने लगा-ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फंदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था ।

('फणीश्वरनाथ रेणु की संपूर्ण कहानियाँ' से)

—— ० ——

श्रवणीय

महाराष्ट्र में चलाए जाने वाले लघु उद्योगों की जानकारी रेडियो/दूरदर्शन पर सुनिए और इसके मुख्य मुद्दों को लिखिए ।

शब्द संपदा

बेगार स्त्री.सं.(फा.) = बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया गया काम

मड़ैया स्त्री.सं.(दे.) = झोंपड़ी

चिक पुं.सं.(दे.) = बाँस की तीलियों का बना हुआ परदा

मोथी स्त्री.सं.(दे.) = एक प्रकार की घास

शीतलपाटी स्त्री.सं.(दे.) = चटाई

मूँज स्त्री.सं.(हिं.दे.) = एक प्रकार का तृण/घास

कलेवा पुं.सं.(हिं.दे.) = नाश्ता

मुहावरे

मुँह लाल होना = क्रोधित होना

ठेस लगना = दुखी होना, बुरा अनुभव होना

फूट-फूटकर रोना = जोर-जोर से रोना

मुँह लटकाना = निराश होना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

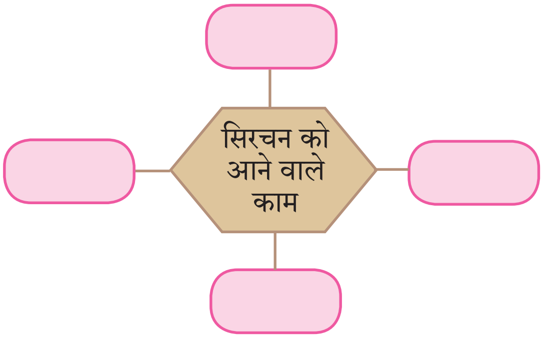

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. सिरचन का मेहनताना

२. मानू को उपहार में मिला

३. सिरचन को लोग कहते

(३) वाक्यों का उचित क्रम लगाकर लिखिए :

१. सातों तारे मंद पड़ गए ।

२. ये मेरी ओर से हैं । सब चीजें हैं दीदी ।

३. लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं ।

४. मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है ।

अभिव्यक्ति 'कला और कलाकार का सम्मान करना हमारा दायित्व है', इस कथन पर अपने विचारों को शब्दबद्ध कीजिए ।

भाषा बिंदु

(१) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों का काल परिवर्तन कीजिए :

- अली घर से बाहर चला जाता है । (सामान्य भूतकाल)

- आराम हराम हो जाता है । (पूर्ण वर्तमानकाल एवं पूर्व भविष्यकाल

- सरकार एक ही टैक्स लगाती है । (सामान्य भविष्यकाल)

- आप इतनी देर से नाप-तौल करते हैं । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

- वे बाजार से नई पुस्तक खरीदते हैं । (पूर्ण भूतकाल एवं अपूर्व भविष्यकाल)

- वे पुस्तक शांति से पढ़ते हैं । (अपूर्ण भूतकाल)

- सातों तारे मंद पड़ गए । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

- मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा । (अपूर्ण भूतकाल)
  ----

(२) नीचे दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था । ---- काल

सामान्य वर्तमानकाल	------------------------
सामान्य भविष्यकाल	------------------------
अपूर्ण भविष्यकाल	------------------------
पूर्ण वर्तमानकाल	------------------------
सामान्य भूतकाल	------------------------
अपूर्ण वर्तमानकाल	------------------------
पूर्ण भूतकाल	------------------------
पूर्ण भविष्यकाल	------------------------

उपयोजित लेखन

'पुस्तक प्रदर्शनी में एक घंटा' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए ।

C1HJFH

११. कृषक गान

– दिनेश भारद्‌वाज

हाथ में संतोष की तलवार ले जो उड़ रहा है,
जगत में मधुमास, उसपर सदा पतझर रहा है,
दीनता अभिमान जिसका, आज उसपर मान कर लूँ ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।

चूसकर श्रम रक्त जिसका, जगत में मधुरस बनाया,
एक-सी जिसको बनाई, सृजक ने भी धूप-छाया,
मनुजता के ध्वज तले, आह्‌वान उसका आज कर लूँ ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।

विश्व का पालक बन जो, अमर उसको कर रहा है,
किंतु अपने पालितों के, पद दलित हो मर रहा है,
आज उससे कर मिला, नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।

क्षीण निज बलहीन तन को, पत्तियों से पालता जो,
ऊसरों को खून से निज, उर्वरा कर डालता जो,
छोड़ सारे सुर-असुर, मैं आज उसका ध्यान कर लूँ ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।

यंत्रवत जीवित बना है, माँगते अधिकार सारे,
रो रही पीड़ित मनुजता, आज अपनी जीत हारे,
जोड़कर कण-कण उसी के, नीड़ का निर्माण कर लूँ ।
उस कृषक का गान कर लूँ ।।

(‘गीतों का अवतार’ गीत संग्रह से)

— ० —

परिचय

जन्म : १९४३, मुरैना (म.प्र.)
परिचय : दिनेश भारद्‌वाज जी की रचनाएँ जमीन से जुड़ी रहती हैं । आपकी रचनाओं में अपने देश की मिट्‌टी की सुगंध आती है । आपकी कहानियाँ, कविताएँ, पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाती रहती हैं ।
कृतियाँ : ‘जन्म और जिंदगी’ ‘तृष्णा से तृप्ति तक’ (कविता संग्रह), ‘एकात्म’ (दोहा संग्रह) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गीत कृषक के जीवन पर आधारित है । अन्नदाता कृषक की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कवि उसका महत्त्व और सम्मान पुनः स्थापित करना चाहता है ।

शब्द संसार

मधुमास पुं. सं.(सं.) = वसंत ऋतु
सृजक पुं.सं.(सं.) = रचना करने वाला, सर्जक
मनुजता स्त्री. सं.(सं.) = मनुष्यता
पालित वि.(सं.) = पाला हुआ, आश्रित
ऊसर वि.(सं.) = बंजर, अनुपजाऊ
उर्वरा स्त्री. सं.(सं.) = उपजाऊ भूमि
नीड़ पुं. सं.(सं.) = घोंसला

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

कवि की चाह

(२) कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

१. कृषक इन स्थितियों में अविचल रहता है

२. कविता में प्रयुक्त ऋतुओं के नाम

(३) वाक्य पूर्ण कीजिए :

१. कृषक कमजोर शरीर को ------
२. कृषक बंजर जमीन को ------

(४) निम्नलिखित पंक्तियों में कवि के मन में कृषक के प्रति जागृत होने वाले भाव लिखिए :

	पंक्ति	भाव
१.	आज उसपर मान कर लूँ	
२.	आह्‌वान उसका आज कर लूँ	
३.	नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ	
४.	आज उसका ध्यान कर लूँ।	

(५) कविता में आए इन शब्दों के लिए प्रयुक्त शब्द हैं :

१. निर्माता – ______
२. शरीर – ______
३. राक्षस – ______
४. मानव – ______

(६) कविता की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(७) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

रचनाकार कवि का नाम :
रचना का प्रकार :
पसंदीदा पंक्ति :
पसंदीदा होने का कारण :
रचना से प्राप्त प्रेरणा :

C26FH5

१. बरषहिं जलद

– *गोस्वामी तुलसीदास*

चौपाई

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ।।
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध विद्‍या पाएँ ।।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे । खल के बचन संत सह जैसे ।।
छुद्र नदी भरि चली तोराई । जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।।
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहिं माया लपटानी ।।
समिटि-समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सद्‍गुन सज्जन पहिं आवा ।।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होई अचल जिमि जिव हरि पाई ।।

दोहा

हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बिबाद तें, लुप्त होहिं सदग्रंथ ।।

चौपाई

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।।
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ।।
अर्क-जवास पात बिनु भयउ । जस सुराज खल उद्‍यम गयऊ ।।
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी ।।
ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ।।
निसि तम घन खद्‍योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ।।
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना ।।
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं ।।
विविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा ।।
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना ।।

परिचय

जन्म : १५११, बाँदा (उ.प्र.)
मृत्यु : १६२३, वाराणसी (उ. प्र.)
परिचय : गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी भाषा में अनेक कालजयी ग्रंथ लिखे हैं । आप प्रसिद्‍ध संत, कवि, विद्‍वान और चिंतक थे।

गोस्वामी जी संस्कृत के विद्‍वान थे । आपने जनभाषा अवधी में रचनाएँ लिखीं । आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व जब प्रकाशन, दूरदर्शन, रेडियो जैसी सुविधाएँ नहीं थीं, ऐसे दौर में भी आपका ग्रंथ 'रामचरितमानस' जन-जन को कंठस्थ था । आपके द्‍वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' को विश्व के लोकप्रिय प्रथम सौ महाकाव्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'रामचरितमानस' (महाकाव्य), 'कवितावली', 'विनय पत्रिका', 'गीतावली', 'दोहावली', 'हनुमान बाहुक', 'बरवै रामायण', 'जानकी मंगल' आदि।

दोहा

कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ।।
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसइ-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग ।।

('रामचरितमानस के किष्किंधा कांड' से)

— ० —

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' महाकाव्य के किष्किंधा कांड से लिया गया है । यह पद्यांश चौपाई एवं दोहा छंद में है । यहाँ गोस्वामी जी ने वर्षा ऋतु में होने वाले परिवर्तनों का सुंदर वर्णन किया है । उन्होंने वर्षा के साथ-ही-साथ समाज की स्थिति, विविध गुणों-दुर्गुणों को भी दर्शाया है ।

उपरोक्त प्रसंग सीताहरण के बाद का है। श्री राम-लक्ष्मण, सीता जी की खोज में भटक रहे हैं । सीता जी के बिना श्रीराम व्याकुल हैं। रामचंद्र जी कहते हैं, ''आसमान में बादल घोर गर्जना कर रहे हैं। पत्नी सीता के न होने से मेरा मन डर रहा है। आकाश में बिजली ऐसे चमक रही है जैसे दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थिर नहीं रहती... ।''

शब्द संसार

घोरा वि.(हिं.अवधी) = भयंकर
डरपत क्रि.(हिं.अवधी) = डरना
खल वि.(सं.) = दुष्ट
जथा क्रि.वि. (हिं.अवधी) = यथा, जैसे
थिर वि. (हिं.अवधी) = स्थिर
नियराई क्रि. (हिं.अवधी) = नजदीक आना
नवहिं क्रि.(हिं.अवधी) = झुकना
बुध पुं.(सं.) = विद्‌वान
तोराई क्रि. (हिं.अवधी) = तोड़कर
ढाबर वि. (हिं.अवधी) = मटमैला
लपटानी क्रि. (हिं.अवधी) = लिपटना
जिमि क्रि.वि.(हिं.वि.) = जैसे
बटु पुं.सं.(सं.) = बालक
विटप पुं.सं.(सं.) = पेड़, वृक्ष
अर्क पुं.सं.(सं.) = मदार (मंदार) का वृक्ष
उद्‌यम पुं.सं.(सं.) = उद्‌योग
कतहुँ-अव्यय.(हिं.अवधी) = कहीं
सोह क्रि.(हिं.अवधी) = सुशोभित होना
दंभिन्ह वि.(हिं.अवधी) = घमंडी
निरावहिं क्रि.(हिं.अवधी) = निराना (खेती की प्रक्रिया)
तजहिं क्रि. (हिं.अवधी) = त्यागना
मद पुं.सं.(सं.) = घमंड
चक्रबाक पुं.सं.(हिं.अवधी) = चक्रवाक पक्षी
भ्राजा क्रि.(सं.) = शोभायमान होना
मारुत पुं.सं.(सं.) = हवा
नसाहिं क्रि.(हिं.अवधी) = नष्ट होना
निबिड़ वि.(हिं.अवधी) = घोर, घना
बिनसइ क्रि.(हिं.अवधी) = नष्ट होना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

पद्यांश में आए प्राकृतिक जल स्रोत

(२) निम्न अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए :

१. संतों की सहनशीलता -------

२. कपूत के कारण कुल की हानि -------

(३) तालिका पूर्ण कीजिए :

इन्हें	यह कहा है
(१) ------	बटु समुदाय
(२) सज्जनों के सद्‌गुण	------

(४) जोड़ियाँ मिलाइए :

	'अ' समूह	उत्तर		'ब' समूह
१.	दमकती बिजली		अ	दुष्ट की मित्रता
२.	नव पल्लव से भरा वृक्ष		ब	साधक के मन का विवेक
३.	उपकारी की संपत्ति		क	ससि संपन्न पृथ्वी
४.	भूमि की		ड	माया से लिपटा जीव

(५) इनके लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द :

बादल

पेड़

ग्रह

पौधा

उपग्रह

पत्ते

(६) प्रस्तुत पद्यांश से अपनी पसंद से की किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

कहानी लेखन :

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' इस सुवचन पर आधारित कहानी लेखन कीजिए ।

C2FBIS

२.दो लघुकथाएँ

–नरेंद्र छाबड़ा

(पूरक पठन)

कंगाल

इस वर्ष बड़ी भीषण गरमी पड़ रही थी । दिन तो अंगारे से तपे रहते ही थे, रातों में भी लू और उमस से चैन नहीं मिलता था । सोचा इस लिजलिजे और घुटनभरे मौसम से राहत पाने के लिए कुछ दिन पहाड़ों पर बिता आएँ ।

अगले सप्ताह ही पर्वतीय स्थल की यात्रा पर निकल पड़े । दो-तीन दिनों में ही मन में सुकून-सा महसूस होने लगा था । वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, हरे-भरे पहाड़ गर्व से सीना ताने खड़े, दीर्घता सिद्‌ध करते वृक्ष, पहाड़ों की नीरवता में हल्का-सा शोर कर अपना अस्तित्व सिद्‌ध करते झरने, मन बदलाव के लिए पर्याप्त थे ।

उस दिन शाम के वक्त झील किनारे टहल रहे थे। एक भुट्‌टेवाला आया और बोला-''साब, भुट्‌टा लेंगे। गरम-गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा । सहज ही पूछ लिया-''कितने का है ?''

''पाँच रुपये का ।''

''क्या ? पाँच रुपये में एक भुट्‌टा । हमारे शहर में तो दो रुपये में एक मिलता है, तुम तीन ले लो ।''

''नहीं साब, ''पाँच से कम में तो नहीं मिलेगा ...''

''तो रहने दो...'' हम आगे बढ़ गए ।

एकाएक पैर ठिठक गए और मन में विचार उठा कि हमारे जैसे लोग पहाड़ों पर घूमने का शौक रखते हैं हजारों रुपये खर्च करते हैं, अच्छे होटलों में रुकते हैं जो बड़ी दूकानों में बिना दाम पूछे खर्च करते हैं पर गरीब से दो रुपये के लिए झिक-झिक करते हैं, कितने कंगाल हैं हम ! उल्टे कदम लौटा और बीस रुपये में चार भुट्‌टे खरीदकर चल पड़ा अपनी राह । मन अब सुकून अनुभव कर रहा था ।

परिचय

परिचय : नरेंद्र छाबड़ा जाने-माने कथाकार हैं । कहानियों के साथ-साथ आपने बहुत-सी लघुकथाएँ भी लिखी हैं । आपकी लघुकथाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से स्थान पाती रही हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'मेरी चुनिंदा लघुकथाएँ' आदि ।

गद्‌य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में लेखक ने यह दर्शाया है कि जब हम बड़ी दूकानों, मॉल, होटलों में जाते हैं तो कोई मोल-भाव नहीं करते, चुपचाप पैसे दे, सामान ले, चले आते हैं । इसके उलट जब हम रेहड़ीवालों, फेरीवालों से सामान खरीदते हैं तो मोल-भाव करते हैं, हमें इस सोच से बचना चाहिए ।

दूसरी लघुकथा में लेखक ने रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया है । यहाँ लेखक ने दर्शाया है कि सत्य का पालन ही लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक होता है ।

सही उत्तर

अब तक वह कितने ही स्थानों पर नौकरी के लिए आवेदन कर चुका था । साक्षात्कार दे चुका था । उसके प्रमाणपत्रों की फाइल भी उसे सफलता दिलाने में नाकामयाब रही थी । हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला होने के कारण, योग्यता के बावजूद उसका चयन नहीं हो पाता था । हर ओर से अब वह निराश हो चुका था । भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के अलावा उसके वश में और कुछ तो था नहीं ।

आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना है । अब तक देशप्रेम, नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी पर अपने तर्कपूर्ण विचार बड़े विश्वास से रखता आया था लेकिन इसके बावजूद उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी ।

साक्षात्कार के लिए उपस्थित प्रतिनिधि मंडल में से एक अधिकारी ने पूछा-''भ्रष्टाचार के बारे में आपकी क्या राय है ?''

''भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है । इसने सारी सामाजिक व्यवस्था को चिंताजनक स्थिति में पहुँचा दिया है । सच कहा जाए तो यह देश के लिए कलंक है... ।'' अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-सी मुसकान और उत्सुकता छा गई । उसके तर्क में उन्हें रुचि महसूस होने लगी । दूसरे अधिकारी ने प्रश्न किया-''रिश्वत को आप क्या मानते हैं ?''

''यह भ्रष्टाचार की बहन है जैसे विशेष अवसरों पर हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं । इसका स्वरूप भी कुछ-कुछ वैसा ही है लेकिन उपहार देकर हम केवल खुशियों या कर्तव्यों का आदान-प्रदान करते हैं । इससे अधिक कुछ नहीं जबकि रिश्वत देने से रुके हुए कार्य, दबी हुई फाइलें, टलती हुई पदोन्नति, रोकी गई नौकरी आदि में इसके कारण सफलता हासिल की जा सकती है । तब भी यह समाज के माथे पर कलंक है, इसका समर्थन कतई नहीं किया जा सकता, ऐसी मेरी धारणा है ।'' कहकर वह तेजी से बाहर निकल आया । जानता था कि यहाँ भी चयन नहीं होगा ।

पर भीतर बैठे अधिकारियों ने... गंभीरता से विचार-विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया । आज वह समझा कि 'सत्य कुछ समय के लिए निराश हो सकता है, परास्त नहीं ।'

('मेरी चुनिंदा लघुकथाएँ' से)

— ० —

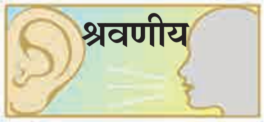

बालक/बालिकाओं से संबंधित कोई ऐतिहासिक कहानी सुनकर उसका रूपांतरण संवाद में करके कक्षा में सुनाइए ।

पहाड़ों पर रहने वाले लोगों की जीवन शैली की जानकारी प्राप्त करके अपनी जीवन शैली से उसकी तुलना करते हुए लिखिए ।

अपनी पसंद की कोई सामाजिक ई-बुक पढ़िए ।

'शहर और महानगर का यांत्रिक जीवन' विषय पर बातचीत कीजिए ।

शब्द संसार

भीषण वि.(सं.) = भयानक
लिजलिजे वि.पुं.(अ.) = सीलनभरा
नीरवता स्त्री.सं.(सं.) = एकांत, एकदम शांत
कंगाल वि.(हिं.) = गरीब, निर्धन
साक्षात्कार पुं.सं.(सं.) = मुलाकात
रिश्वत स्त्री.सं.(अ.) = घूस

मुहावरे

सीना तानकर खड़े रहना = निर्भय होकर खड़े रहना
बोलबाला होना = प्रभाव होना
दाद देना = प्रशंसा करना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

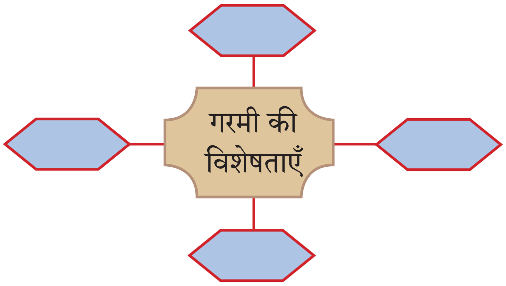

(२) उत्तर लिखिए :

(३) कारण लिखिए :

१. युवक को पहले नौकरी न मिल सकी ....
२. आखिरकार अधिकारियों द्‌वारा युवक का चयन कर लिया गया ....

(४) कृति पूर्ण कीजिए :

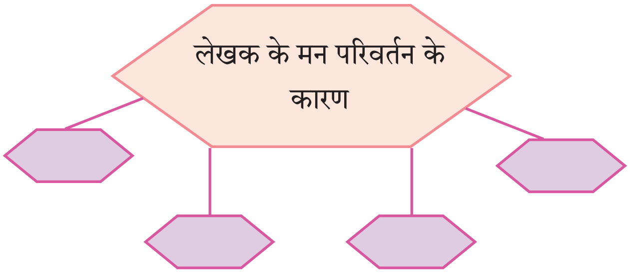

(५) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

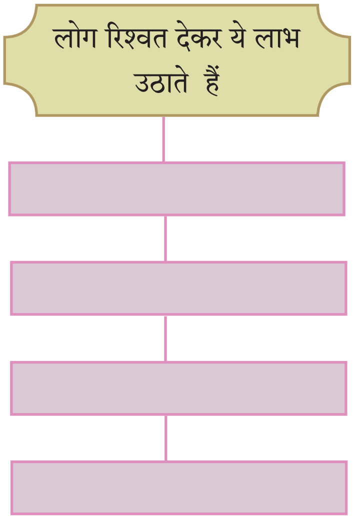

अभिव्यक्ति 'भ्रष्टाचार एक कलंक' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) अर्थ के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद लिखिए :

१. क्या पैसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनना उचित है ?

२. इस वर्ष भीषण गरमी पड़ रही थी ।

३. आप उन गहनों की चिंता न करें ।

४. सुनील, जरा ड्राइवर को बुलाओ ।

५. अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ?

६. सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया ।

७. हाय ! कितनी निर्दयी हूँ मैं ।

८. काकी उठो, भोजन कर लो ।

९. वाह ! कैसी सुगंध है ।

१०. तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी ।

(२) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों में अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए :

१. थोड़ी बातें हुई । (निषेधार्थक वाक्य)

२. मानू इतना ही बोल सकी । (प्रश्नार्थक वाक्य)

३. मैं आज रात का खाना नहीं खाऊँगा । (विधानार्थक वाक्य)

४. गाय ने दूध देना बंद कर दिया । (विस्मयार्थक वाक्य)

५. तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए । (आज्ञार्थक वाक्य)

(३) प्रथम इकाई के पाठों में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के पाँच वाक्य ढूँढ़कर लिखिए ।

(४) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद पहचानकर कोष्ठक में लिखिए :

१. अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई । [-------]

२. हर ओर से अब वह निराश हो गया था । [-------]

३. उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिलते ही उसे चलाऊँ । [-------]

४. वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली । [-------]

५. मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं । [-------]

६. अभी समाज में यह चल रहा है क्योंकि लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं [-------]

(५) रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य पाठों से ढूँढ़कर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'जल है तो कल है' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

C2P7KF

३. श्रम साधना

– श्रीकृष्णदास जाजू

गुलामी की प्रथा संसार भर में हजारों वर्षों तक चलती रही । उस लंबे अरसे में विद्‌वान तत्त्ववेत्ता और साधु-संतों के रहते हुए भी वह चलती रही । गुलाम लोग खुद भी मानते थे कि वह प्रथा उनके हित में है फिर मनुष्य का विवेक जागृत हुआ । अपने जैसे ही हाड़-माँस और दुख की भावना रखने वालों को एक दूसरा बलवान मनुष्य गुलामी में जकड़ रखे, क्या यह बात न्यायोचित है, यह प्रश्न सामने आया । इसको हल करने के लिए आपस में युद्‌ध भी हुए । अंत में गुलामी की प्रथा मिटकर रही । इसी प्रकार राजाओं की संस्था की बात है । जगत भर में हजारों वर्षों तक व्यक्तियों का, बादशाहों का राज्य चला पर अंत में 'क्या किसी एक व्यक्ति को हजारों आदमियों को अपनी हुकूमत में रखने का अधिकार है,' यह प्रश्न खड़ा हुआ । उसे हल करने के लिए अनेक घनघोर युद्‌ध हुए और सदियों तक कहीं-न-कहीं झगड़ा चलता रहा । असंख्य लोगों को यातनाएँ सहन करनी पड़ीं । अंत में राजप्रथा मिटकर रही और राजसत्ता प्रजा के हाथ में आई । हजारों वर्षों तक चलती हुई मान्यताएँ छोड़ देनी पड़ीं । ऐसी ही कुछ बातें संपत्ति के स्वामित्व के बारे में भी हैं ।

संपत्ति के स्वामित्व और उसके अधिकार की बात जानने के लिए यह समझना जरूरी है कि संपत्ति किसे कहते हैं और वह बनती कैसे है ?

आम तौर से माना जाता है कि रुपया, नोट या सोना-चाँदी का सिक्का ही संपत्ति है, लेकिन यह ख्याल गलत है क्योंकि ये तो संपत्ति के माप-तौल के साधन मात्र हैं । संपत्ति तो वे ही चीजें हो सकती हैं जो किसी-न-किसी रूप में मनुष्य के उपयोग में आती हैं । उनमें से कुछ ऐसी हैं जिनके बिना मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता एवं कुछ, सुख-सुविधा और आराम के लिए होती हैं । अन्न, वस्त्र और मकान मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं, जिनके बिना उसकी गुजर-बसर नहीं हो सकती । इनके अलावा दूसरी अनेक चीजें हैं जिनके बिना मनुष्य रह सकता है ।

प्रश्न उठता है कि संपत्तिरूपी ये सब चीजें बनती कैसे हैं ? सृष्टि में जो नानाविध द्रव्य तथा प्राकृतिक साधन हैं, उनको लेकर मनुष्य शरीर श्रम करता है, तब यह काम की चीजें बनती हैं । अतः संपत्ति के मुख्य साधन दो हैं : सृष्टि के द्रव्य और मनुष्य का शरीर श्रम । यंत्र से कुछ चीजें बनती दिखती हैं पर वे यंत्र भी शरीर श्रम से बनते हैं और उनको चलाने में भी

परिचय

जन्म : १८८२, अकासर (राजस्थान)
मृत्यु : १९९५, जयपुर (राजस्थान)
परिचय : श्रीकृष्णदास जी १९२० में महात्मा गांधीजी के संपर्क में आए और देशसेवा के कार्य में जुट गए । आपको लोग सम्मान स्वरूप 'तपोधन' कहते थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'स्वराज्य प्राप्ति में,' 'सुधारक मीराबाई', 'जीवन का तात्विक अधिष्ठान' आदि । इसके अतिरिक्त अनेक पुस्तकों के संपादन में आपका सराहनीय योगदान रहा है ।

गद्‌य संबंधी

यह पाठ एक वैचारिक निबंध है । इस निबंध में लेखक ने मानवीय जीवन, संपत्ति के स्वामित्व, मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ, शारीरिक एवं बौद्‌धिक श्रम आदि का विशद विवेचन किया है । लेखक ने यहाँ श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए आर्थिक-सामाजिक समानता पर विशेष बल दिया है ।

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शरीर श्रम की आवश्यकता होती है । केवल बौद्धिक श्रम से कोई उपयोग की चीज नहीं बन सकती अर्थात बिना शरीर श्रम के संपत्ति का निर्माण नहीं हो सकता ।

संपत्ति के स्वामित्व में शरीर श्रम करने वालों का स्थान क्या है ? जो प्रत्यक्ष शरीर श्रम के काम करते हैं उन्हें तो गरीबी या कष्ट में ही अपना जीवन बिताना पड़ता है और उन्हीं के द्‌वारा उत्पादित संपत्ति दूसरे थोड़े से हाथों में ही इकट्‌ठी होती रहती है । श्रमजीवियों की बनाई हुई चीजें व्यापारियों या दूसरों के हाथों में जाकर उनके लेन-देन से कुछ लोग मालदार बन जाते हैं । वर्ष भर मेहनत कर किसान अन्न पैदा करता है लेकिन बहुत दफा तो उसकी खुद की आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं होतीं पर वही अनाज व्यापारियों के पास जाकर उनको धनवान बनाता है। संपत्ति बनाते हैं मजदूर और धन इकट्‌ठा होता है उनके पास जो केवल व्यवस्था करते हैं, मजदूरी नहीं करते ।

जीवन निर्वाह या धन कमाने के लिए अनेक व्यवसाय चल रहे हैं । इनके मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं । कुछ व्यवसाय ऐसे हैं, जिनमें शरीर श्रम आवश्यक है और कुछ ऐसे हैं जो बुद्‌धि के बल पर चलाए जाते हैं । पहले प्रकार के व्यवसाय को हम श्रमजीवियों के व्यवसाय कहें और दूसरों को बुद्‌धिजीवियों के । राज-काज चलाने वाले मंत्री आदि तथा राज के कर्मचारी ऊँचे-ऊँचे पद से लेकर नीचे के क्लर्क तक, न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, व्यापारी आदि ऐसे हैं जो अपना भरण-पोषण बौद्‌धिक काम से करते हैं । शरीर श्रम से अपना निर्वाह करने वाले हैं- किसान, मजदूर, बढ़ई, राज, लुहार आदि । समाज के व्यवहार के लिए इन बुद्‌धिजीवियों और श्रमजीवियों, दोनों प्रकार के लोगों की जरूरत है पर सामाजिक दृष्टि से इन दोनों के व्यवसाय के मूल्यों में बहुत फर्क है ।

बुद्‌धिजीवियों का जीवन श्रमजीवियों पर आधारित है । ऐसा होते हुए भी दुर्भाग्य यह है कि श्रमजीवियों की मजदूरी एवं आमदनी कम है, समाज में उनकी प्रतिष्ठा नहीं और उनको अपना जीवन प्रायः कष्ट में ही बिताना पड़ता है ।

व्यापारी और उद्‌योगपतियों के लिए अर्थशास्त्र ने यह नियम बताया है कि खरीद सस्ती-से-सस्ती हो और बिक्री महँगी-से-महँगी । मुनाफे की कोई मर्यादा नहीं । जो कारखाना मजदूरों के शरीर श्रम के बिना चल ही नहीं सकता, उसके मजदूर को हजार-पाँच सौ मासिक से अधिक भले ही न मिले, पर व्यवस्थापकों और पूँजी लगाने वालों को हजारों-लाखों का मिलना गलत नहीं माना जाता ।

पठनीय

महात्मा गांधी के श्रमप्रतिष्ठा और अहिंसा संबंधी विचार पढ़कर चर्चा कीजिए ।

मनुष्य समाज में रहने से अर्थात समाज की कृपा से ही व्यवहार चलाने लायक बनता है । बालक प्राथमिक शाला से लेकर देश-विदेश के ऊँचे-से-ऊँचे महाविद्‌यालयों में सीखकर जो योग्यता प्राप्त करता है, वे शिक्षालय या तो सरकार द्‌वारा चलाए जाते हैं, जिनका खर्च आम जनता से टैक्स के रूप में वसूल किए हुए पैसे से चलता है या दानी लोगों की कृपा से । जो कुछ पढ़ने की फीस दी जाती है, वह तो खर्च के हिसाब से नगण्य है । उसको समाज का अधिक कृतज्ञ रहना चाहिए कि उस पैसे के बल पर वह विद्‌या पढ़कर योग्यता प्राप्त कर सका । इस सारी शिक्षा में जो कुछ ज्ञान मिलता है, वह भी हजारों वर्षों तक अनेक तपस्वियों ने मेहनत करके जो कण-कण संग्रहीत कर रखा है, उसी के बल पर मिलता है । व्यापारी और उद्‌योगपति भी व्यापार की कला विद्‌यालयों से, अपने साथियों से एवं समाज से प्राप्त करते हैं ।

जब अपनी योग्यता प्राप्त करने में हमारा खुद का हिस्सा अल्पतम है और समाज की कृपा का अंश अत्यधिक तो हमें जो योग्यता प्राप्त हुई है उसका उपयोग समाज को अधिक-से-अधिक देना और उसके बदले में समाज से कम-से-कम लेना, यही न्याय तथा हमारा कर्तव्य माना जा सकता है । चल रहा है कुछ उल्टा ही । व्यक्ति समाज को कम-से-कम देने की इच्छा रखता है, समाज से अधिक-से-अधिक लेने का प्रयत्न करता है, कुछ भी न देना पड़े तो उसे रंज नहीं होता ।

यह गंभीर बुनियादी सवाल है कि क्या बुद्‌धि का उपयोग विषम व्यवस्था को कायम रखकर पैसे कमाने के लिए करना उचित है ? यह तो साफ दीखता है कि आर्थिक विषमता का एक मुख्य कारण बुद्‌धि का ऐसा उपयोग ही है । शोषण भी प्रायः उसी से होता है । समाज में जो आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ चल रही हैं और जिससे शोषण, अशांति होती है, उसे मिटाने के लिए जगत में अनेक योजनाएँ अब तक सामने आईं और इनमें कुछ पर अमल भी हो रहा है । अहिंसा द्‌वारा यह जटिल प्रश्न हल करना हो तो गांधीजी ने इस आशय का सूत्र बताया, ''पेट भरने के लिए हाथ-पैर और ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान देने के लिए बुद्‌धि । ऐसी व्यवस्था हो कि हर एक को चार घंटे शरीर श्रम करना पड़े और चार घंटे बौद्‌धिक काम करने का मौका मिले और चार घंटों के शरीर श्रम से इतना मिल जाए कि उसका निर्वाह चल सके ।''

अभी समाज में यह चल रहा है कि बहुत से लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं और थोड़े बौद्‌धिक श्रम से । जिनके पास संपत्ति अधिक है, वे आराम में रहते हैं । अनेक लोगों में श्रम करने की आदत भी नहीं है । इस दशा में उक्त नियम का अमल होना दूर की बात है फिर भी

श्रवणीय

आर्थिक विषमता को दूर करने वाले उपायों के बारे में सुनकर कक्षा में सुनाइए ।

उसके पीछे जो तथ्य है, वह हमें स्वीकार करना चाहिए भले ही हमारी दुर्बलता के कारण हम उसे ठीक तरह से न निभा सकें क्योंकि आजीविका की साधन-सामग्री किसी-न-किसी के श्रम बिना हो ही नहीं सकती । इसलिए बिना शरीर श्रम किए उस सामग्री का उपयोग करने का न्यायोचित अधिकार हमें नहीं मिलता । अगर पैसे के बल पर हम सामग्री खरीदते हैं तो उस पैसे की जड़ भी अंत में श्रम ही है ।

धनिक लोग अपनी ज्यादा संपत्ति का उपयोग समाज के हित में ट्रस्टी के तौर पर करें । संपत्ति दान यज्ञ और भूदान यज्ञ का भी आखिर आशय क्या है ? अपने पास आवश्यकता से जो कुछ अधिक है, उसपर हम अपना अधिकार न समझकर उसका उपयोग दूसरों के लिए करें ।

यह भी बहस चलती है कि धनिकों के दान से सामाजिक उपयोग के अनेक बड़े-बड़े कार्य होते हैं जैसे कि अस्पताल, विद्‌यालय आदि । अगर व्यक्तियों के पास संपत्ति इकट्‌ठी न हो तो समाज को ये लाभ कैसे मिलेंगे ?

वास्तव में जब संपत्ति थोड़े-से हाथों में बँधी न रहकर समाज में फैली रहेगी तो सहकार पद्‌धति से बड़े पैमाने पर ऐसे काम आसानी से चलने लगेंगे और उनका लाभ लेने वाले, याचक या दीन की तरह नहीं, सम्मानपूर्वक लाभ उठाएँगे ।

अर्थशास्त्री कहते हैं कि उत्पादन की प्रेरणा के लिए व्यक्ति को स्वार्थ के लिए अवसर देने होंगे वरना देश में उत्पादन और संपत्ति नहीं बढ़ सकेगी, बचत भी नहीं होगी । अनुभव बताता है कि पूँजी, गरीबी या बेकारी की समस्या हल नहीं कर सकी है । नैतिक दृष्टि से भी स्वार्थवृत्ति का पोषण करना योग्य नहीं है । बहुत करके स्वार्थ का अर्थ होता है परार्थ की हानि । उसी में से स्पर्धा बढ़ती है, जिसके फलस्वरूप कुछ थोड़े से लोग ही लाभ उठा सकते हैं, बहुसंख्यकों को तो हानि ही पहुँचती है । मानवोचित सहयोग की जगह जंगल का कानून या मत्स्य न्याय चलता है । आखिर यह देखना है कि समाज का कल्याण किस वृत्ति से होगा ? अगर समाज में स्वार्थ वृत्ति के लोग अधिक हों, तो क्या कल्याण की आशा रखी जा सकती है ? समाज तो परोपकार वृत्ति के बल पर ही ऊँचा उठ सकता है । संपत्ति बढ़ाने के लिए स्वार्थ का आधार दोषपूर्ण है ।

इस संबंध में कुछ भाई अमेरिका का उदाहरण पेश करते हैं । कहते हैं कि जिनके पास संपत्ति इकट्‌ठी हुई है, उनपर कर लगाकर कल्याणकारी राज्य की स्थापना की जाए । उसी आधार पर भारत को कल्याणकारी (वेल्फेयर) राज्य बनाने की बात चली है । कल्याणकारी राज्य का अर्थ यह समझा जाता है कि सब तरह के दुर्बलों को राज्यसत्ता द्‌वारा मदद मिले

संभाषणीय

'वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेल-कूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं,' विषय पर चर्चा करते हुए अपना मत प्रस्तुत कीजिए ।

अर्थात बड़े पैमाने पर कर वसूल करके उससे गरीबों को सहारा दिया जाए। भारत जैसे देश में क्या इस बात का बन पाना संभव है ? प्राथमिक आवश्यकताओं के बारे में मनुष्य अपने पैरों पर खड़े रहने लायक हुए बिना स्वतंत्र नहीं रह सकता, किसी-न-किसी प्रकार उसे पराधीन रहना होगा।

हमारी सामाजिक विचारधारा में एक बड़ा भारी दोष है । हम शरीर श्रम करना नहीं चाहते वरन उसे हीन दृष्टि से देखते हैं और जिनको शरीर श्रम करना पड़ता है, उन्हें समाज में हीन दर्जे का मानते हैं । अमीर या गरीब, कोई भी श्रम करना नहीं चाहता । धनिक अपने पैसे के बल से नौकरों द्‌वारा अपना काम चला लेता है । गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है । हमें यह वृत्ति बदलनी चाहिए । शरीर श्रम की केवल प्रतिष्ठा स्थापित कर संतोष नहीं मानना है । उसके लिए हमारे दिल में प्रीति होनी चाहिए । आज श्रमिक भी कर्तव्यपरायण नहीं रहा है । श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना उसी के हाथ है । जिस श्रम में समाज को जिंदा रखने की क्षमता है, उस श्रम का सही मूल्य अगर श्रमिक जान लेगा तो देश में आर्थिक क्रांति होने में देर नहीं लगेगी ।

गांधीजी ने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया । उनकी मान्यता के अनुसार हरेक को नित्य उत्पादक श्रम करना ही चाहिए । यह उन्होंने श्रम और श्रमिक की प्रतिष्ठा कायम करने के लिए किया ।

अब कुछ समय से जगत के सामने दया की जगह समता का विचार आया है । यह विषमता कैसे दूर हो ? कहीं-कहीं लोगों ने हिंसा का मार्ग ग्रहण किया उसमें अनेक बुराइयाँ निकलीं जो अब तक दूर नहीं हो सकी हैं। विषमता दूर करने में कानून भी कुछ मदद देता है परंतु कानून से मानवोचित गुणों का, सद्‌भावना का विकास नहीं हो सकता । महात्मा जी ने हमें जो अहिंसा की विचारधारा दी है, उसके प्रभाव का कुछ अनुभव भी हम कर चुके हैं । भारत की परंपरा का खयाल करते हुए यह संभव दीखता है कि विषमता का प्रश्न बहुत कुछ हद तक अहिंसा के इस मार्ग से हल हो सकना संभव है । इसमें धनिकों से पूरा सहयोग मिलना चाहिए। जैसे राजनीतिक स्वराज्य का प्रश्न काफी हद तक अहिंसा के मार्ग से सुलझा वैसे ही आर्थिक और सामाजिक समता का प्रश्न भी भारत में अहिंसा के मार्ग से सुलझेगा, ऐसी हम श्रद्‌धा रखें ।

('राजनीति का विकल्प' से)

—— ० ——

'मेवे फलते श्रम की डाल' विषय पर अपनी लिखित अभिव्यक्ति दीजिए ।

शब्द संसार

तत्त्ववेत्ता पुं.वि.(सं.) =तत्त्वज्ञ
हकूमत स्त्री.सं.(अ.) = शासन
दफा स्त्री.सं.(अ.) = बार, मरतबा

मुहावरा
गुजर-बसर होना = आजीविका चलना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) उत्तर लिखिए :

१. व्यापारी और उद्‌योगपतियों के लिए अर्थशास्त्र द्‌वारा बनाए गए नये नियम -
२. संपत्ति के दो मुख्य साधन -
३. समाप्त हुईं दो प्रथाएँ -
४. कल्याणकारी राज्य का अर्थ -

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

[ ] ← गांधीजी द्‌वारा शोषण तथा अशांति मिटाने के लिए बताए गए सूत्र → [ ]

(३) तुलना कीजिए :

	बुद्‌धिजीवी	श्रमजीवी
१.	----------------	----------------
२.	----------------	----------------

(४) लिखिए :

दान से ये कार्य बनते हैं- → [ ] [ ]

व्यापार की कला इनसे प्राप्त होती है - → [ ] [ ]

(५) पाठ में प्रयुक्त 'इक' प्रत्यययुक्त शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए तथा उनमें से किन्हीं चार का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(६) पाठ में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके विलोम शब्द भी पाठ में ही प्रयुक्त हुए हैं, ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

अभिव्यक्ति

'समाज परोपकार वृत्ति के बल पर ही ऊँचा उठ सकता है', इस कथन से संबंधित अपने विचार लिखिए।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

[इज्जत उतारना, हाथ फेरना, काँप उठना, तिलमिला जाना, दुम हिलाना, बोलबाला होना]

१. करामत अली हौले-से लक्ष्मी से स्नेह करने लगा ।

वाक्य = --

२. सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं भयभीत हो गया ।

वाक्य = --

३. क्या आपने मुझे अपमानित करने के लिए यहाँ बुलाया था ?

वाक्य = --

४. सिरचन को बुलाओ, चापलूसी करता हुआ हाजिर हो जाएगा ।

वाक्य = --

५. पंडित बुद्‌धिराम काकी को देखते ही क्रोध में आ गए ।

वाक्य = --

(२) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. गुजर-बसर करना : ------------------------------------

२. गला फाड़ना : ------------------------------------

३. कलेजे में हूक उठना : ------------------------------------

४. सीना तानकर खड़े रहना : ------------------------------------

५. टाँग अड़ाना : ------------------------------------

६. जेब ढीली होना : ------------------------------------

७. निजात पाना : ------------------------------------

८. फूट-फूटकर रोना : ------------------------------------

९. मन तरंगायित होना : ------------------------------------

१०. मुँह लटकाना : ------------------------------------

(३) पाठ्‌यपुस्तक में आए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

उपयोजित लेखन

निम्न शब्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

मिट्‌टी, चाँद, खरगोश, कागज

C2Y3H3

४. छापा

– ओमप्रकाश 'आदित्य'

मेरे घर छापा पड़ा, छोटा नहीं बहुत बड़ा
वे आए, घर में घुसे, और बोले–सोना कहाँ है ?
मैंने कहा–मेरी आँखों में है, कई रात से नहीं सोया हूँ
वे रोष में आकर बोले–स्वर्ण दो स्वर्ण !
मैंने जोश में आकर कहा–सुवर्ण मैंने अपने काव्य में बिखेरे हैं
उन्हें कैसे दे दूँ ।
वे झुँझलाकर बोले, तुम समझे नहीं
हमें तुम्हारा अनधिकृत रूप से अर्जित अर्थ चाहिए
मैं मुसकाकर बोला, अर्थ मेरी नई कविताओं में है
तुम्हें मिल जाए तो ढूँढ़ लो
वे कड़ककर बोले, चाँदी कहाँ है ?
मैं भड़ककर बोला–मेरे बालों में आ रही है धीरे–धीरे
वे उद्‌भ्रांत होकर बोले,
यह बताओ तुम्हारे नोट कहाँ हैं ?
परीक्षा से एक महीने पहले करूँगा तैयार
वे गरजकर बोले, हमारा मतलब आपकी मुद्रा से है
मैं लरजकर बोला,
मुद्राएँ आप मेरे मुख पर देख लीजिए,
वे खड़े होकर कुछ सोचने लगे
फिर शयन कक्ष में घुस गए
और फटे हुए तकिये की रूई नोचने लगे
उन्होंने टूटी अलमारी को खोला
रसोई की खाली पीपियों को टटोला
बच्चों की गुल्लक तक देख डाली
पर सब में मिला एक ही तत्त्व खाली...
कनस्तरों को, मटकों को ढूँढ़ा सब में मिला शून्य–ब्रह्मांड
देखकर मेरे घर में ऐसा अरण्यकांड
उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया

परिचय

जन्म : १९३६, गुरुग्राम (हरियाणा)
मृत्यु : २००९, भोपाल (म.प्र.)
परिचय : ओमप्रकाश 'आदित्य' हिंदी की वाचिक परंपरा में हास्य–व्यंग्य के शिखर पुरुष होने के साथ–साथ छंद शास्त्र तथा काव्य की गहनतम संवेदना के पारखी थे । आप हिंदी कवि सम्मेलनों में हास्य–व्यंग्य के पुरोधा थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'इधर भी गधे हैं–उधर भी गधे हैं', 'मॉडर्न शादी', 'गोरी बैठी छत पर' (काव्यसंग्रह) आदि ।

पद्‍य संबंधी

प्रस्तुत हास्य–व्यंग्य कविता में कवि ने आयकर विभाग के 'छापे' के माध्यम से आम आदमी की आर्थिक स्थिति, छापा मारने वालों की कार्य प्रणाली को दर्शाया है । कवि द्‍वारा किया गया छापे का वर्णन व्यंग्यात्मक हास्य उत्पन्न करता है ।

और उनके बीस सूची हृदय में
रौद्र की जगह करुण रस समा गया,
वे बोले, क्षमा कीजिए, हमें किसी ने गलत सूचना दे दी
अपनी असफलता पर वे मन ही मन पछताने लगे
सिर झुकाकर वापिस जाने लगे
मैंने उन्हें रोककर कहा, ठहरिए !
सिर मत धुनिए मेरी एक बात सुनिए
मेरे घर में अधिक धन होता तो आप ले जाते
अब जब मेरे घर में बिल्कुल धन नहीं है
तो आप मुझे कुछ देकर क्यों नहीं जाते
जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं
उन्हें आप निकलवा लेते हैं
बहुत अच्छी बात है, निकलवा लीजिए
पर जिनके घर में बैठने को कुछ भी नहीं
उनके यहाँ कम-से-कम
एक तख्त तो डलवा दीजिए ।

('गोरी बैठी छत पर' से)

—— ० ——

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कवि ने छापामारों से माँगा:

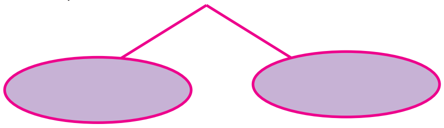

२. घरों की स्थिति दर्शाने वाली पंक्तियाँ:

समृद्ध ----------

अभावग्रस्त ----------

३. अंतिम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

शब्द संसार

रोष पुं.सं.(सं.) = गुस्सा
अर्जित वि.(सं.) = कमाया हुआ
अर्थ पुं.सं.(सं.) = पैसा/धन
कनस्तर पुं.सं(अं.) = टीन का पीपा
तख्त पुं.सं.(फा.) = लकड़ी की बड़ी चौकी

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

ये वस्तुएँ खाली थीं

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कवि द्वारा छापामारों को दिए गए सुझाव

२. शयनकक्ष में पाई गई चीजें

(३) कविता के आधार पर जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ
अर्थ	बालों में
सुवर्ण	चेहरे पर
चाँदी	नई कविता में
मुद्रा	काव्य कृतियों में

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

छापा मारने वालों में आया परिवर्तन

(५) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

१. अरण्यकांड २. तख्त ३. असफलता ४. अनधिकृत

(६) सोना, चाँदी, अर्थ और मुद्रा इन शब्दों के विभिन्न अर्थ बताते हुए कविता के आधार पर इनके अर्थ लिखिए ।

(७) 'कर जमा करना, देश के विकास को गति देना है' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन

निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए :

पुस्तक प्रदर्शनी और बिक्री

पुस्तकों के प्रकार

तिथि :
समय :

विशेषता

स्थल

C37YNQ

५. ईमानदारी की प्रतिमूर्ति

– *सुनील शास्त्री*

हमने अपने जीवन में बाबू जी के रहते अभाव नहीं देखा । उनके न रहने के बाद जो कुछ मुझपर बीता, वह एक दूसरी तरह का अभाव था कि मुझे बैंक की नौकरी करनी पड़ी । लेकिन उससे पूर्व बाबू जी के रहते मैं जब जन्मा था तब वे उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे। उस समय गृहमंत्री को पुलिस मंत्री कहा जाता था । इसलिए मैं हमेशा कल्पना किया करता था कि हमारे पास ये छोटी गाड़ी नहीं, बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए । बाबू जी प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ जो गाड़ी थी वह थी, इंपाला शेवरलेट । उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिले और उसे चलाऊँ । प्रधानमंत्री का लड़का था । कोई मामूली बात नहीं थी । सोचते-विचारते, कल्पना की उड़ान भरते एक दिन मौका मिल गया । धीरे-धीरे हिम्मत भी खुल गई थी ऑर्डर देने की। हमने बाबू जी के निजी सचिव से कहा-''सहाय साहब, जरा ड्राइवर से कहिए, इंपाला लेकर रेजिडेंस की तरफ आ जाएँ ।''

दो मिनट में गाड़ी आकर दरवाजे पर लग गई । अनिल भैया ने कहा- ''मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं । तुम्हीं चलाओ ।''

मैं आगे बढ़ा । ड्राइवर से चाभी माँगी । बोला- ''तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी ।''

गाड़ी ले हम चल पड़े । क्या शान की सवारी थी । याद कर बदन में झुरझुरी आने लगी है । जिसके यहाँ खाना था, वहाँ पहुँचा । बातचीत में समय का ध्यान नहीं रहा । देर हो गई ।

याद आया बाबू जी आ गए होंगे ।

वापस घर आ फाटक से पहले ही गाड़ी रोक दी । उतरकर गेट तक आया । संतरी को हिदायत दी । यह सैलूट-वैलूट नहीं, बस धीरे से गेट खोल दो । वह आवाज करे तो उसे बंद मत करो, खुला छोड़ दो।

बाबू जी का डर । वह खट-पट सैलूट मारेगा तो आवाज होगी और फिर गेट की आवाज से बाबू जी को हम लोगों के लौटने का अंदाजा हो जाएगा। वे बेकार में पूछताछ करेंगे । अभी बात ताजा है । सुबह तक बात में पानी पड़ चुका होगा । संतरी से जैसा कहा गया, उसने किया। दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसा । जाते ही अम्मा मिलीं ।

पूछा – ''बाबू जी आ गए ? कुछ पूछा तो नहीं ?''

बोली – ''हाँ, आ गए । पूछा था । मैंने बता दिया।''

आगे कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी, यह जानने-सुनने की कि बाबू जी ने क्या कहा फिर हिदायत दी-सुबह किसी को कमरे में मत भेजिएगा।

परिचय

जन्म : १९५०

परिचय : सुनील शास्त्री भारत के द्‌वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र हैं । आप एक राजनेता के अलावा कवि और लेखक भी हैं। आपको कविता, संगीत और सामाजिक कार्यों में विशेष लगाव है। सामाजिक, आर्थिक बदलाव पर अपने विचारों को आप पत्र-पत्रिकाओं में व्यक्त करते रहते हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'लाल बहादुर शास्त्री : मेरे बाबू जी'। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने स्व. लालबहादुर शास्त्री जी की ईमानदारी, सादगी, सरलता, सच्चाई, परदुखकातरता आदि गुणों को बड़े अच्छे ढंग से उजागर किया है ।

रात देर हो गई । सुबह देर तक सोना होगा ।

सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया । नींद टूटी । मैंने बड़ी तेज आवाज में कहा- ''देर रात को आया हूँ, सोना चाहता हूँ, सोने दो ।''

यह सोचकर कि कोई नौकर चाय लेकर आया होगा जगाने ।

लेकिन दरवाजे पर दस्तक फिर पड़ी । झुँझलाता जोर से बिगड़ने के मूड में दरवाजे की तरफ बढ़ा बड़ाबड़ाता हुआ । दरवाजा खोला । पाया, बाबू जी खड़े हैं । हमें कुछ न सूझा । माफी माँगी । बेध्यानी में बात कह गया हूँ । वे बोले- ''कोई बात नहीं, आओ-आओ । हम लोग साथ-साथ चाय पीते हैं ।''

हमने कहा- ''ठीक है !''

बस जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धो चाय के लिए टेबल पर जा पहुँचा । लगा, उन्हें सारी रामकहानी मालूम है पर उन्होंने कोई तर्क नहीं किया । न कुछ जाहिर होने दिया ।

कुछ देर बाद चाय पीते-पीते बोले- ''अम्मा ने कहा, तुम लोग आ गए हो पर तुम कहते हो रात बड़ी देर से आए। कहाँ चले गए थे ?''

जवाब दिया- ''हाँ, बाबू जी ! एक जगह खाने पर चले गए थे ।''

उन्होंने आगे प्रश्न किया- ''लेकिन खाने पर गए तो कैसे ? जब मैं आया तो फिएट गाड़ी गेट पर खड़ी थी । गए कैसे ?''

कहना पड़ा-''हम इंपाला शेवरलेट लेकर गए थे ।''

बोले-''ओह हो, तो आप लोगों को बड़ी गाड़ी चलाने का शौक है ।''

बाबू जी खुद इंपाला का प्रयोग न के बराबर करते थे और वह किसी 'स्टेट गेस्ट' के आने पर ही निकलती थी । उनकी बात सुन मैंने अनिल भैया की तरफ देख आँख से इशारा किया । मैं समझ गया था कि यह इशारा इजाजत का है । अब हम उसका आए दिन प्रयोग कर सकेंगे ।

चाय खत्म कर उन्होंने कहा- ''सुनील, जरा ड्राइवर को बुला दीजिए ।''

मैं ड्राइवर को बुला लाया । उससे उन्होंने पूछा- ''तुम लॉग बुक रखते हो न ?''

उसने 'हाँ' में उत्तर दिया । उन्होंने आगे कहा- ''एंट्री करते हो ?''

''कल कितनी गाड़ी इन लोगों ने चलाई ?''

वह बोला- ''चौदह किलोमीटर ।''

उन्होंने हिदायत दी- ''उसमें लिख दो, चौदह किलोमीटर निजी उपयोग ।''

तब भी उनकी बात हमारी समझ में नहीं आई फिर उन्होंने अम्मा को

लेखनीय

आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही दिखावे की संस्कृति पर अपने विचार लिखिए ।

बुलाने के लिए कहा । अम्मा जी के आने पर बोले- ''सहाय साहब से कहना, साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवा दें ।''

इतना जो उनका कहना था कि हम और अनिल भैया वहाँ रुक नहीं सके । जो रुलाई छूटी तो वह कमरे में भागकर पहुँचने के बाद भी काफी देर तक बंद नहीं हुई । दोनों ही जन देर तक फूट-फूटकर रोते रहे ।

आपसे यह बात शान के तहत नहीं कर रहा पर इसलिए कि ये बातें अब हमारे लिए आदर्श बन गई हैं । सक्रिय राजनीति में आने पर, सरकारी पद पाने के बाद क्या उसका दुरुपयोग करने की हिम्मत मुझमें हो सकती है? आप ही सोचें, मेरे बच्चे कहते हैं कि पापा, आप हमें साइकिल से भेजते हैं। पानी बरसने पर रिक्शे से स्कूल भेजते हैं पर कितने ही दूसरे लोगों के लड़के सरकारी गाड़ी से आते हैं । वे छोटे हैं उन्हें कलेजा चीरकर नहीं बता सकता । समझाने की कोशिश करता हूँ । जानता हूँ, मेरा यह समझाना कितना कठिन है फिर भी समय होने पर कभी-कभी अपनी गाड़ी से छोड़ देता हूँ । अपना सरकारी ओहदा छोड़कर आया हूँ और आपके साथ यह सब फिर जिक्र कर तनिक ताजा और नया महसूस करना चाहता हूँ । कोशिश करता हूँ, नींव को पुनः सँजोना-सँवारना कि मेरे मन का महल आज के इस तूफानी झंझावत में खड़ा रह सके ।

याद आते हैं बचपन के वे हसीन दिन, वे पल, जो मैंने बाबू जी के साथ बिताए । वे अपना व्यक्तिगत काम मुझे सौंप देते थे और मैं कैसा गर्व अनुभव करता था । एक होड़ थी, जो हम भाइयों में लगी रहती थी । किसे कितना काम दिया जाता है और कौन उसे कितनी सफाई से करता है ।

एक दिन बोले-''सुनील, मेरी अलमारी काफी बेतरतीब हो रही है, तुम उसे ठीक कर दो और कमरा भी ठीक कर देना ।''

मैंने स्कूल से लौटकर वह सब कर डाला। दूसरे दिन मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था कि बाबू जी ने मुझे बुलाया । पूछा- ''तुमने सब कुछ बहुत ठीक कर दिया, मैं बहुत खुश हूँ पर वे मेरे कुरते कहाँ हैं ?''

मैं बोला- ''वे कुरते भला ! कोई यहाँ से फट रहा था, कोई वहाँ से । वे सब मैंने अम्मा को दे दिए हैं ।''

उन्होंने पूछा- यह कौन-सा महीना चल रहा है?

मैंने जवाब दिया- अक्तूबर का अंतिम सप्ताह ।

उन्होंने आगे जोड़ा- ''अब नवंबर आएगा । जाड़े के दिन होंगे, तब ये सब काम आएँगे । ऊपर से कोट पहन लूँगा न !''

मैं देखता रह गया । क्या कह रहे हैं बाबू जी ? वे कहते जा रहे थे-''ये सब खादी के कपड़े हैं । बड़ी मेहनत से बनाए हैं बीनने वालों ने । इसका एक-एक सूत काम आना चाहिए ।''

यही नहीं, मुझे याद है, मैंने बाबू जी के कपड़ों की तरफ ध्यान देना शुरू किया था । क्या पहनते हैं, किस किफायत से रहते हैं। मैंने देखा था,

पठनीय

पुलिस द्‌वारा नागरी सुरक्षा के लिए किए जाने वाले कार्यों की जानकारी पढ़िए एवं उनकी सूची बनाइए ।

एक बार उन्होंने अम्मा को फटा हुआ कुरता देते हुए कहा था– 'इनके रूमाल बना दो ।'

बाबू जी का एक तरीका था, जो अपने आप आकर्षित करता था । वे अगर सीधे से कहते–सुनील, तुम्हें खादी से प्यार करना चाहिए, तो शायद वह बात कभी भी मेरे मन में घर नहीं करती पर बात कहने के साथ–साथ उनके अपने व्यक्तित्व का आकर्षण था, जो अपने में सामने वाले को बाँध लेता था । वह स्वतः उनपर अपना सब कुछ निछावर करने पर उतारू हो जाता था ।

अम्मा बताती हैं– हमारी शादी में चढ़ावे के नाम पर सिर्फ पाँच ग्राम सोने के गहने आए थे, लेकिन जब हम विदा होकर रामनगर आए तो वहाँ उन्हें मुँह दिखाई में गहने मिले । सभी नाते–रिश्तेवालों ने कुछ–न–कुछ दिया था । जिन दिनों हम लोग बहादुरगंज के मकान में आए, उन्हीं दिनों तुम्हारे बाबू जी के चाचा जी को कोई घाटा लगा था । किसी तरह से बाकी का रुपया देने की जिम्मेदारी हमपर आ पड़ी–बात क्या थी, उसकी ठीक से जानकारी लेने की जरूरत हमने नहीं सोची और न ही इसके बारे में कभी कुछ पूछताछ की ।

एक दिन तुम्हारे बाबू जी ने दुनिया की मुसीबतों और मनुष्य की मजबूरियों को समझाते हुए जब हमसे गहनों की माँग की तो क्षण भर के लिए हमें कुछ वैसा लगा और गहना देने में तनिक हिचकिचाहट महसूस हुई पर यह सोचा कि उनकी प्रसन्नता में हमारी खुशी है, हमने गहने दे दिए। केवल टीका, नथुनी, बिछिया रख लिए थे। वे हमारे सुहागवाले गहने थे । उस दिन तो उन्होंने कुछ नहीं कहा, पर दूसरे दिन वे अपनी पीड़ा न रोक सके । कहने लगे–''तुम जब मिरजापुर जाओगी और लोग गहनों के संबंध में पूछेंगे तो क्या कहोगी ?''

हम मुसकराईं और कहा– ''उसके लिए आप चिंता न करें । हमने बहाना सोच लिया है । हम कह देंगी कि गांधीजी के कहने के अनुसार हमने गहने पहनने छोड़ दिए हैं । इसपर कोई भी शंका नहीं करेगा ।'' तुम्हारे बाबू जी तनिक देर चुप रहे, फिर बोले– ''तुम्हें यहाँ बहुत तकलीफ है, इसे मैं अच्छी तरह समझता हूँ । तुम्हारा विवाह बहुत अच्छे, सुखी परिवार में हो सकता था, लेकिन अब जैसा है वैसा है । तुम्हें आराम देना तो दूर रहा, तुम्हारे बदन के भी सारे गहने उतरवा लिए ।''

हम बोलीं– ''पर जो असल गहना है वह तो है । हमें बस वही चाहिए । आप उन गहनों की चिंता न करें । समय आ जाने पर फिर बन जाएँगे । सदा ऐसे ही दिन थोड़े रहेंगे । दुख–सुख तो सदा ही लगा रहता है ।''

('लाल बहादुर शास्त्री : मेरे बाबूजी' से)

—— ० ——

संभाषणीय

अनुशासन जीवन का एक अंग है, इसके विभिन्न रूप आपको कहाँ–कहाँ देखने को मिलते हैं, बताइए ।

शब्द संसार

हिदायत स्त्री.सं.(अ.) = सूचना, निर्देश
दस्तक स्त्री.सं.(फा.) = दरवाजे पर आवाज करने की क्रिया
इजाजत स्त्री.सं(अ.) = आज्ञा, स्वीकृति
बेतरतीब वि.(फा.) = अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ
किफायत स्त्री.सं.(अ.) = मितव्यय

मुहावरे

फूट-फूटकर रोना = जोर-जोर से रोना
देखते रह जाना = आश्चर्यचकित होना

स्वाध्याय

✽ **सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

शास्त्री जी की स्वभावगत विशेषताएँ

(२) परिणाम लिखिए :

१. सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे दरवाजा खटखटाने का -
२. साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवाने का -

(३) पाठ में प्रयुक्त गहनों के नाम :

(४) वर्ण पहेली से विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

दु	अ	ग	प	-------- ×------
सु	बु	स	रा	-------- ×------
रु	ख	×	ला	-------- ×------
प्र	भ	यो	न्न	-------- ×------

(५) 'पर जो असल गहना है वह तो है' इस वाक्य से अभिप्रेत भाव लिखिए ।

(६) कुरते के प्रसंग से शास्त्री जी के इन गुणों (स्वभाव) का पता चलता है : १.________ २.________

(७) पाठ में प्रयुक्त परिमाणों की सूची तैयार कीजिए : १.________ २.________

(८) 'पर' शब्द के दो अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्य में प्रयोग कीजिए । १.________ २.________

अभिव्यक्ति

'सादा जीवन, उच्च विचार' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों को व्याकरण नियमों के अनुसार शुद्ध करके फिर से लिखिए :
[प्रत्येक वाक्य में कम-से-कम दो अशुद्धियाँ हैं]

१. करामत अली गाय अपनी घर लाई ।
२. उसने गाय की पीठ पर डंडे बरसाने नहीं चाहिए थी ।
३. करामत अली ने रमजानी पर गाय के देखभाल का जिम्मेदारी सौंपी ।
४. आचार्य अपनी शिष्यों को मिलना चाहते थे ।
५. घर में तख्ते के रखे जाने का आवाज आता है ।
६. लड़के के तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कोई कहना चाहा ।
७. सिरचन को कोई लड़का-बाला नहीं थे ।
८. लक्ष्मी की एक झूब्बेदार पूँछ था ।
९. कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला के पुस्तक को पढ़ने लगे ।
१०. डॉ. महादेव साहा ने बाजार से नए पुस्तक को खरीदा ।
११. लेखक गोवा को गए उनकी साथ साढ़ू साहब भी थे ।
१२. टिळक जी ने एक सज्जन के साथ की हुई व्यवहार बराबर थी ।
१३. रंगीन फूल की माला बहोत सुंदर लग रही थी ।
१४. बूढ़े लोग लड़के और कुछ स्त्रियाँ कुएँ पर पानी भर रहे थे ।
१५. लड़का, पिता जी और माँ बाजार को गई ।
१६. बरसों बाद पंडित जी को मित्र का दर्शन हुआ ।
१७. गोवा के बीच पर घूमने में बड़ी मजा आई ।
१८. सामने शेर देखकर यात्री का प्राण मानो मुरझा गया ।
१९. करामत अली के आँखों में आँसू उतर आई ।
२०. मैं मेरे देश को प्रेम करता हूँ ।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए । उसे उचित शीर्षक दीजिए ।

गाँव में लड़कियाँ — सभी पढ़ने में होशियार — गाँव में पानी का अभाव — लड़कियों का घर के कामों में सहायता करना — बहुत दूर से पानी लाना — पढ़ाई के लिए कम समय मिलना — लड़कियों का समस्या पर चर्चा करना — समस्या सुलझाने का उपाय खोजना — गाँववालों की सहायता से प्रयोग करना — सफलता पाना-शीर्षक ।

C3GUQD

६. हम उस धरती की संतति हैं

(पूरक पठन)

-उमाकांत मालवीय

हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें
क्या कहिए; अजी क्या कहिए; हाँ क्या कहिए ।
यह वह मिट्‌टी, जिस मिट्‌टी में खेले थे यहाँ ध्रुव-से बच्चे ।

यह मिट्‌टी, हुए प्रहलाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे ।
शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते,
जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते !

इस कारण हम तुमसे बढ़कर, हम सबके आगे चुप रहिए ।
अजी चुप रहिए, हाँ चुप रहिए । हम उस धरती के लड़के हैं ...

बातों का जनाब, शऊर नहीं, शेखी न बघारें, हाँ चुप रहिए ।
हम उस धरती की लड़की हैं, जिस धरती की बातें क्या कहिए ।

अजी क्या कहिए, हाँ क्या कहिए ।
जिस मिट्‌टी में लक्ष्मीबाई जी, जन्मी थीं झाँसी की रानी ।
रजिया सुलताना, दुर्गावती, जो खूब लड़ी थीं मर्दानी ।
जन्मी थी बीबी चाँद जहाँ, पद्‌मिनी के जौहर की ज्वाला ।
सीता, सावित्री की धरती, जन्मी ऐसी-ऐसी बाला ।
गर डींग जनाब उड़ाएँगे, तो मजबूरन ताने सहिए, ताने सहिए, ताने सहिए ।
हम उस धरती की लड़की हैं...

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में ।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें ।
झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझा के ।
बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के ।
भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये ।
हम उस धरती की संतति हैं ....

—— ० ——

परिचय

जन्म : १९३१, मुंबई (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १९८२, इलाहाबाद (उ.प्र.)
परिचय : भावों की तीव्रता और जन सरोकारों को रेखांकित करने वाले रचनाकारों में उमाकांत मालवीय का स्थान अग्रणी रहा । हिंदी साहित्य में आपको नवगीत का भगीरथ कहा जाता है । आपने कविता के अतिरिक्त खंडकाव्य, निबंध तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी लिखीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मेंहदी और महावर', 'देवकी', 'रक्तपथ', 'सुबह रक्तपलाश की' (कविता संग्रह) आदि ।

पद्‌य संबंधी

कव्वाली : कव्वाली का इतिहास सात सौ वर्ष पुराना है । कव्वाली एक लोकप्रिय काव्य विधा है । यह तारीफ या शान में गाया जाने वाला गीत या कविता है ।

प्रस्तुत कव्वाली में कवि ने दो दलों की नोक-झोंक पेश करते हुए शूरवीर ऐतिहासिक स्त्री-पुरुष पात्रों का वर्णन किया है । यहाँ स्त्री-पुरुष को भारतमाता के रथ के दो पहिये बताया गया है । यहाँ गाते समय पहला पद लड़कों का समूह; दूसरा पद लड़कियों का समूह और अंतिम पद दोनों समूह मिलकर प्रस्तुत करते हैं ।

शब्द संसार

दतुली स्त्री.सं.(दे.) = दाँत
शऊर पुं.सं.(अ.) = अच्छी तरह काम करने की योग्यता या ढंग, बुद्धि
जौहर पुं.सं.(हिं.) = राजस्थान में प्राचीन समय में प्रचलित प्रथा । इसमें स्त्रियाँ विदेशी आक्रमणकारियों से अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अग्नि में प्रवेश कर प्राणों की आहुति दे देती थीं ।
खफा वि.(अ.) = अप्रसन्न, नाराज, रुष्ट, क्रुद्ध
टंटा पुं.सं(दे.) = व्यर्थ का झंझट, खटराग, उपद्रव, उत्पात, झगड़ा, लड़ाई

मुहावरे

शेखी बघारना = स्वयं अपनी प्रशंसा करना
डींग मारना = बड़ी-बड़ी बातें करना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

(१) वर्गीकरण कीजिए :

पद्यांश में उल्लिखित चरित्र-ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, लक्ष्मीबाई, रजिया सुलताना, दुर्गावती, पद्मिनी, सीता, चाँदबीबी, सावित्री, जयमल

ऐतिहासिक	पौराणिक

(२) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए :

१. भारत माता के रथ के दो पहिये - ....
२. खूब लड़ने वाली मर्दानी - ....
३. अपनी लगन का सच्चा - ....
४. किसी को कुछ न गिनने वाले - ....

(३) सही/गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके वाक्य पुनः लिखिए :

१. रानी कर्मवती ने अकबर को राखी भेजी थी ।
२. भरत शेर के दाँत गिनते थे ।
३. झगड़ने से सब कुछ प्राप्त होता है ।
४. ध्रुव आकाश में खेले थे ।

(४) कविता से प्राप्त संदेश लिखिए ।

C3QQS1

७. महिला आश्रम

– काका कालेलकर

प्रिय सरोज,

जिस आश्रम की कल्पना की है उसके बारे में कुछ ज्यादा लिखूँ तो बहन को सोचने में मदद होगी, आश्रम यानी होम (घर) उसकी व्यवस्था में या संचालन में किसी पुरुष का संबंध न हो । उस आश्रम का विज्ञापन अखबार में नहीं दिया जाए । उसके लिए पैसे तो सहज मिलेंगे, लेकिन कहीं माँगने नहीं जाना है । जो महिला आएगी वह अपने खाने-पीने की तथा कपड़ेलत्ते की व्यवस्था करके ही आए । वह यदि गरीब है तो उसकी सिफारिश करने वाले लोगों को खर्च की पक्की व्यवस्था करनी चाहिए । पूरी पहचान और परिचय के बिना किसी को दाखिल नहीं करना चाहिए । दाखिल हुई कोई भी महिला जब चाहे तब आश्रम छोड़ सकती है । आश्रम को ठीक न लगे तो एक या तीन महीने का नोटिस देकर किसी को आश्रम से हटा सकता है लेकिन ऐसा कदम सोचकर लेना होगा ।

आश्रम किसी एक धर्म से चिपका नहीं होगा । सभी धर्म आश्रम को मान्य होंगे, अतः सामान्य सदाचार, भक्ति तथा सेवा का ही वातावरण रहेगा । आश्रम में स्वावलंबन हो सके उतना ही रखना चाहिए । सादगी का आग्रह होना चाहिए । आरंभ में पढ़ाई या उद्योग की व्यवस्था भले न हो सके लेकिन आगे चलकर उपयोगी उद्योग सिखाए जाएँ । पढ़ाई भी आसान हो । आश्रम शिक्षासंस्था नहीं होगी लेकिन कलह और कुढ़न से मुक्त स्वतंत्र वातावरण जहाँ हो ऐसा मानवतापूर्ण आश्रयस्थान होगा, जहाँ परेशान महिलाएँ बेखटके अपने खर्च से रह सकें और अपने जीवन का सदुपयोग पवित्र सेवा में कर सकें । ऐसा आसान आदर्श रखा हो और व्यवस्था पर समिति का झंझट न हो तो बहन सुंदर तरीके से चला सके ऐसा एक बड़ा काम होगा । उनके ऊपर ऐसा बोझ नहीं आएगा जिससे कि उन्हें परेशानी हो ।

संस्था चलाने का भार तो आने वाली बहनें ही उठा सकेंगी क्योंकि उनमें कई तो कुशल होंगी । बहन उनको संगीत की, भक्ति की तथा प्रेमयुक्त सलाह की खुराक दें । आगे चलकर संस्था की जमीन पर छोटे-छोटे मकान बनाए जाएँगे और उसमें संस्था के नियम के अधीन रहकर आने वाली महिलाएँ दो-दो, चार-चार का परिवार चलाएँगी, ऐसी संस्थाएँ मैंने देखी हैं । इसलिए जो बिलकुल संभव है, बहुत ही उपयोगी है । ऐसा ही काम मैंने सूचित किया है, इतने वर्ष के बहन के परिचय के बाद उनकी शक्ति, कुशलता और उनकी मर्यादा का ख्याल मुझे है । प्रत्यक्ष कोई हिस्सा लिए

परिचय

जन्म : १८८५, सातारा (महाराष्ट्र)

मृत्यु : १९८१, नई दिल्ली

परिचय : काका कालेलकर के नाम से विख्यात दतात्रेय बालकृष्ण कालेलकर जी ने हिंदी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी भाषा में समान रूप से लेखनकार्य किया । राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम मानने वाले काका कालेलकर उच्चकोटि के वैचारिक निबंधकार हैं । विभिन्न विषयों की तर्कपूर्ण व्याख्या आपकी लेखनशैली के विशेष गुण हैं ।

प्रमुख कृतियाँ :

हिंदी : 'राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों का विकास', 'जीवन-संस्कृति की बुनियाद', 'नक्षत्रमाला' 'स्मरणयात्रा', 'धर्मोदय' (आत्मचरित्र) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पत्र में कालेलकर जी ने महिला आश्रम की स्थापना, उसकी व्यवस्था, वातावरण, नियम आदि के बारे में विस्तृत निर्देश दिए हैं । इस पत्र द्वारा महिला संबंधी आपके विचार, प्रकृति, प्रेम सामाजिक लगाव का पता चलता है ।

बिना मेरी सलाह और सहारा तो रहेगा ही । आगे जाकर बहन को लगेगा कि उनको तो मात्र निमित्तमात्र होना था । संस्था अपने आप चलेगी । समाज में ऐसी संस्था की अत्यंत आवश्यकता है । उस आवश्यकता में से ही उसका जन्म होगा । मुझे इतना विश्वास न होता तो बहन के लिए ऐसा कुछ मैं सूचित ही नहीं करता । तुम दोनों इस सूचना का प्रार्थनापूर्वक विचार करना लेकिन जल्दी में कुछ तय न करके यथासमय मुझे उत्तर देना । बहन यदि हाँ कहे तो अभी से आगे का विचार करने लगूँगा ।

यहाँ सरदी अच्छी है । फूलों में गुलदाउदी, क्रिजेन्थीमम फूल बहार में हैं । उसकी कलियाँ महीनों तक खुलती ही नहीं मानो भारी रहस्य की बात पेट में भर दी हो और होठों को सीकर बैठ गई हों । जब खिलती हैं तब भी एक-एक पंखुड़ी करके खिलती हैं । वे टिकते हैं बहुत । गुलाब भी खिलने लगे हैं । कोस्मोस के दिन गए । उन्होंने बहुत आनंद दिया । जिनिया का एक पौधा, रास्ते के किनारे पर था जो आए सो उसकी कली तोड़े । फिर मैंने इस बड़े पौधे को वहाँ से निकालकर अपने सिरहाने के पास लगा दिया, फिर इसने इतने सुंदर फूल दिए । इसकी आँखें मानो उत्कटता से बोलती हों, ऐसी लगतीं । दो-एक महीने फूल देकर अंत में वह सूख गया । परसों ही मैंने उसे बिदा दी ।

– काका का दोनों को सप्रेम शुभाशीष

गुरु, २१.१२.४४

× × × ×

प्रिय सरोज,

तुम्हारा १६ से १८ तक लिखा हुआ पत्र आज अभी मिला । इस महीने में मैंने इन तारीखों को पत्र लिखे हैं-तारीख १,९,१५ और चौथा आज लिख रहा हूँ । अब तुमको हर सप्ताह मैं लिखूँगा ही । तुम्हारी तबीयत कमजोर है तब तक चिरंजीव रैहाना मुझे पत्र लिखेगी तो चलेगा । मुझे हर सप्ताह एक पत्र मिलना ही चाहिए ।

पूज्य बापू जी चाहते हैं तो हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए मुझे अपनी सारी शक्ति उर्दू सीखने के पीछे खर्च करनी चाहिए । तुमको मैंने एक संदेश भेजा था कि तुम उर्दू लिखना सीखो । लेकिन अब तो मेरा एक ही संदेश है-पूरा आराम लेकर पूरी तरह ठीक हो जाओ ।

तारों के नक्शे बनाने के लिए कंपास बॉक्स भी मँगाकर रखा है । लेकिन अब तक कुछ हो नहीं पाया है ।

मैंने अपने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए हैं । सादे क्रोटन को ही रहने दिया है ।

सबको काका का सप्रेम शुभाशीष

('काका कालेलकर ग्रंथावली' से)

— ० —

मानवतावाद पर विचार सुनिए ।

अंतरिक्ष विज्ञान में ख्याति प्राप्त दो महिलाओं की जानकारी पढ़िए ।

'अनुशासन स्वयं विकास का प्रथम चरण है', कथन पर चर्चा कीजिए ।

किसी सामाजिक संस्था की जानकारी लिखिए ।

शब्द संसार

कलह पुं.सं(सं.) = विवाद, झगड़ा
कुढ़न स्त्री.सं.(सं.) = खीझ
बेखटके (क्रि.वि.) = बिना किसी संकोच के, निसंकोच

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

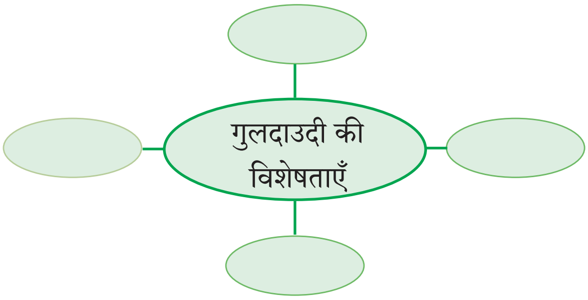

(२) कारण लिखिए :

१. काका जी ने कंपास बॉक्स मँगाकर रखा –

२. लेखक ने फूल के गमले अपने पास से निकाल दिए –

(३) लिखिए :

१. जिन्हें 'ता' प्रत्यय लगा हो ऐसे शब्द पाठ से ढूँढ़कर उन प्रत्ययसाधित शब्दों की सूची बनाइए ।

शब्द	'ता'	प्रत्यय साधित शब्द
________	________	________
________	________	________
________	________	________
________	________	________

२. पाठ में प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

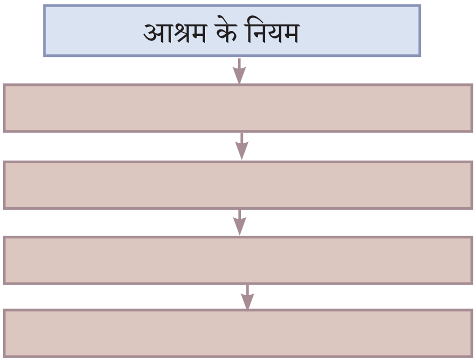

अभिव्यक्ति

'पत्र लिखने का सिलसिला सदैव जारी रहना चाहिए' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'संदेश वहन के आधुनिक साधनों से लाभ–हानि' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों तक निबंध लिखिए ।

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों से बने दो मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

आँख

१. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

२. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

मुँह

१. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

२. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

दाँत

१. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

२. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

हाथ

१. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

२. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

हृदय

१. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

२. ____________________
अर्थ : ---------------------
वाक्य : ---------------------

उपयोजित लेखन

अपने मित्र/सहेली को जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के उपलक्ष्य में बधाई देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए ।

दिनांक : ....
संबोधन :
अभिवादन :
प्रारंभ : --------------
विषय विवेचन : ------------------------
---------------------------------- ---
समापन : -------------

हस्ताक्षर : ------------------
नाम : --------------------
पता : ----------

ई-मेल आईडी : --------

C3ZLTN

८. अपनी गंध नहीं बेचूँगा

– बालकवि बैरागी

चाहे सभी सुमन बिक जाएँ चाहे ये उपवन बिक जाएँ
चाहे सौ फागुन बिक जाएँ पर मैं गंध नहीं बेचूँगा
अपनी गंध नहीं बेचूँगा ।।

जिस डाली ने गोद खिलाया जिस कोंपल ने दी अरुणाई
लछमन जैसी चौकी देकर जिन काँटों ने जान बचाई
इनको पहिला हक आता है चाहे मुझको नोचें-तोड़ें
चाहे जिस मालिन से मेरी पँखुरियों के रिश्ते जोड़ें
ओ मुझपर मँड़राने वालो मेरा मोल लगाने वालो
जो मेरा संस्कार बन गई वो सौगंध नहीं बेचूँगा ।
अपनी गंध नहीं बेचूँगा ।।

मौसम से क्या लेना मुझको ये तो आएगा-जाएगा
दाता होगा तो दे देगा खाता होगा तो खाएगा ।
कोमल भँवरों के सुर सरगम पतझारों का रोना-धोना
मुझपर क्या अंतर लाएगा पिचकारी का जादू-टोना
ओ नीलाम लगाने वालो पल-पल दाम बढ़ाने वालो
मैंने जो कर लिया स्वयं से वो अनुबंध नहीं बेचूँगा ।
अपनी गंध नहीं बेचूँगा ।।

मुझको मेरा अंत पता है पँखुरी-पँखुरी झर जाऊँगा
लेकिन पहिले पवन परी संग एक-एक के घर जाऊँगा
भूल-चूक की माफी लेगी सबसे मेरी गंध कुमारी
उस दिन ये मंडी समझेगी किसको कहते हैं खुद्दारी
बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ
मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा ।

('अपनी गंध नहीं बेचूँगा' से)

—— ० ——

परिचय

जन्म : १९३१, मंदसौर (म.प्र.)

परिचय : जीवन के आरंभिक दिनों से ही संघर्ष को साथी बना, उन्हीं हालातों से प्रेरणा लेकर नंदरामदास बैरागी कविता के क्षेत्र में बालकवि बैरागी के रूप में प्रतिष्ठित हुए ।

आप साहित्य के साथ-साथ राजनीति में भी सक्रिय हैं । आपकी रचनाएँ ओजगुण संपन्न हैं । आपके जीवन का संघर्ष जोश, ओज, हौसला और प्रेरणा शब्द रूप में कविताओं में ढल गए। आपने बच्चों के लिए भी बहुत सारे गीत लिखे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गौरव-गीत', 'दरद दीवानी' (काव्यसंग्रह) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में गीतकार ने फूल के स्वभाव की विशेषताएँ बताते हुए कहा है कि किसी भी परिस्थिति में फूल अपनी गंध नहीं बेचता । फूल के इस स्वाभिमान को मनुष्य को भी अपनाना चाहिए ।

शब्द संसार

गंध स्त्री.सं.(सं.) = महक, बास
कोंपल स्त्री.सं.(सं.) = नई कोमल पत्तियाँ
अरुणाई स्त्री.वि.(सं.) = लालिमा, लाली
अनुबंध पुं.सं.(सं.) = समझौता, प्रतिज्ञा पत्र
प्रतिबंध पुं.सं.(सं.) = रुकावट, विघ्न

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

फूल बेचना नहीं चाहता

१. ______
२. ______
३. ______
४. ______

(२) लिखिए :

१. फूल को बिक जाने से भी बेहतर लगता है - - - - - - - - - - - - - - - - - ।
२. फूल के अनुसार उसे तोड़ने का पहला अधिकार इन्हें हैं - - - - - - - - - - - - - - - - - ।

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

अंत पता होने पर भी फूल की अभिलाषा

[ ] [ ]

(४) सूची बनाइए :

इनका फूल से संबंध है -

______
______
______
______
______
______

(५) कारण लिखिए :

१. फूल अपनी सौगंध नहीं बेचेगा -
२. फूल को मौसम से कुछ लेना नहीं है -

(६) 'दाता होगा तो दे देगा, खाता होगा तो खाएगा' इस पंक्ति से स्पष्ट होने वाला अर्थ लिखिए ।

(७) निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर पद्‌य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंदीदा होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा

C49HVB

९. जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ

-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

[विश्वनाथ प्रसाद तिवारी -(तिवारी जी) की अमृतलाल नागर (नागर जी) से बातचीत]

तिवारी जी : नागर जी, मैं आपको आपके लेखन के आरंभ काल की ओर ले चलना चाहता हूँ । जिस समय आपने लिखना शुरू किया उस समय का साहित्यिक माहौल क्या था ? किन लोगों से प्रेरित होकर आपने लिखना शुरू किया और क्या आदर्श थे आपके सामने ?

नागर जी : लिखने से पहले तो मैंने पढ़ना शुरू किया था । आरंभ में कवियों को ही अधिक पढ़ता था । सनेही जी, अयोध्यासिंह उपाध्याय की कविताएँ ज्यादा पढ़ीं । छापे का अक्षर मेरा पहला मित्र था । घर में दो पत्रिकाएँ मँगाते थे मेरे पितामह । एक 'सरस्वती' और दूसरी 'गृहलक्ष्मी' । उस समय हमारे सामने प्रेमचंद का साहित्य था, कौशिक का था । आरंभ में बंकिम के उपन्यास पढ़े । शरतचंद्र को बाद में । प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का कहानी संग्रह 'देशी और विलायती' १९३० के आसपास पढ़ा । उपन्यासों में बंकिम के उपन्यास १९३० में ही पढ़ डाले । 'आनंदमठ', 'देवी चौधरानी' और एक राजस्थानी थीम पर लिखा हुआ उपन्यास, उसी समय पढ़ा था ।

तिवारी जी : क्या यही लेखक आपके लेखन के आदर्श रहे ?

नागर जी : नहीं, कोई आदर्श नहीं । केवल आनंद था पढ़ने का । सबसे पहले कविता फूटी साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय १९२८-१९२९ में । लाठीचार्ज हुआ था । इस अनुभव से ही पहली कविता फूटी-'कब लौं कहौं लाठी खाय!' इसे ही लेखन का आरंभ मानिए ।

तिवारी जी : इस घटना के बाद आप राजनीति की ओर क्यों नहीं गए ?

नागर जी : नहीं गया क्योंकि पिता जी सरकारी कर्मचारी थे । १९२९ के बाद मेरी रुचि बढ़ी-पढ़ने में भी और सामाजिक कार्यों में भी । लेकिन मेरी पहली कहानी छपी १९३३ में 'अपशकुन' । तुम्हारे गोरखपुर के मन्नन द्विवेदी लिख रहे थे उन दिनों । चंडीप्रसाद हृदयेश थे जिनकी लेखन शैली ने मुझे बहुत प्रभावित किया ।

परिचय

जन्म : १९४१, देवरिया (उ.प्र.)

परिचय : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी हिंदी जगत के जाने-माने कवि, लेखक, आलोचक एवं संपादक हैं। आप देश, काल और वातावरण के प्रति सजग और संवेदनशील रचनाकार हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'फिर भी कुछ रह जाएगा' (कविता संग्रह), 'अज्ञेय पत्रावली' (निबंध), 'अंतहीन आकाश' (यात्रा), 'अमेरिका और युरोप में एक भारतीय बन' (यात्रा संस्मरण), 'अस्ति और भवति' (आत्मकथा), 'बातचीत' (साक्षात्कार संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत साक्षात्कार में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी ने नागर जी से तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों, लेखकों आदि के बारे में अनेक प्रश्न पूछे हैं । इन सभी का जीवन एवं लेखन पर कितना और किस तरह का प्रभाव पड़ा, इसे साक्षात्कार के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया है ।

तिवारी जी : क्या उन दिनों आपपर गांधीजी के व्यक्तित्व का भी कुछ प्रभाव पड़ा ?

नागर जी : हाँ, निश्चित रूप से पड़ा । पिता जी ने आंदोलनों में भाग लेने से रोका । वह रोकना ही मेरे लेखन के लिए अच्छा हुआ।

तिवारी जी : आपके लेखन में गरीबों के प्रति जो करुणा है वह किससे प्रभावित है ?

नागर जी : वह तो अपने समाज से ही उभरी थी । मेरी पहली कहानी 'प्रायश्चित' इसका प्रमाण है । हमारे पारिवारिक संस्कार भी थे । मेरे पिता जी में एक अद्‌भुत गुण था । वे किसी के दुख-दर्द में तुरंत पहुँचते थे । इसने मुझे बहुत प्रभावित किया ।

तिवारी जी : उस समय तो क्रांतिकारी आंदोलन भी हो रहे थे । क्या उनका भी आपपर कुछ प्रभाव पड़ा ?

नागर जी : उसी से तो पिता जी ने डाँटा और रोका । काकोरी बमकांड हो चुका था । १९२१ से आंदोलन तेज हो गए थे ।

तिवारी जी : क्या सामाजिक आंदोलनों, जैसे आर्य समाज का भी आपपर कुछ प्रभाव पड़ा ?

नागर जी : आरंभिक असर है थोड़ा जरूर । मेरे पिता जी में एक अच्छी बात थी कि उन्होंने मुझे सामाजिक आंदोलनों में जाने से कभी नहीं रोका । जवाहरलाल नेहरू से मेरी भेंट १९३३ में हुई । उनकी माँ मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं और उसी समय मेरा छोटा भाई भी वहाँ दाखिल था। नेहरू जी जेल में थे । उनकी माँ के पास कुछ कश्मीरी लोगों को छोड़कर कोई आता-जाता नहीं था । मैं उनकी माता जी के पास रोज जाता था । पंडित जी जब जेल से छूटे तो मेरी उनसे वहीं भेंट हुई जो प्रायः होती रहती थी। उनसे खूब बातें होती थीं- हर तरह की ।

तिवारी जी : आपका पहला उपन्यास कौन-सा है ?

नागर जी : पहला उपन्यास लिखा १९४४ में 'महाकाल', जो छपा १९४६ में । बंगाल से लौटकर इसे लिखा था।

तिवारी जी : क्या यही बाद में 'भूख' नाम से प्रकाशित हुआ ।

नागर जी : हाँ ।

तिवारी जी : नागर जी, आप अपने समय के और कौन-कौन से लेखकों के संपर्क-प्रभाव में रहे ?

श्रवणीय

किसी बुजुर्ग से स्वतंत्रतापूर्व भारत की विस्तृत जानकारी सुनिए और मित्रों को सुनाइए ।

नागर जी : जगन्नाथदास रत्नाकर, गोपाल राय गहमरी, प्रेमचंद, किशोरी लाल गोस्वामी, लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम याद आते हैं । माधव शुक्ल हमारे यहाँ आते थे । वे आजानुबाहु थे, ढीला कुरता पहनते थे और कुरते की जेब में जलियाँवाला बाग की खून सनी मिट्टी हमेशा रखे रहते थे । १९३१ से ३७ तक मैं प्रतिवर्ष कोलकाता जाकर शरतचंद्र से मिलता रहा, उनके गाँव भी गया ।

तिवारी जी : पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं ?

नागर जी : तुलसीदास को तो मुझे घुट्टी में पिलाया गया है । बाबा, शाम को नित्य प्रति 'रामचरितमानस' मुझसे पढ़वाकर सुनते थे । श्लोक जबरदस्ती याद करवाते थे ।

तिवारी जी : नागर जी, आपने 'खंजन नयन' में सूरदास के चमत्कारों का बहुत विस्तार से वर्णन किया है । क्या इनपर आपका विश्वास है ?

नागर जी : नेत्रहीनों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं । उनकी भविष्यवाणियाँ कभी-कभी बहुत सच होती हैं । सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था कि सूर जन्मांध थे या नहीं । सवाल यह है कि देखता कौन है ? आँख या मन ? आँख माध्यम है, देखने वाला मन है ।

तिवारी जी : आपने क्या कभी अपने लिखने की सार्थकता की परख की है ?

नागर जी : हाँ, मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं । मेरे उपन्यासों के बारे में, खास तौर से जिनसे पाठकीय प्रतिक्रियाओं का पता चलता है ।

तिवारी जी : नागर जी, आपने भ्रमण तो काफी किया है...

नागर जी : हाँ, पूरे अखंड भारतवर्ष का । पेशावर से कन्याकुमारी तक । बंगाल से कश्मीर तक । इन यात्राओं का यह लाभ हुआ कि मैंने कैरेक्टर (चरित्र) बहुत देखे और उनके मनोविज्ञान को भी समझने का मौका मिला ।

तिवारी जी : अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ?

नागर जी : अगर दिल से पूछो तो एक ही आदमी । उसे बहुत प्यार करता हूँ । वह है रामविलास शर्मा । प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का संग्रह 'देशी और विलायती' अगर मिल जाए तो फिर पढ़ना चाहूँगा । बदलते हुए भारतीय समाज

लेखनीय

किसी खिलाड़ी का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नों की सूची बनाइए ।

पठनीय

प्रसिद्‌ध व्यक्तियों के भाषण पढ़िए और चर्चा कीजिए ।

के सुंदर चित्र हैं उसकी कहानियों में । टॉल्स्टॉय और चेखव की रचनाएँ भी मुझे प्रिय हैं ।

तिवारी जी : आपने तो पत्रों का भी बहुत संकलन किया है ?

नागर जी : हाँ, बहुत । पत्रों का संग्रह भी काफी है, लेकिन वह व्यवस्थित नहीं है । मैंने प्रत्येक जाति के रीति-रिवाज भी इकट्ठे किए हैं । इसके लिए घूमना बहुत पड़ा है । बड़े-बूढ़ों से सुनकर भी बहुत कुछ प्राप्त किया है । 'गदर के फूल' के लिए मुझे बहुत लोगों से मिलना-जुलना पड़ा ।

तिवारी जी : आपने अपने उपन्यासों के लिए फील्डवर्क बहुत किया है ।

नागर जी : हाँ, बहुत करना पड़ा है । 'नाच्यो बहुत गोपाल' के लिए सफाई कर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा। उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा ।

तिवारी जी : नागर जी, क्या आप मन और प्राण को अलग-अलग मानते हैं ?

नागर जी : हाँ, प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा । मन की गति आगे तक है । प्राण को वहाँ तक खींचना पड़ता है । मन एक ऐसा निर्मल जल है जिससे जीवन के संस्कार रँगते हैं । मन, प्राण से ही सधता है ।

तिवारी जी : सूर में आपने मन को ही पकड़ा है ।

नागर जी : हाँ, सूर ने एक जगह लिखा है-'मैं दसों दिशाओं में देख लेता हूँ ।' जब पूरी प्राणशक्ति एक जगह केंद्रित होगी तो 'इंट्यूटिव आई' बनाएगी ।

तिवारी जी : नागर जी, हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया, बल्कि आपकी उम्र और स्वास्थ्य का भी लिहाज नहीं किया ।

नागर जी : स्वास्थ्य ठीक है मेरा । पत्नी की मृत्यु के बाद एक टूटन आ गई थी, लेकिन फिर मैंने सोचा कि लिखने के सिवा और चारा क्या है । तुम लोग यह मनाओ कि जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ ।

('एक नाव के यात्री' से)

— ० —

संभाषणीय

'आज के समय में पत्र लेखन की सार्थकता' पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

शब्द संसार

बहिष्कार करना क्रि.(सं.) = त्याग करना, निकाल देना
शैली स्त्री.सं.(सं.) = प्रणाली, रीति, तरीका
भ्रमण पुं.सं.(सं.) = घूमना, फिरना
संकलन पुं.सं.(सं.) = संग्रह

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

अमृतलाल नागर जी के साहित्य सृजन में सहायक	लेखक	१.	२.
	पत्रिकाएँ	१.	२.

(२) उत्तर लिखिए :–

१. नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित करने वाला अनुभव - - - - - - - - - - - - -

२. नागर जी अपने पिता जी के इस गुण से प्रभावित थे - - - - - - - - - - - - - - - - - -

(३) कोष्ठक में दी गई नागर जी की साहित्य कृतियों का वर्गीकरण कीजिए :

[कब लौं कहौं लाठी खाय, खंजन नयन, अपशकुन, नाच्यो बहुत गोपाल, महाकाल, प्रायश्चित, गदर के फूल]

कहानी	उपन्यास	कविता	अन्य

(४) कृति पूर्ण कीजिए :

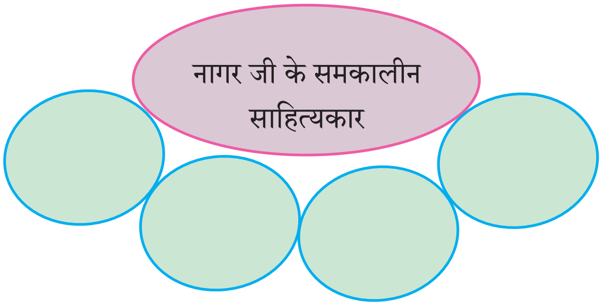

(५) लिखिए :

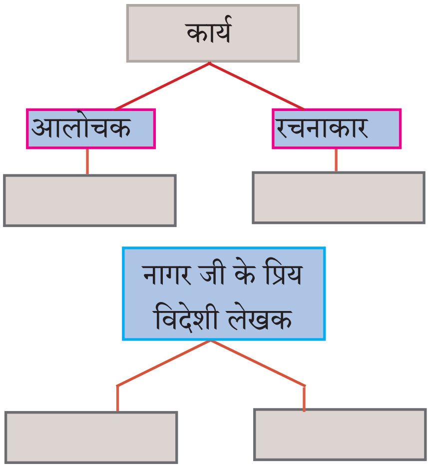

(६) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

१. नागर जी के प्रिय लेखक –

२. नागर जी के प्रिय आलोचक –

३. अपनी इस रचना के लिए नागर जी को बहुत लोगों से मिलना पड़ा –

४. नागर जी का पहला उपन्यास –

(७) लिखिए :

(अ) तद्धित शब्दों का मूल शब्द :

१. साहित्यिक = ________

२. विलायती = ________

(ब) कृदंत शब्दों का मूल शब्द :

१. खिंचाव = ________

२. लिखावट = ________

(८) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ' रचना	उत्तर	'ब' रचनाकार
१. देसी और विलायती	१ ________	अमृतलाल नागर
२. अपशकुन	२ ________	तुलसीदास
३. आनंद मठ	३ ________	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय
४. रामचरितमानस	४ ________	बंकिमचंद्र चटर्जी
		सूरदास

अभिव्यक्ति

'ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का साधन : वाचन' पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में आई हुई मुख्य और सहायक क्रियाओं को रेखांकित करके दी हुई तालिका में लिखिए :

- उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा ।
- माता-पिता का यह रंग देखकर तो वे बूढ़ी काकी को और सताने लगे ।
- उसकी ननद रूठ गई ।
- वे हड़बड़ा उठे ।
- वे पुस्तक पकड़े न रख सके ।
- उन्होंने पुस्तक लौटा दी ।
- समुद्र स्याह और भयावह दीखने लगा ।
- मैं गोवा को पूरी तरह नहीं समझ पाया ।
- काकी घटनास्थल पर आ पहुँची ।
- अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए ।

मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया
१. ----------	----------
२. ----------	----------
३. ----------	----------
४. ----------	----------
५. ----------	----------
६. ----------	----------
७. ----------	----------
८. ----------	----------
९. ----------	----------
१०. ----------	----------

(२) पाठों में प्रयुक्त सहायक क्रियाओंवाले दस वाक्य ढूँढ़कर मुख्य और सहायक क्रियाएँ चुनकर लिखिए ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए तथा संबंधित कारक और कारक चिह्न तालिका में वाक्य के सामने लिखिए :

अ.क्र.	वाक्य	कारक	कारक चिह्न
१.	चाची अपने कमरे ---- निकल रही थी ।	--------------	--------------
२.	मैं बंडल ---- खोलकर देखने लगा ।	--------------	--------------
३.	आवाज ---- मेरा ध्यान बँटाया ।	--------------	--------------
४.	हमारे शहर ---- एक कवि हैं ।	--------------	--------------
५.	कितने दिनों ---- छुट्टियाँ हैं ?	--------------	--------------
६.	मानू रेल ---- ससुराल चली गई ।	--------------	--------------
७.	उन्हें पुस्तक ले आने ---- कहा ।	--------------	--------------
८.	पर्यटन ---- बहुत ही आनंद मिला ।	--------------	--------------
९.	शरीर को कुछ समय ---- विश्राम मिल जाता है ।	--------------	--------------
१०.	बस ---- गोवा घूमने की योजना बनाई ।	--------------	--------------
११.	बुद्धिराम स्वभाव ---- सज्जन थे ।	--------------	--------------
१२.	रूपा घटना स्थल ---- आ पहुँची ।	--------------	--------------
१३.	---- यह बुढ़िया कौन है ?	--------------	--------------

(४) पाठ में प्रयुक्त विभिन्न कारकों का एक-एक वाक्य छाँटकर उनसे कारक और कारक चिह्न चुनकर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

(१) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर इसपर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

विख्यात गणितज्ञ सी.वी. रमण ने छात्रावस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश में ही नहीं विदेशों में भी जमा लिया था।

रमन का एक साथी छात्र ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कर रहा था । उसे कुछ कठिनाइयाँ प्रतीत हुईं, संदेह हुए । वह अपने अध्यापक जोन्स साहब के पास गया परंतु वह भी उसका संदेह निवारण न कर सके । रमण को पता चला तो उन्होंने उस समस्या का अध्ययन-मनन किया और इस संबंध में उस समय के प्रसिद्ध लॉर्ड रेले के निबंध पढ़े और उस समस्या का एक नया ही हल खोज निकाला । यह हल पहले हल से सरल और अच्छा था। लॉर्ड रेले को इस बात का पता चला तो उन्होंने रमण की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की । अध्यापक जोन्स भी प्रसन्न हुए और उन्होंने रमण से इस प्रयोग के संबंध में लेख लिखने को कहा । रमण ने लेख लिखकर श्री जोन्स को दिया, पर जोन्स उसे जल्दी लौटा न सके । कारण संभवतः यह था कि वह उसे पूरी तरह आत्मसात न कर सके ।

प्रश्न : १. ____________________

२. ____________________

३. ____________________

४. ____________________

५. ____________________

(२) 'अंतरजाल' से 'मेक इन इंडिया' योजना संबंधी जानकारी प्राप्त करके इसे बढ़ावा देने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए :-

मुद्दे :

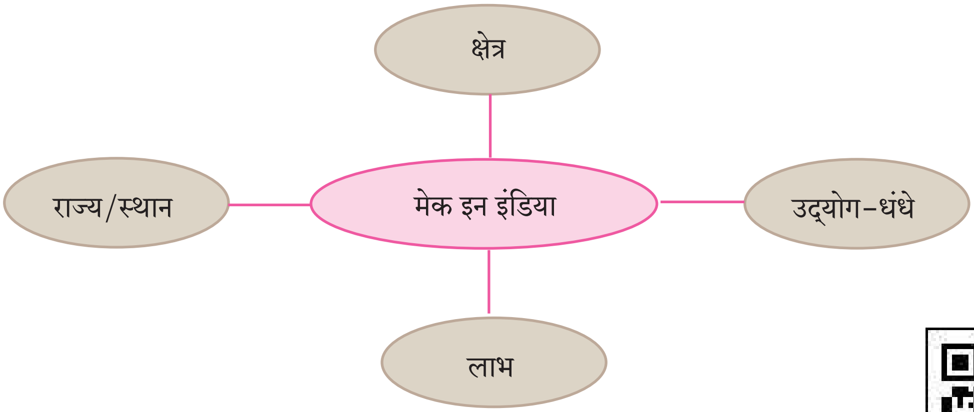

C4IDHY

१०. बूढ़ी काकी

(पूरक पठन)

– *प्रेमचंद*

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है । बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने के लिए रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही । समस्त इंद्रियाँ, नेत्र–हाथ और पैर जवाब दे चुके थे । पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो ये रोने लगती थीं । उनका रोना–सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़–फाड़ कर रोती थीं ।

उनके पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कालांतर हो चुका था । बेटे तरुण हो–होकर चल बसे थे । अब एक भतीजे के सिवाय और कोई न था । उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी । लिखाते समय भतीजे ने खूब लंबे–चौड़े वादे किए किंतु वे सब वादे केवल कुली डिपो के दलालों के दिखाए हुए सब्जबाग थे । यद्‌यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय डेढ़–दो सौ रुपये से कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था । इसमें उनके भतीजे पंडित बुद्‌धिराम का अपराध था अथवा उनकी अद्‌र्धांगिनी श्रीमती रूपा का, इसका निर्णय करना सहज नहीं । बुद्‌धिराम स्वभाव के सज्जन थे किंतु उसी समय तक जबकि उनके कोष पर कोई आँच न आए । रूपा स्वभाव से तीव्र थी सही, पर ईश्वर से डरती थी । अतएव बूढ़ी काकी को उसकी तीव्रता उतनी न खलती थी जितनी बुद्‌धिराम की भलमनसाहत ।

बुद्‌धिराम को कभी–कभी अपने अत्याचार का खेद होता था । विचारते कि इसी संपत्ति के कारण मैं इस समय भलामानुष बना बैठा हूँ । लड़कों को बुड्ढों से स्वाभाविक विद्‌वेष होता ही है और फिर जब माता– पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और सताया करते । कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उनपर पानी की कुल्ली कर देता ! काकी चीख मारकर रोतीं । हाँ, काकी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियाँ देने लगतीं तो रूपा घटनास्थल पर आ पहुँचती । इस भय से काकी अपनी जिह्वा कृपाण का कदाचित ही प्रयोग करती थीं ।

संपूर्ण परिवार में यदि काकी से किसी को अनुराग था तो वह बुद्‌धिराम

परिचय

जन्म : १८८०, लमही (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३६, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : अप्रतिम कहानीकार एवं उपन्यासकार प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय था । बाल्यकाल से ही आपने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था । आधुनिक हिंदी गद्‌य साहित्य में आप कहानी के पितामह कहे जाते हैं । आपकी कहानियों, उपन्यासों में शोषित किसान, मजदूर, स्त्रियों आदि की समस्याओं का विस्तृत चित्रण मिलता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मानसरोवर भाग–१ से ८', 'जंगल की कहानियाँ' (कहानी संग्रह), 'गोदान', 'गबन', 'सेवासदन', 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प' (उपन्यास), 'प्रेम की वेदी', 'कर्बला', 'संग्राम' (नाटक), 'टॉल्स्टॉय की कहानियाँ,'आजाद कथा', गाल्सवर्दी के तीन नाटक–'हड़ताल', 'न्याय', 'चाँदी की डिबिया' (अनुवाद) ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रेमचंद जी ने समाज में व्याप्त वादाखिलाफी, वृद्‌धों के प्रति तिरस्कार की भावना पर जोरदार प्रहार किया है । यहाँ कहानीकार ने बुजुर्गजनों के मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए उनके प्रति आदरभाव रखने हेतु प्रेरित किया है।

की छोटी लड़की लाड़ली थी । लाड़ली अपने दोनों भाइयों के भय से अपने हिस्से की मिठाई-चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठकर खाया करती थी । यही उसका रक्षागार था ।

रात का समय था । बुद्‌धिराम के द्‌वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वादन कर रहा था । चारपाइयों पर मेहमान विश्राम कर रहे थे । दो-एक अंग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे । वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे।

आज बुद्‌धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक आया था । यह उसी का उत्सव था । घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबंध में व्यस्त थी । भट्‌ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे । एक में पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ निकल रही थीं, दूसरे में अन्य पकवान बन रहे थे । एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी । घी और मसाले की क्षुधावर्धक सुगंध चारों ओर फैली हुई थी ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थीं । यह स्वाद मिश्रितसुगंध उन्हें बेचैन कर रही थी ।

'आह ! कैसी सुगंध है ? अब मुझे कौन पूछता है ? जब रोटियों ही के लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपूर पूड़ियाँ मिलें ?' यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक-सी उठने लगी परंतु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया ।

फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं परंतु वाटिका में कुछ और बात होती है । इस प्रकार निर्णय करके बूढ़ी काकी हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई में चौखट से उतरीं और धीर-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं।

रूपा उस समय कार्य भार से उद्‌विग्न हो रही थी । कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में, कभी कड़ाह के पास आती, कभी भंडार में जाती। किसी ने बाहर से आकर कहा-'महाराज ठंडाई माँग रहे हैं ।' ठंडाई देने लगी। आदमी ने आकर पूछा-'अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है ? जरा ढोल-मंजीरा उतार दो ।' बेचारी अकेली स्त्री दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी, झुँझलाती थी, कुढ़ती थी, परंतु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी । भय होता, कहीं पड़ोसिनें यह न कहने लगें कि इतने में उबल पड़ीं । प्यास से स्वयं कंठ सूख रहा था । गरमी के मारे फुँकी जाती थी परंतु इतना अवकाश भी नहीं था कि जरा पानी पी ले अथवा पंखा लेकर झले । यह भी खटका था कि जरा आँख हटी और चीजों की लूट मची । इस

बड़ों से कोई ऐसी कहानी सुनिए जिसके आखिरी हिस्से में कठिन परिस्थितियों से जीतने का संदेश मिल रहा हो ।

अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठा देखा तो जल गई । क्रोध न रुक सका । वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली-''ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था ? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका ? आकर छाती पर सवार हो गई । इतना ठूँसती है न जाने कहाँ भस्म हो जाता है । भला चाहती हो तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुम्हें भी मिलेगा । तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परंतु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाए ।''

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चात्ताप कर रही थीं कि मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई । उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था । अपनी जल्दबाजी पर दुख था । सच ही तो है जब तक मेहमान लोग भोजन कर न चुकेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे ! मुझसे इतनी देर भी न रहा गया । सबके सामने पानी उतर गया । अब, जब तक कोई बुलाने न आएगा, नहीं जाऊँगी ।

मन-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वह बुलाने की प्रतीक्षा करने लगीं । उन्हें एक-एक पल, एक-एक युग के समान मालूम होता था । धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं । उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गई । क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर ही रहे होंगे । किसी की आवाज नहीं सुनाई देती । अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए । मुझे कोई बुलाने नहीं आया । रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए । सोचती हो कि आप ही आएँगी, वह कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ । बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुईं । यह विश्वास कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार तरकारियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेंद्रियों को गुदगुदाने लगा । उन्होंने मन में तरह-तरह के मनसूबे बाँधे, पहले तरकारी से पूड़ियाँ खाऊँगी, फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथ मजेदार मालूम होंगी । चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँगकर खाऊँगी, लोग यही न कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं ? कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी !

मेहमान मंडली अभी बैठी हुई थी । कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं । कोई इस चिंता में था कि पत्तल पर पूड़ियाँ छूटी जाती हैं, किसी तरह इन्हें भीतर रख लेता । कोई दही खाकर जीभ चटकारता था परंतु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था कि इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँची । कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए । पुकारने लगे-''अरे यह बुढ़िया

संभाषणीय

'वृद्धाश्रम' के बारे में जानकारी इकट्ठा करके चर्चा कीजिए ।

कौन है ? यह कहाँ से आ गई ? देखो किसी को छू न दे ।''

पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गए । पूड़ियों का थाल लिए खड़े थे । थाल को जमीन पर पटक दिया और जिस प्रकार निर्दयी महाजन अपने किसी बेईमान और भगोड़े कर्जदार को देखते ही झपटकर उसका टेंटुआ पकड़ लेता है उसी तरह लपक उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया । आशा रूपी वाटिका लू के एक झोंके में नष्ट-विनष्ट हो गई ।

मेहमानों ने भोजन किया । घरवालों ने भोजन किया परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछा । बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे । उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर, हतज्ञान पर किसी को करुणा न आई थी, अकेली लाड़ली उनके लिए कुढ़ रही थी ।

लाड़ली को काकी से अत्यंत प्रेम था । बेचारी भोली लड़की थी । बालविनोद और चंचलता की उसमें गंध तक न थी । दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाड़ली का हृदय ऐंठकर रह गया । वह झुँझला रही थी कि यह लोग काकी को क्यों बहुत-सी पूड़ियाँ नहीं दे देते । उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिलकुल न खाई थीं । अपनी गुड़ियों की पिटारी में बंद कर रखी थीं । उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी । उसका हृदय अधीर हो रहा था । बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी ! मुझे खूब प्यार करेंगी ।

रात के ग्यारह बज गए थे । रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी । लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी । काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी । उसने पूड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी । जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही हैं, तो अपनी पिटारी उठाई और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली ।

सहसा कानों में आवाज आई-''काकी, उठो मैं पूड़ियाँ लाई हूँ।'' काकी ने लाड़ली की बोली पहचानी। चटपट उठ बैठीं । दोनों हाथों से लाड़ली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया। लाड़ली ने पूड़ियाँ निकालकर दीं ।

काकी ने पूछा-''क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं ?''

लाड़ली ने कहा-''नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं ।''

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ीं । पाँच मिनट में पिटारी खाली हो गई।

लाड़ली ने पूछा-''काकी, पेट भर गया ।''

'भारतीय कुटुंब व्यवस्था' पर भाषण के मुद्दे लिखिए ।

जैसे थोड़ी-सी वर्षा, ठंडक के स्थान पर और भी गरमी पैदा कर देती है, उसी भाँति इन थोड़ी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था । बोली-''नहीं बेटी, जाकर अम्मा से और माँग लाओ ।''

लाड़ली ने कहा-''अम्मा सोती हैं, जगाऊँगी तो मारेंगी ।''

काकी ने पिटारी को फिर टटोला । उसमें कुछ खुरचन गिरे थे । उन्हें निकालकर वे खा गईं । बार-बार होंठ चाटती थीं, चटखारें भरती थीं ।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ । संतोष सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है । मतवालों को मद का स्मरण करना उन्हें मदांध बनाता है । काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया । उचित और अनुचित का विचार जाता रहा । वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं सहसा लाड़ली से बोलीं-''मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है ।''

लाड़ली उनका अभिप्राय समझ न सकी । उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पत्तलों के पास बैठा दिया । दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर भक्षण करने लगी । ओह दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितना सुकोमल ! काकी बुद्‌धिहीन होते हुए भी इतना जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए । मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ । परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केंद्र पर आ लगती हैं । बूढ़ी काकी में यह केंद्र उनकी स्वादेंद्रियाँ थीं ।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं । उसे मालूम हुआ कि लाड़ली मेरे पास नहीं है । वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी । उसे वहाँ न पाकर वह उठी तो क्या देखती है कि लाड़ली जूठे पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं । रूपा का हृदय सन्न हो गया । परिवार का एक बुजुर्ग दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव था । पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा पतित और निकृष्ट कर्म कर रही है । ऐसा प्रतीत होता मानो जमीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है । संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है । रूपा को क्रोध न आया । शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं ! इस अधर्म के पाप का भागी कौन है ? उसने सच्चे हृदय से गगन मंडल की ओर हाथ उठाकर कहा, ''परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो । इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो

पठनीय

'चलती-फिरती पाठशाला' उपक्रम के बारे में जानकारी इकट्ठा करके पढ़िए और सुनाइए ।

जाएगा ।''

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दीख पड़े थे । वह सोचने लगी–'हाय ! कितनी निर्दयी हूँ । जिसकी संपत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति ! और मेरे कारण ! हे दयामय भगवान ! मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो ! आज मेरे बेटे का तिलक था । सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया । मैं उनके इशारों की दासी बनी रही । अपने नाम के लिए सैकड़ों रुपये व्यय कर दिए परंतु जिसकी बदौलत हजारों रुपये खाए, उसे इस उत्सव में भी भरपेट भोजन न दे सकी । केवल इसी कारण कि, वह वृद्‌धा असहाय है ।'

रूपा ने दीया जलाया, अपने भंडार का द्‌वार खोला और एक थाली में संपूर्ण सामग्रियाँ सजाकर बूढ़ी काकी की ओर चली ।

रूपा ने कंठावरुद्‌ध स्वर में कहा–''काकी उठो, भोजन कर लो । मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना । परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें ।''

भोले–भोले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाता है, बूढ़ी काकी वैसे ही सब भूलकर बैठी हुई खाना खा रही थीं । उनके एक–एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा बैठी इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी ।

('इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ' से)

— ० —

शब्द संसार

सिसकना क्रि.(हि.) = सिसकी भरकर रोना
कुल्ली स्त्री.सं.(हिं.) = मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया
अनुराग पुं.सं.(सं.) = प्रेम, प्रीति
भगोड़ा पुं.वि.(हिं.) = भागा हुआ

मुहावरे

गला फाड़ना = शोर करना, चिल्लाना
कलेजे में हूक उठना = मन में वेदना उत्पन्न होना

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१)

स्वभाव के आधार पर पात्र का नाम		
१.	क्रोधी-	
२.	लालची -	
३.	शरारती -	
४.	स्नेहिल -	

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

बूढ़ी काकी को ललचाने वाले व्यंजन

(३) बुद्धिराम का काकी के प्रति दुर्व्यवहार दर्शाने वाली चार बातें :

१) ____________ २) ____________

३) ____________ ४) ____________

(४) कारण लिखिए :

१. बूढ़ी काकी ने भतीजे के नाम सारी संपत्ति लिख दी ____________

२. लाड़ली ने पूड़ियाँ छिपाकर रखीं ____________

३. बुद्धिराम ने काकी को अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया ____________

४. अंग्रेजी पढ़े नवयुवक उदासीन थे ____________

(५) सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए :

बच्चा

- विलोम ....
- लिंग ....
- पर्यायवाची ....
- बहुवचन ....

अभिव्यक्ति 'बुजुर्ग आदर-सम्मान के पात्र होते हैं, दया के नहीं' इस सुवचन पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

अ.क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप
१.	भूलना	-----------	-----------
२.	पीसना	-----------	-----------
३.	माँगना	-----------	-----------
४.	तोड़ना	-----------	-----------
५.	बेचना	-----------	-----------
६.	कहना	-----------	-----------
७.	नहाना	-----------	-----------
८.	खेलना	-----------	-----------
९.	खाना	-----------	-----------
१०.	फैलना	-----------	-----------
११.	बैठना	-----------	-----------
१२.	लिखना	-----------	-----------
१३.	जुटना	-----------	-----------
१४.	दौड़ना	-----------	-----------
१५.	देखना	-----------	-----------
१६.	जीना	-----------	-----------

(२) पठित पाठों से किन्हीं दस मूल क्रियाओं का चयन करके उनके प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप निम्न तालिका में लिखिए :

अ.क्र.	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप
१.	-----------	-----------	-----------
२.	-----------	-----------	-----------
३.	-----------	-----------	-----------
४.	-----------	-----------	-----------
५.	-----------	-----------	-----------
६.	-----------	-----------	-----------
७.	-----------	-----------	-----------
८.	-----------	-----------	-----------
९.	-----------	-----------	-----------
१०.	-----------	-----------	-----------

उपयोजित लेखन

'मेरा प्रिय वैज्ञानिक' विषय पर निबंध लेखन कीजिए ।

C459YL

११. समता की ओर

– मुकुटधर पांडेय

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई !
प्रकृति हुई द्युतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई ।

पड़ता खूब तुषार पद्‌मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते ।

निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं ।

अद्‌र्धरात्रि को घर से कोई जो आँगन को आता,
शून्य गगन मंडल को लख यह मन में है भय पाता ।

तारे निपट मलीन चंद ने पांडुवर्ण है पाया,
मानो किसी राज्य पर है, राष्ट्रीय कष्ट कुछ आया ।

धनियों को है मौज रात-दिन हैं उनके पौ-बारे,
दीन दरिद्रों के मत्थे ही पड़े शिशिर दुख सारे ।

वे खाते हैं हलुवा-पूड़ी, दूध-मलाई ताजी,
इन्हें नहीं मिलती पर सूखी रोटी और न भाजी ।

वे सुख से रंगीन कीमती ओढ़ें शाल-दुशाले,
पर इनके कंपित बदनों पर गिरते हैं नित पाले ।

वे हैं सुख साधन से पूरित सुघर घरों के वासी,
इनके टूटे-फूटे घर में छाई सदा उदासी ।

पहले हमें उदर की चिंता थी न कदापि सताती,
माता सम थी प्रकृति हमारी पालन करती जाती ।।

हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,
भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा ।

o

परिचय

जन्म : १८९५, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
मृत्यु : १९८९
परिचय : छायावाद के प्रतिष्ठित कवि मुकुटधर पांडेय जी ने १२ वर्ष की अल्पायु से ही लिखना शुरू कर दिया था । आपकी काव्य रचनाओं में मानव प्रेम, प्रकृति सौंदर्य, मानवीकरण, आध्यात्मिकता और गीतात्मकता के तत्त्व प्रमुखता से परिलक्षित होते हैं । आपने पद्‌य के साथ-साथ गद्‌य में भी पूरे अधिकार के साथ लिखा है । आपने निबंध और आलोचना ग्रंथ भी लिखे हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पूजाफूल' 'शैलबाला' (कविता संग्रह), 'लच्छमा' (अनूदित उपन्यास), 'परिश्रम' (निबंध) 'हृदयदान', 'मामा', 'स्मृतिपुंज' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता में कवि ने शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंडक से परेशान प्राणियों, साधन संपन्न एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के जीवनयापन का सजीव वर्णन किया है। कवि का कहना है कि धनवान और निर्धन दोनों भाई-भाई हैं । समाज में अमीरों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में अवश्य विचार करना चाहिए ।

शब्द संसार

द्युतिहीन वि.(सं.) = तेजहीन
स्यार पुं.सं.(हिं.) = गीदड़, सियार
पांडुवर्ण पु.सं.(सं.) = पीला रंग
पाला पुं.सं.(हिं.) = बर्फ, हिम

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

शिशिर ऋतु में हुए परिवर्तन
- प्रकृति में
- धरती पर

(२) जीवन शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए :

धनी	दीन–दरिद्र

(३) तालिका पूर्ण कीजिए :

ऋतुएँ	अंग्रेजी माह	हिंदी माह
१. वसंत	मार्च, अप्रैल	चैत्र, बैसाख
२. ग्रीष्म	----------	----------
३. वर्षा	----------	----------
४. शरद	----------	----------
५. हेमंत	----------	----------
६. शिशिर	----------	----------

(४) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्‌य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंदीदा होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश

(५) अंतिम दो पंक्तियों से मिलने वाला संदेश लिखिए ।

उपयोजित लेखन

‘विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग’ विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

C52619

व्याकरण विभाग

शब्द भेद

(१) विकारी शब्द और उनके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी शब्द(अव्यय)

- क्रियाविशेषण अव्यय
- संबंधसूचक अव्यय
- समुच्चयबोधक अव्यय
- विस्मयादिबोधक अव्यय

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(४) संधि भेद

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(५) वाक्य के भेद

रचना की दृष्टि से

१. साधारण
२. मिश्र
३. संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से

१. विधानार्थक
२. निषेधार्थक
३. प्रश्नार्थक
४. आज्ञार्थक
५. विस्मयार्थक
६. संदेशसूचक

(६) मुहावरे

(७) वाक्य शुद्धीकरण

(८) सहायक क्रिया पहचानना

(९) प्रेरणार्थक क्रिया

(१०) कारक–कारक चिह्न

(११) विरामचिह्न

शब्द संपदा – (पाँचवीं से नौवीं तक)

शब्दों के लिंग, वचन, विलोम, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, समोच्चारित मराठी–हिंदी शब्द, भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग–प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत–तद्धित बनाना, मूल शब्द अलग करना ।

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आज-कल हम नई तकनीक को अपना रहे हैं । संगणक, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल, ई-मेल, वीडियो कॉलिंग जैसी तकनीक को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि के आविष्कार के बाद पत्र लिखने की आवश्यकता कम महसूस होने लगी है फिर भी अपने रिश्तेदार, आत्मीय व्यक्ति, मित्र/सहेली तक अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए पत्र एक सशक्त माध्यम है । पत्रलेखन की कला को आत्मसात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । अपना कहना (माँग/शिकायत/अनुमति/विनती/आवेदन) उचित तथा कम-से-कम शब्दों में संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना, अनुरूप भाषा का प्रयोग करना एक कौशल है । अब तक हम जिस पद्‌धति से पत्रलेखन करते आए हैं, उसमें नई तकनीक के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है । ।

पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से ई-मेल के प्रारूप के अनुरूप पत्रलेखन की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

✻ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक । (पृष्ठ क्र. १७, ७९)

औपचारिक पत्र

• प्रति लिखने के बाद पत्र प्राप्तकर्ता का पद और पता लिखना आवश्यक है । • पत्र के विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक है । • इसमें महोदय/महोदया शब्द द्‌वारा आदर प्रकट किया जाता है । • निश्चित तथा सही शब्दों में आशय की प्रस्तुति करना अपेक्षित है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले का नाम, पता लिखना चाहिए। •ई-मेल में आई डी देना आवश्यक है ।

अनौपचारिक पत्र

• संबोधन तथा अभिवादन रिश्तों के अनुसार आदर के साथ करना चाहिए । • प्रारंभ में जिसको पत्र लिख रहे हैं उसका कुशलक्षेम पूछना चाहिए । • लेखन स्नेह/सम्मान सहित प्रभावी शब्दों और विषय विवेचन के साथ होना चाहिए। • रिश्ते के अनुसार विषय विवेचन में परिवर्तन अपेक्षित है। • इस पत्र में विषय उल्लेख आवश्यक नहीं है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना है ।

टिप्पणी : पत्रलेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजने वाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है । ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है । अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है ।

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय : ....
संदर्भ : ....
महोदय,

विषय विवेचन ....
....
....

भवदीय/भवदीया,
हस्ताक्षर : ....
नाम : ....
पता : ....
....

ई-मेल आईडी : ....

गद्‌य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• भाषा सीखकर प्रश्नों की निर्मिति करना एक महत्त्वपूर्ण भाषाई कौशल है । पाठ्‌यक्रम में भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रश्ननिर्मिति घटक का समावेश किया गया है । • दिए गए परिच्छेद (गद्‌यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में हों, ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

❊ प्रश्न ऐसे हों : • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हों । • प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्‌यांश में हों । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न रचना का कौशल प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अभ्यास की आवश्यकता है । • प्रश्न का उत्तर नहीं लिखना है । • प्रश्न रचना पूरे गद्‌यांश पर होनी आवश्यक है ।

❊ प्रश्न निर्मिति के लिए आवश्यक प्रश्नवाचक शब्द निम्नानुसार हैं :

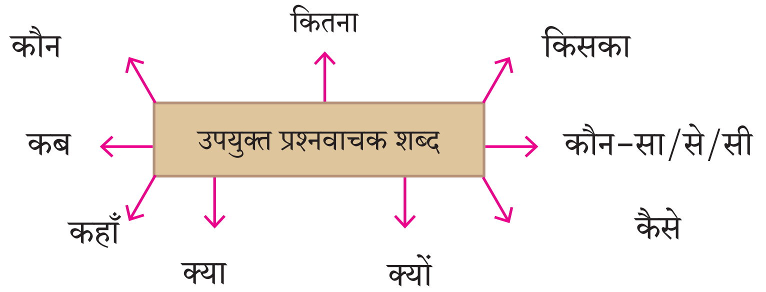

वृत्तांत लेखन

वृत्तांत का अर्थ है- घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । इसे विषय के अनुसार लिखना पड़ता है। वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है ।

वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें : • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का उल्लेख अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई हो उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • वृत्तांत लेखन लगभग अस्सी शब्दों में हो । समारोह में अध्यक्ष/उद्‌घाटक/व्याख्याता/वक्ता आदि के जो मौलिक विचार/संदेश व्यक्त हुए हैं उनका संक्षेप में उल्लेख हो • भाषण में कहे गए वाक्यों को दुहरा अवतरण “ ....” चिह्न लगाकर लिखना चाहिए । • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्‌धति से हो ।

वृत्तांत लेखन के विषय : शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, वाचन प्रेरणा दिवस, शहीद दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, वैश्विक महिला दिवस, बालिका दिवस, बाल दिवस, दिव्यांग दिवस, क्रीड़ा महोत्सव, वार्षिक पुरस्कार वितरण, वन महोत्सव आदि ।

जैसे : १. नीचे दिए गए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए :

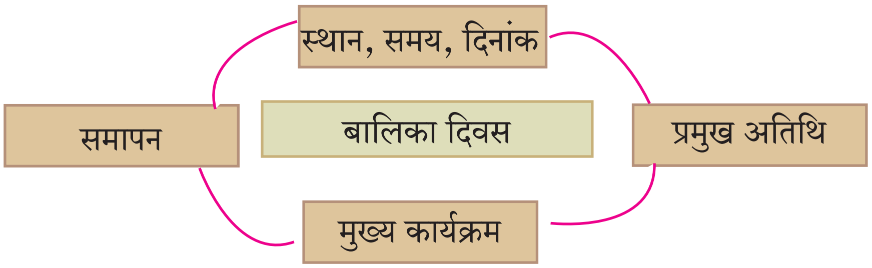

**२. अपने परिवेश में मनाए गए ‘अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस’ का वृत्तांत लगभग अस्सी शब्दों में लिखिए ।
(वृत्तांत में स्थान, समय, घटना का उल्लेख आवश्यक है ।)**

कहानी लेखन

कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है । इसके पूर्व की कक्षाओं में आपने कहानी लेखन का अभ्यास किया है । कहानी अपनी कल्पना और सृजनशीलता से रची जाती है । कहानी का मूलकथ्य (कथाबीज) उसका प्राण होता है । मूल कथ्य के विस्तार के लिए विषय को पात्र, घटना, तर्कसंगत विचारों से परिपोषित करना लेखन कौशल है । इसी लेखन कौशल का विकास करना कहानी लेखन का उद्देश्य है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । • कोई भी कहानी घटना घटने के बाद लिखी जाती है, अतः कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्दसीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । प्रत्येक मुद्दे या शब्द का अपेक्षित विस्तार आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्ध होनी चाहिए । • कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण निर्मिति होनी चाहिए । उदा. यदि जंगल में कहानी घटती है तो जंगल का रोचक, आकर्षक तथा सही वर्णन अपेक्षित है । • कहानी के मूलकथ्य/विषय (कथाबीज) के अनुसार पात्र व उनके संवाद, भाषा पात्रानुसार प्रसंगानुकूल होने चाहिए । • प्रत्येक परिसर/क्षेत्र की भाषा एवं भाषा शैली में भिन्नता/विविधता होती है । इसकी जानकारी होनी चाहिए । • अन्य भाषाओं के उद्धरण, सुवचनों आदि के प्रयोग से यथासंभव बचे । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । जहाँ विचार, एक घटना समाप्त हो, वहाँ परिच्छेद समाप्त करें । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

कहानी लेखन–[शब्द सीमा अस्सी से सौ तक]

कहानी लेखन के प्रकार

(१)असंबद्ध शब्दों के आधार पर

(२) मुद्दों के आधार पर

(३) सुवचन/कहावतों के आधार पर

विज्ञापन

वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्त्वपूर्ण अंग है । उत्कृष्ट विज्ञापन पर उत्पाद की बिक्री का आँकड़ा निर्भर करता है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हो । • विज्ञापन की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो, अतः शब्दरचना, भाषा शुद्ध हो । • जिसका विज्ञापन करना है उसका नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • ग्राहकों की बदलती रुचि, पसंद, आदत, फैशन एवं आवश्यकताओं का प्रतिबिंब विज्ञापन में परिलक्षित होना चाहिए । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण होती है, अतः छूट का उल्लेख करना हर समय आवश्यक नहीं है । • विज्ञापन में संपर्क स्थल का पता, संपर्क (दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि, ई-मेल आईडी) का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है । • विज्ञापन केवल पेन से लिखें । • पेन्सिल, स्केच पेन का उपयोग न करें । • चित्र, डिजाइन बनाने की आवश्यकता नहीं है । • विज्ञापन की शब्द मर्यादा पचास से साठ शब्दों तक अपेक्षित है । विज्ञापन में आवश्यक सभी मुद्दों का समावेश हो ।

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

ATM के लिए सुरक्षा रक्षक की आवश्यकता

- कालावधि
- शैक्षिक योग्यता
- आयु सीमा
- संपर्क

निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा 'सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्‌य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्‌य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें :

• प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें । • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें । • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो । • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें । • शुद्‌ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है । • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो । • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्‌ध होने आवश्यक हैं । • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य-विन्यास की ओर ध्यान आवश्यक देना है । • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्‌धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो । • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो । • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो । निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो । • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो ।

आत्मकथनात्मक निबंध लिखते समय आवश्यक महत्त्वपूर्ण बातें :

• आत्मकथन अर्थात एक तरह का परकाया प्रवेश है । • किसी वस्तु, प्राणी, पक्षी, व्यक्ति की जगह पर स्वयं को स्थापित/आरोपित करना होता है । • आत्मकथनात्मक लेखन की भाषा प्रथमपुरुष, एकवचन में हो । जैसे – मैं .... बोल रहा/रही हूँ । • प्रारंभ में विषय से संबंधित उचित प्रस्तावना, सुवचन, घटना, प्रसंग संक्षेप में लिख सकते हैं सीधे 'मैं... हूँ' से भी प्रारंभ किया जा सकता है ।

वैचारिक निबंध लिखते समय आवश्यक बातें :

• वैचारिक निबंध लेखन में विषय से संबंधित विचारों को प्रधानता दी जाती है । • वर्णन, कथन, कल्पना से बढ़कर विचार महत्त्वपूर्ण होते हैं । • विचार के पक्ष-विपक्ष में लिखना आवश्यक होता है । • विषय के संबंध में विचार, मुद्‌दे, मतों की तार्किक प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण होती है । • पूरक पठन, शब्दसंपदा, विचारों की संपन्नता जितनी अधिक होती है उतना ही वैचारिक निबंध लिखना हमारे लिए सहज होता है ।

निबंध लेखन प्रकार

- आत्मकथनात्मक
  - १. फटी पुस्तक की आत्मकथा
  - २. मैं हिमालय बोल रहा हूँ...
- वैचारिक
  - १. समाचार पत्र
  - २. विज्ञान के चमत्कार
- वर्णनात्मक
  - १. ऐतिहासिक स्थल की सैर
  - २. नदी किनारे दो घंटे
- चरित्रात्मक
  - १. मेरा प्रिय गायक
  - २. मेरा प्रिय खिलाड़ी
- कल्पनाप्रधान
  - १. यदि मोबाइल न होता तो...
  - २. यदि ऐनक न होती तो ...

भावार्थ – पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. २५ : पहली इकाई, पाठ ६. गिरिधर नागर– संत मीराबाई

(१) मीराबाई अपने गिरिधर गोपाल श्री कृष्ण की उपासना में तल्लीन होकर कहती हैं कि जिन्होंने माथे पर मोरपंख का मुकुट धारण कर रखा है मेरे तो स्वामी वहीं हैं । लोग कहते हैं मैंने कुल की मर्यादा छोड़ दी है, लोक लाज छोड़ दी है और साधु-संतों के बीच आ गई हूँ। मैं तो अपने स्वामी की भक्ति में डूबकर आनंद की अनुभूति कर रही हूँ। जिस तरह दूध को बिलोकर मक्खन निकाल लिया जाता है उसी तरह स्वामी की भक्ति में मन को बिलोकर उनकी छवि का मक्खन मैंने पा लिया है । मैं तो अपने गिरिधर की ही दासी हूँ उन्ही के मोह में रंग गई हूँ।

(२) हे प्रभु, तुम्हारे बिना मेरा उद्धार कहाँ ! तुम ही तो मेरे पालनहार हो, तुम ही तो मेरे रक्षक हो । मैं तुम्हारी दासी हूँ। मेरा जन्म-मरण तुम्हारे नाम के चारों ओर आरती की तरह घूमता रहता है । मैं तुम्हें बार-बार पुकारकर उद्धार के लिए विनय करती रहती हूँ। विकारों से भरा यह संसार भवसागर में घिर गया है । मेरी नाव के पाल फट गए हैं । नाव डूबने में समय नहीं लगेगा । हे प्रभु, नाव के पाल बाँध दो । यह तुम्हारी विरहिणी प्रिय तुम्हारी ही राह देख रही है । यह दासी मीरा तुम्हारे ही नाम की रट लगाए हुए है, तुम्हारी शरण में है । इसे बचाकर इसकी लाज रख लो ।

(३) फागुन के चार दिन होली खेलकर मनाओ । करताल और पखावज जैसे वाद्यों के बिना केवल अनहद नाद की झनकार के साथ बिना किसी राग-रागिनी के अपने रोम-रोम से श्रेष्ठ गीत गाओ । शील और संतोष की सीमाओं में पिचकारियों से स्नेह का रंग उड़ाओ । चारों ओर उड़ते गुलाल से पूरा आकाश लाल हो गया है, रंग ही रंग बरस रहा है । लोक लाज को त्यागकर घूँघट के पट खुल गए हैं । हे प्रभु ! गिरिधर नागर आपके चरण कमलों पर आपकी यह दासी मीरा बलिहारी जाती है ।

—— ० ——

पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ५१-५२ : दूसरी इकाई, पाठ १. बरषहिं जलद – गोस्वामी तुलसीदास

चौपाई – रावण द्‌वारा सीता जी के हरण के बाद भगवान श्रीराम, सीता जी की खोज कर रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास वर्षा ऋतु के मनोहारी वातावरण का चित्रण करते हैं । श्रीराम लक्ष्मण से कह रहे हैं कि हे भाई लक्ष्मण, आकाश में बादल घमंड से घुमड़-घुमड़कर घोर गर्जना कर रहे हैं किंतु प्रिया अर्थात सीता के बिना मेरा मन डर रहा है, बिजली (दामिनी) की चमक बादलों में रह-रहकर हो रही है अर्थात बिजली की चमक में उसी तरह ठहराव नहीं है जैसे दुष्ट व्यक्ति की प्रीति (प्रेम) स्थिर नहीं रहती। बादल पृथ्वी के समीप आकर ऐसी वर्षा कर रहे हैं जैसे कोई विद्‌वान व्यक्ति विद्या का ज्ञान हो जाने पर नम्र होकर झुक जाता है। ऊपर से वर्षा की बूँदें पहाड़ पर गिरती हैं और पहाड़ बूँदों के आघात को वैसे ही सह लेता है जैसे संत दुष्टों की बातों को सह लेते हैं। छोटी-छोटी नदियाँ अधिक वर्षा के कारण भर गई हैं, उन्होंने अपने किनारों को अपने जल से वैसे ही तोड़ दिया है, जैसे दुष्ट जन धनी हो जाने पर अभिमानी हो जाते हैं । यहाँ बारिश का जल मलिन स्थल पर गिरने से गंदा हो जाता है जैसे कि क्षुद्र जीव माया(लालच)के फंदे में पड़कर मलिनता को धारण कर लेता है । जल एकत्र होकर तालाबों में उसी तरह भर रहा है, जैसे सद्‌गुण एक-एक कर अपने आप सज्जन व्यक्ति के पास चले आते हैं । नदी का जल समुद्र में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है, जैसे जीव हरि (ईश्वर) को पाकर अचल (आवागमन से मुक्ति) हो जाता है ।

दोहा – पृथ्वी घास से भर गई है अर्थात घास से परिपूर्ण होकर हरी हो गई है । अब सर्वत्र हरी घास के कारण रास्ते भी उसी तरह समझ में नहीं आ रहे हैं, जैसे पाखंडी के पाखंडभरे मत के प्रचार से सद्‌ग्रंथ लुप्त हो जाते हैं ।

चौपाई – चारों दिशाओं में मेंढकों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लग रही है जैसे विद्‌यार्थी समूह में वेद का पठन कर रहे हैं । अनेक वृक्षों में नये पत्ते आ गए हैं । वे ऐसे हरे-भरे एवं सुशोभित हो गए हैं जैसे साधक का मन विवेक (अर्थात ज्ञान) प्राप्त होने पर हो जाता है । मदार और जवास बिना पत्ते के हो गए हैं (अर्थात पत्ते झड़ गए) जैसे श्रेष्ठ राज्य में दुष्टों का उद्‌यम जाता रहा, वर्षा के कारण धूल कहीं खोजने पर भी नहीं मिलती, जैसे क्रोध धर्म को दूर कर देता है । अर्थात क्रोध में मनुष्य अज्ञानी बन जाता है वह धर्म को भूल जाता है । चंद्रमा से युक्त पृथ्वी ऐसे सुशोभित हो रही है जैसे कि उपकारी पुरुष की संपत्ति सुशोभित होती है । रात के घनघोर अँधेरे में जुगनू को देखकर ऐसे लग रहा है जैसे दंभियों का समाज आ जुटा हो । चतुर किसान खेतों को निरा रहे हैं (निराई-घास आदि को खेत से निकालना) जैसे विद्‌वजन मोह, मद, और मान का त्याग कर देते हैं । चक्रवाक पक्षी दिखाई नहीं दे रहे हैं जैसे कलियुग में धर्म भाग जाता है । ऊसर में वर्षा होती है, पर वहाँ घास तक नहीं उगती । पृथ्वी अनेक तरह के जीवों से भरी हुई है, उसी तरह शोभायमान है । सुराज्य पाकर मानो प्रजा में बाढ़-सी आ गई है । यहाँ-वहाँ थककर पथिक विश्राम करने के लिए ठहरे हुए हैं । उसी तरह ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती हैं ।

दोहा –कभी-कभी वायु जोर से चलने लगती है, जिससे बादल वैसे गायब हो जाते हैं जैसे कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल के उत्तम धर्म नष्ट हो जाते हैं । जैसे कभी दिन में घोर अंधकार छा जाता है कभी सूर्य प्रकट हो जाता हैं वैसे ही कुसंग पाकर ज्ञान नष्ट हो जाता है और सुसंग पाकर ज्ञान उत्पन्न हो जाता है ।

—— ० ——

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-४११००

हिंदी लोकभारती, इयत्ता दहावी (हिंदी भाषा)

₹ 57.00